शैक्षिक लघुशोध

(संकलित)

सत्र 2011–12

प्रकाशन
शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

शैक्षिक लघुशोध

(संकलित)

(एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा प्रस्तुत)

सत्र 2011–12

संरक्षक
अनिल राय (भा.व.से.)
संचालक

मार्गदर्शक
ए. लकड़ा
संयुक्त संचालक

समन्वयक
ज्योति चक्रवर्ती
सहायक प्राध्यापक
शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। व्यक्ति औपचारिक एवं अनौपचारिक साधनों से शिक्षा प्राप्त करता है। शिक्षा व्यक्ति की प्रकृति प्रदत्त शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा के इस योगदान के कारण ही समाज में उसे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। समाज के बदलते स्वरूप के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ और समस्याएँ जन्म ले रही हैं। इन संभावनाओं और समस्याओं की खोज तथा समाधान शैक्षिक अनुसंधानों द्वारा ही संभव है। शैक्षिक अनुसंधान शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में उठने वाले प्रश्नों में निहित क्यों और कैसे को खोजने, कार्यकारण संबंधों की व्याख्या करने को प्रेरित करते हैं। अनुसंधान के द्वारा ही नए सिद्धांतों की खोज तथा पुराने सिद्धांतों की समीक्षा भी संभव है।

हमारे देश के विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों में प्रतिवर्ष हजारों शोधकार्य हो रहे हैं तथा इन शोध कार्यों के निष्कर्ष शिक्षा के लिए उपयोगी भी सिद्ध हो रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य में संचालित शिक्षा महाविद्यालयों के एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा भी प्रतिवर्ष शैक्षिक विषयों पर लघु शोध कार्य किए जाते हैं। ये लघु शोध उन्हें अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण प्रदान कर अपने कार्यों को बेहतर ढंग से संचालित करने में सक्षम बनाते हैं। साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त बाधाओं को पहचानने तथा उनके समाधान के लिए कार्य करने हेतु तैयार करते हैं।

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर द्वारा प्रतिवर्ष राज्य के एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा किए गए लघु शोधों में से चयनित लघु शोधों का प्रकाशन किया जाता है। इस संपूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधानों से सबको अवगत कराना है।

इस लघु शोध संकलन में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए अनुसंधानों को शामिल किया गया है; किन्तु ये क्षेत्र अंतिम नहीं हैं। अभी भी ऐसे कई क्षेत्र हैं जो चुनौतीपूर्ण हैं तथा उन पर शोध कार्य करने की आवश्यकता है। ऐसे क्षेत्रों पर किए गए अनुसंधान शिक्षा द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेंगे, व्याप्त अवरोधों को दूर कर सकेंगे तथा शिक्षा में गुणवत्ता ला सकेंगे।

इसलिए आवश्यक है कि बच्चों की शिक्षा से जुड़ा प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों को पहचाने, उनकी समीक्षा करे तथा अनुसंधान करे। ऐसा करके ही हम अपने बच्चों के लिए उत्तम शिक्षा व्यवस्था का निर्माण कर सकेंगे।

यह शैक्षिक लघुशोध संकलन, शोध निष्कर्षों की व्यापक स्तर पर चर्चा करने का एक साधन है। आशा है यह संकलन आपके लिए उपयोगी होगा। इसके संबंध में आपसे महत्वपूर्ण सुझावों की अपेक्षा है।

शुभकामनाओं सहित .....

(अनिल राय)
संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

दो शब्द प्रकोष्ठ की ओर से

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, अकादमिक प्राधिकरण की अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए प्रदेश के प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु कटिबद्ध है।

इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु परिषद् तथा उसकी सहयोगी संस्थाओं द्वारा शैक्षिक सामग्रियों का विकास, शिक्षक प्रशिक्षण, नवाचार, क्रियात्मक अनुसंधान तथा शोधकार्य किए जाते हैं। गुणवत्ता विकास की दिशा में शोध कार्यों के द्वारा ही आगे बढ़ा जा सकता है। अतः शिक्षा से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने कार्य क्षेत्र में सुधार की संभावनाओं, आवश्यकताओं तथा रिक्तियों को पहचाने, उन पर शोध कार्य करे तथा उसे व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराए। ये शोध कार्य आगामी कार्य योजनाओं के लिए आधार बनेंगे तथा राज्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। शिक्षा के क्षेत्र में हुए क्रियात्मक अनुसंधानों तथा नवाचारों पर चर्चा राज्य स्तरीय शोध सेमीनार में प्रतिवर्ष की जाती है।

शिक्षा महाविद्यालयों के एम.एड. प्रशिक्षार्थियों द्वारा किए गए लघु शोधों का प्रकाशन भी इसी कड़ी का एक भाग है। प्रकाशन का यह कार्य सत्र 2005–06 से किया जा रहा है, प्रकाशन का यह सातवाँ वर्ष है। प्रस्तुत संकलन में संकलित शोध कार्य सत्र 2011–12 में संपन्न किए गए है। इस वर्ष प्रकाशन हेतु 70 लघुशोध प्राप्त हुए थे जिनमें से चयनित 28 लघु शोधों का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है कि संकलन में प्रस्तुत शोध आपको नयी दृष्टि प्रदान करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में आने वाली समस्याओं के समाधान में सहायक होंगे।

इस शोध संकलन निर्माण एवं प्रकाशन में परिषद्, शासकीय व अशासकीय शिक्षा महाविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं के अकादमिक सदस्यों का योगदान रहा है। 'शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ' उन सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

आपसे अपेक्षा है कि इस शोध संकलन के निष्कर्षों का उपयोग अपने कार्य क्षेत्र में करें। साथ ही अपने बहुमूल्य सुझावों से प्रकोष्ठ को भी अवगत कराएँ ताकि आगामी वर्षों में हम इसे और अधिक उपयोगी बना सकें।

आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

ज्योति चक्रवर्ती
समन्वयक
शोध एवं नवाचार प्रकोष्ठ

अनुक्रमणिका

क्र.	शोध विषय	पृष्ठ क्रमांक
1	सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन	01–07
2	छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन	08–13
3	बाल पत्रिकाओं का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन	14–23
4	छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन	24–29
5	विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन	30–36
6	विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के संदर्भ में सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि का अध्ययन	37–43
7	संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन	44–50
8	विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन	51–57
9	हाईस्कूल स्तर पर पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	58–63
10	शिक्षा के समान अधिकार अधिनियम–2009 के संदर्भ में प्राथमिक शालाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन	64–71
11	हाई स्कूल के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन	72–76
12	किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता पर उनके समाजार्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन	77–83
13	भूगोल विषय के शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन	84–88
14	नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन	89–93
15	विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता के संदर्भ में सृजनात्मकता का अध्ययन	94–99
16	विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के संदर्भ में गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन	100–103
17	उच्च प्राथमिक स्तर पर सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन	104–108
18	योग शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन	109–113
19	बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन	114–119
20	विशेष पिछड़ी जनजाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर, उनके सामाजार्थिक स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन	120–127
21	CG एवं CBSE विद्यार्थियों में तनाव का अध्ययन : मूल्यांकन प्रक्रिया की अभिवृत्ति के संदर्भ में	128–133
22	हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन	134–138
23	खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन साई प्रशिक्षण योजना के संदर्भ में	139–145
24	अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन	146–153
25	A study of the impact of emotional maturity on educational achievement of adolescents.	154–157
26	A study of interest of students towards vocational choices on the basis of school management and environment.	158–163
27	A study of the achievement and adjustment of children with special needs and other children.	164–169
28	Effectiveness of innovations in English language teaching on language competence of the students.	170–176

शोधपत्र प्रारूप

(Research Paper Formate)

सारांश **(Abstract)**

प्रस्तावना **(Introduction)**

शोध के उद्देश्य **(Objectives of the Study)**

परिकल्पनाएँ **(Hypotheses)**

परिसीमन **(Delimitation)**

शोध प्रक्रिया **(Research Process)**

- शोध विधि **(Research Method)**
- न्यादर्श **(Sample)**
- उपकरण **(Tools)**
- चर **(Variables)**

सांख्यिकीय विश्लेषण **(Statistical Operations)**

निष्कर्ष **(Conclusion)**

सुझाव **(Suggestions)**

संदर्भ **(References)**

(यह शोधपत्र प्रारूप सुझावात्मक है इसकी शब्द सीमा 5000–5500 निर्धारित की गयी है।)

1. "सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन"

श्री सत्यम बालाजी

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है, उसकी गतिशीलता की निरंतरता को बनाए रखने में शिक्षक की अहम् भूमिका रहती है। शिक्षण प्रक्रिया का प्रभाव विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता पर पड़ता है। सक्रिय रहकर सीखने की विधि से विद्यार्थियों की समझ विकसित होती है। प्रस्तुत शोध में सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। कक्षा 8वीं के 40–40 विद्यार्थियों का प्रायोगिक तथा नियंत्रित समूह बनाकर, केवल प्रायोगिक समूह का सक्रिय विधि द्वारा शिक्षण कराया गया। स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण तथा विज्ञान पढ़ने में रूचि प्रश्नावली प्रशासित कर सांख्यिकीय गणना द्वारा आंकड़े प्राप्त किए गए। गणना के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि सक्रिय रहकर सीखने की विधि का विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि विकसित की जा सकेगा।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा एक ऐसी प्रकिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के सामंजस्य पूर्ण स्वाभाविक विकास में सहयोग देकर उसका सर्वांगीण विकास करती है; उन्हें अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती है।

सक्रिय रहकर सीखने की विधि में शिक्षक व विद्यार्थी दोनों कक्षा शिक्षण में सक्रिय रहते हैं। सक्रिय रहने से बच्चों में पढ़ने के प्रति रूचि बढ़ती है, बच्चे खुश नजर आते हैं, उनके सीखने के प्रति अधिक जिज्ञासा होती है। बच्चे बिना झिझक के शिक्षकों से अपनी समस्याओं के समाधान के प्रति आतुर रहते हैं। सक्रिय रहकर सीखने के माध्यम से बच्चों में कल्पनाशीलता और सृजनशीलता बढ़ती है। बच्चों में आपस में मिलजुल कर सीखने की आदत पड़ती है, इसलिए यह आवश्यक है कि सक्रिय रहकर सीखने की विधि की प्रभावशीलता का आकलन किया जाये।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सक्रिय रहकर सीखने की विधि का प्रभाव ज्ञात करना।

2. सक्रिय रहकर सीखने की विधि का विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. पूर्व परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
02. पश्च परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
03. पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण में नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
04. पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण में प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
05. सक्रिय रहकर सीखने की विधि द्वारा विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि विकसित होगी।

परिसीमन (Delimitation) – यह अध्ययन सरगुजा जिले की एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** इस अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample) –** प्रस्तुत अध्ययन में सरगुजा जिले के सूरजपुर ब्लॉक की एक उच्च प्राथमिक शाला का चयन Random sampling विधि से किया गया। इस शाला के कक्षा 8 वीं के 80 विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्यात्मक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया तथा उनके दो समान समूह प्रायोगिक एवं नियंत्रित निर्मित किये गये ।
- **उपकरण (Tools) –** प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया –

  1. **स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण–**

     कक्षा – 8 वीं, विषय–विज्ञान,

     इकाई – धातुएं और अधातुएं, वायु, विद्युत धारा, कितना भोजन, कैसा भोजन।

2. **सक्रिय रहकर सीखने की विधि आधारित पाठ्य योजनाएं –**

उपरोक्त इकाईयों को समझाने के लिए कक्षा शिक्षण प्रक्रिया, में विभिन्न विधियों का प्रयोग बच्चों की सहभागिता लेकर किया गया। ये विधियाँ हैं –

1) प्रोजेक्ट कार्य 2) प्रयोग 3) क्लोज टेस्ट 4) सारांशीकरण
5) लर्निंग स्टेशन 6) क्विज़ 7) शैक्षिक खेल 8) भ्रमण आदि।

3. **स्व निर्मित प्रश्नावली–**

स्वनिर्मित प्रश्नावली में सम्मिलित आयाम – 1) विषय के प्रति रूचि 2) उपस्थिति

- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर (Independent Variable) - सक्रिय रहकर सीखने की विधि।
  2. आश्रित चर (Dependent Variable) - सीखने की प्रभावशीलता – (क) शैक्षिक उपलब्धि (ख) उपस्थिति (ग) विषय के प्रति रूचि।
  3. सह चर (Associate Variable) – समूह – (1) प्रायोगिक समूह के विद्यार्थी। (2) नियंत्रित समूह के विद्यार्थी।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

पूर्व परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

सारिणी क्रमांक – 01

पूर्व परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	प्रायोगिक समूह	40	18.25	1.78	78	1.92	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
2	नियंत्रित समूह	40	17.48	1.86			

प्रायोगिक तथा नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 18.25 तथा 17.48, प्रमाणिक विचलन क्रमशः 1.78 तथा 1.86 व t मान 1.92 प्राप्त हुआ है। यह मान 78 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान 2.58 से कम है। अतः परीक्षण से

प्राप्त निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि पूर्व परीक्षण के संदर्भ में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक–01 स्वीकृत की जाती है।

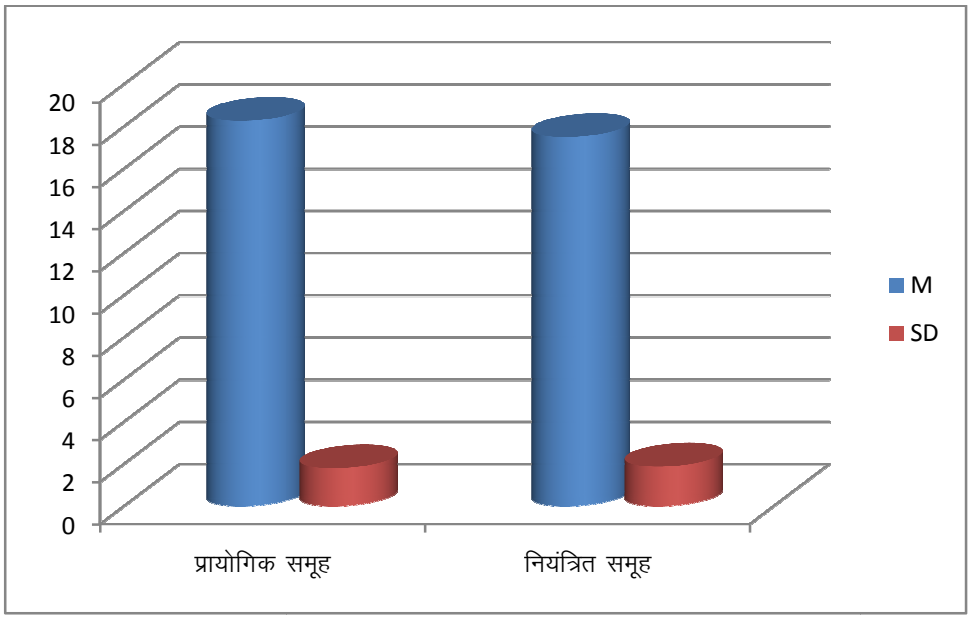

परिकल्पना क्रमांक – 02

पश्च परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक – 02

पश्च परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	प्रायोगिक समूह	40	28.025	2.04	78	22.73	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
2	नियंत्रित समूह	40	18.225	1.80			

प्रायोगिक तथा नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 28. 025 तथा 18.225, मानक विचलन 2.04 तथा 1.80 व t मान 22.73 प्राप्त हुआ। यह मान 78 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान 2.58 से अधिक है। अतः परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि पश्च परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक–02 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण में नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

सारिणी क्रमांक – 03

पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण में नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	नियंत्रित समूह (पूर्व परीक्षण)	40	17.48	1.86	78	1.82	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है।
2	नियंत्रित समूह (पश्च परीक्षण)	40	18.225	1.80			

नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के उपलब्धि परीक्षण के प्राप्ताकों के मध्यमान क्रमशः 17.48 तथा 18.225, मानक विचलन 1.86 तथा 1.80 व t मान 1.82 प्राप्त हुआ है। यह 78 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सारणी मान 2.58 से कम है। अर्थात् पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण के संदर्भ में नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक–03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक –04

पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण में प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा ।

सारिणी क्रमांक – 04

पूर्व परीक्षण व पश्च परीक्षण में प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	प्रायोगिक समूह (पूर्व परीक्षण)	40	18.25	1.77	78	22.83	0.01 विश्वास स्तर सार्थक अंतर है।
2	प्रायोगिक समूह (पश्च परीक्षण)	40	28.025	2.04			

प्रायोगिक समूह के पूर्व तथा पश्च परीक्षण की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 18.25 तथा 28.025, मानक विचलन 1.77 तथा 2.04 व t मान 22.83 प्राप्त हुआ। यह मान 78df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सारणी मान 2.58 से अधिक है अर्थात् पूर्व परीक्षण व

पश्च परीक्षण के संदर्भ में नियंत्रित समूह के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक–04 की पुष्टि होती है।

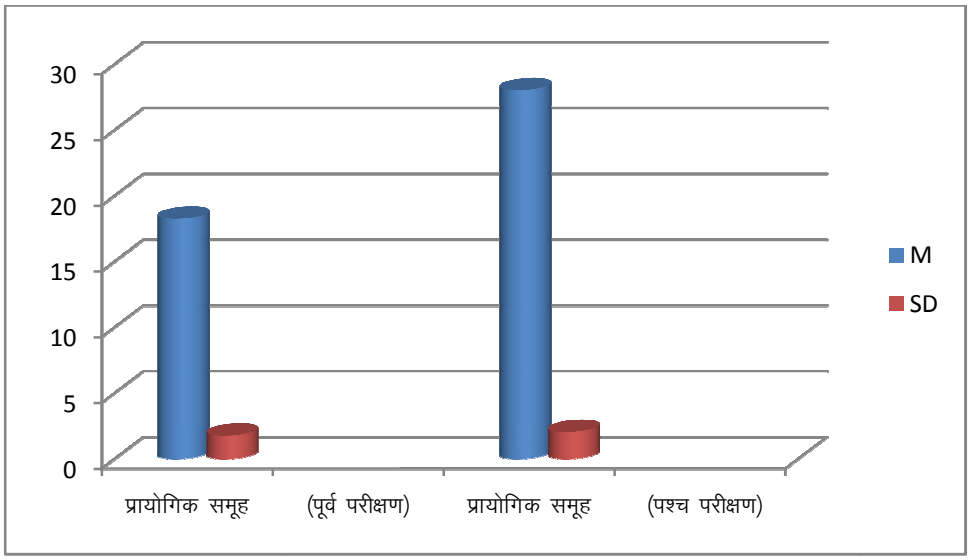

परिकल्पना क्रमांक – 05

सक्रिय रहकर सीखने की विधि द्वारा विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि विकसित होगी ।

सारिणी क्रमांक – 05

विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि प्राप्तांकों की सांख्यिकीय तालिका

क्र	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	प्रायोगिक समूह	40	18.95	1.44	78	11.70	0.01 विश्वास स्तर सार्थक अंतर
2	नियंत्रित समूह	40	12.55	3.14			

प्रायोगिक तथा नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि का मध्यमान क्रमशः 18.95 तथा 12.55, प्रमाप विचलन 1.44 तथा 3.14, t मान 11.70 प्राप्त हुआ। t मान 78 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सारणी मान 2.58 से अधिक है। अतः दोनों समूहों की रूचि में सार्थक अंतर है। प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की विषय के प्रति रूचि विकसित हुई है। अतः परिकल्पना क्रमांक–05 की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. पूर्व परीक्षण में प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् दोनों समूहों की उपलब्धि समान है।

2. पश्च परीक्षण में प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि, नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च पायी गयी।
3. पूर्व व पश्च परीक्षण में नियंत्रित समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. पश्च परीक्षण में प्रायोगिक समूह की शैक्षिक उपलब्धि, पूर्व परीक्षण में प्राप्त शैक्षिक उपलब्धि से उच्च पायी गयी।
5. प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की सक्रिय रूप से सीखने की विधि द्वारा विषय के प्रति रूचि विकसित हुई।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिए सभी विद्यालयों में "सक्रिय रहकर सीखने की विधि" से कक्षा अध्यापन प्रक्रिया हो।
2. "सक्रिय रहकर सीखने की विधि" में शिक्षक के मार्गदर्शन में छात्रों के द्वारा कक्षा कार्य किया जाए।
3. कक्षा में छात्रों के समूह बनाए जाएं एवं बच्चे समूह में चर्चा कर समस्या का हल ढूंढ़ें। बच्चों की चर्चाओं में शिक्षक भी शामिल हों।
4. कक्षा में बच्चों को प्रश्न पूछने का अवसर दिया जाए।
5. प्रत्येक बच्चे को प्रयोग करने का अवसर दिया जाए।
6. बच्चों को प्रोजेक्ट कार्य, पुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, समाचार पत्र आदि पढ़ने के अवसर दिये जाएं।
7. शिक्षण सहायक सामग्री का नियमित प्रयोग शिक्षक करें, छोटी–छोटी गतिविधियां कराई जायें।
8. विद्यार्थियों का सतत् मूल्यांकन किया जाये।

संदर्भ (References) –

1. गोलानी, टी.पी. (1982) : दृश्य एवं श्रव्य सहायक सामग्री का थाने जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में उपयोग।
2. रविन्द्रनाथ, जे.एम. (1982) : ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण हेतु बहुआयामी अनुदेशात्मक व्यूह रचना के विकास का अध्ययन।''
3. सेम, चन्द्राणी (2000) : वैज्ञानिक क्रियाकलापों का कक्षा 6वीं के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

2. ''छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

दीपेन्द्र कुमार पाण्डेय
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

विद्यार्थी शिक्षा प्राप्ति हेतु आवासीय अथवा गैर–आवासीय विद्यालय में प्रवेश लेता है। शिक्षा बालक का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास करते हुए उसकी योग्यताओं, रूचियों, क्षमताओं को बाह्य दिशा की ओर अग्रेषित करती है। प्रस्तुत शोध में छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। कक्षा 9वीं के छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी विद्यार्थियों पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति परीक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रशासित कर सांख्यिकी गणना द्वारा परिणाम प्राप्त किए गए। गणना के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि छात्रावासी तथा गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य इस प्रक्रिया में उद्‌भव से अवसान तक शनैः शनैः निरन्तर ज्ञान, अनुभवों, कौशलों एवं व्यवसायिक दक्षताओं को अपनी रूचि, योग्यता, वातावरण, सुविधा, आवश्यकता तथा परिस्थिति के अनुसार सीखता एवं अर्जित करते जाता है। प्राचीनकाल में शिक्षा प्राप्ति के लिए आश्रम पद्धति संबंधी व्यवस्था अनुपम थी। प्रकृति के गोद में समस्त व्यवधान से दूर कर्मशील, योग्य एवं ज्ञानी गुरूओं द्वारा शिक्षा ग्रहण करना सुखद एवं सफल रहा है।

गुरूकुल आश्रम प्रणाली प्राचीन काल की शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता थी। इसके अनुसार विद्यार्थी को दीर्घकाल तक गुरूगृह में रहकर विद्या अध्ययन करना पड़ता था। आचार्य का आश्रम बस्ती से बाहर प्रकृति के शांत, एकांत और सुरम्य वातावरण में स्थित होता था। आश्रम में सभी शिक्षार्थी आपस में भाई–भाई की तरह रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। वे आपस में गुरू–भाई होते थे तथा आश्रम परिवार के एक सदस्य होते थे। आचार्यों का जीवन तथा रहन–सहन सीधा–सरल एवं विचार उच्च होते थे, जिनका प्रभाव सीधे शिक्षार्थी पर पड़ता था।

भारत एक विशाल देश है, जिसमें अनेक विविधताएं हैं। यह आदिकाल से ही विभिन्न धर्मो, मतों, संप्रदायों, संस्कृतियों, प्रजातियों, जातियों और जन–जातियों की कर्मभूमि रहा है। भारत की संपूर्ण जनसंख्या का 8 प्रतिशत भाग आदिम जातियों का है। इन्हें आदिम या अनुसूचित जनजाति इसलिए भी कहा जाता है, क्योंकि ये भारत के प्राचीनतम निवासी माने जाते हैं।

शासन द्वारा अनुसूचित जनजाति छात्र/छात्राओं के लिए 782 छात्रावास, 703 आश्रम शालाएँ संचालित की जा रही हैं। जहाँ विद्यार्थियों को निःशुल्क भोजन, आवास, पुस्तकें जैसी आवश्यक सुविधाएँ मुफ्त दी जा रही हैं। इन बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति की जानकारी प्राप्त कर आवासीय शालाओं के औचित्य तथा उनकी शैक्षिक गुणवत्ता सुधार की दिशा में प्रयास किए जा सकते हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति के बीच सहसम्बध का अध्ययन करना।
4. गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति के बीच सहसम्बध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी हैं –

01. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।
02. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
03. छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सह–संबंध नहीं होगा।

04. गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सह–संबंध नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्नानुसार है –

क्षेत्रः– बिलासपुर जिले के बिल्हा वि.ख. की शासकीय शैक्षणिक संस्थाएँ एवं छात्रावास।

स्तरः– कक्षा नवमीं के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्र।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया।
- **न्यादर्श (Sample) –** प्रस्तुत शोध हेतु एकीकृत अनुसूचित जनजाति विकासखंड बिल्हा जिला बिलासपुर की पांच उच्चतर माध्यमिक शालाओं से 50 गैर छात्रावासी एवं 50 छात्रावासी अनुसूचित जनजातियों के छात्रों का चयन सोद्देश्य न्यादर्श चयन विधि से किया गया।

उपकरण (Tools) – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

(1) वैज्ञानिक अभिवृत्ति परीक्षण (स्वनिर्मित)

(2) शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (स्वनिर्मित)

- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

  1- Lor= pj &

  (अ) छात्रावासी विद्यार्थी (ब) गैर छात्रावासी विद्यार्थी

  2- vkfJr pj

  (अ) वैज्ञानिक अभिवृत्ति (ब) शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।

सारिणी क्रमांक – 01

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति

क्रं.	समूह	N	M	SD	S_{Ed}	df	t मान	सार्थकता का स्तर
1.	छात्रावासी	50	46.06	6.82	1.55	98	0.52	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2.	गैर छात्रावासी	50	45.78	8.68				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 0.05 स्तर तथा df 98 पर सारणी मान 1.97 है जबकि गणना से प्राप्त t का मान 0.52 है जो कि सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना–01 स्वीकृत की जाती है अर्थात् छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता।

परिकल्पना क्र.– 02

''छात्रावासी एवं गैरछात्रावासी अनुसूचित जनजाति छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि

क्रं.	समूह	N	M	SD	S_{Ed}	df	't'	सार्थकता का स्तर
1.	छात्रावासी	50	19.14	5.05	0.90	98	0.98	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2.	गैर छात्रावासी	50	20.04	4.08				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अनुसूचित जनजाति के छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान मानों में सार्थक अंतर नहीं अन्तर है। अतः परिकल्पना–02 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच सह–संबंध नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

छात्रावासी अनुसूचित जनजाति छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध

क्रं.	अनुसूचित जनजाति के छात्रावासी छात्रों की	माध्य	प्रमाणिक विचलन	r
1.	अभिवृत्ति	46.06	6.82	0.11
2.	उपलब्धि	19.14	5.05	

उपरोक्त तालिका में दर्शाये गये विवरणानुसार छात्रावासी अनुसूचित जनजाति विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह–संबंध नगण्य धनात्मक है। r का मान 0.11 प्राप्त हुआ है जो df 48 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है अर्थात् छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

परिकल्पना क्रमांक –04

''गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सह–संबंध नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धियों में संबंध

क्रं.	गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की	माध्य	प्रमाणिक विचलन	df	r
1.	अभिवृत्ति	45.78	8.68	48	0.13
2.	उपलब्धि	20.04	4.08		

उपरोक्त तालिका में दर्शाये गये विवरणानुसार गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह–संबंध नगण्य धनात्मक है। r का मान 0. 13 प्राप्त हुआ। df = 48 पर 0.05 सार्थकता के स्तर पर सारिणी मान 0.195 है जो कि गणना से प्राप्त r के मान से अधिक है।

अतः परिकल्पना–04 स्वीकृत की जाती है। गैर छात्रावासी अनुसूचित जनजाति छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उनकी शैक्षिक उपलिब्ध के बीच सार्थक सहसंबंध नहीं होता।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं **–**

1. छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी छात्रों अनुसूचित जनजाति की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य नगण्य धनात्मक सह–संबंध पाया गया।

4. गैर–छात्रावासी अनुसूचित जनजाति के छात्रों के वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य नगण्य धनात्मक सह–संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestions) –

1- छात्रावास की स्थापना के उद्देश्य, स्वरूप तथा प्रशासन की अपेक्षाओं का व्यापक प्रचार–प्रसार होना चाहिए।

2- छात्रावासों की संख्या अनुसूचित जनजाति छात्रों की संख्या के अनुपात में कम है। अतः शासन को चाहिए कि छात्रावासों की संख्या बढ़ायी जाए तथा पूर्व में स्थिापित छात्रावासों में स्वीकृत सीटों की संख्या में वृद्धि की जावे।

3- छात्रावासों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों को ही पदस्थ किया जाए जो छात्रों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास कर सकें।

4- पुस्तकालयों में पत्र–पत्रिकाएँ, अखबार, पठन संबंधी अन्य पर्याप्त शिक्षण सामग्रियाँ, रेडियो, टी.वी. तथा कम्प्यूटर आदि की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए।

5- दूरस्थ अंचलों में स्थापित छात्रावासों में पदस्थ शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों के ऊपर उचित प्रशासन एवं नियमित निरीक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए।

संदर्भ (References) –

1. आदित्य, प्रमोद कुमार (1994) :– ''अनुसूचित जनजाति छात्र–छात्राओं के आत्मबोध का शैक्षिक उपलब्धि का पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन'' लघु शोध प्रबंध गुरू घासीदास वि. वि. बिलासपुर।
2. साहू, श्यामानन्द (2006) :– छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी अनुसूचित जनजाति छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, गुरू घासीदास वि. वि. बिलासपुर (छ.ग.)

3. ''बाल पत्रिकाओं का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

राम बाबू गुप्ता

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

विद्यार्थी के कोमल बाल सुलभ मन की असीम जिज्ञासाओं ने उसे बहुआयामी दृष्टिकोण प्रदान किया है। बचपन में प्रकृति से परिचित होते ही वह उसे पूरी तरह जानने को आतुर हो उठता है। यही आतुरता उसके अंदर पढ़ने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करती है। यह नैसर्गिक आतुरता उसके ज्ञान प्राप्ति के प्रति आकर्षण को बढ़ाने में मदद करती है। विविधताओं से परिपूर्ण बाल पत्रिकाएँ स्वाभाविक रूप से उसमें पढ़ने की आदत का विकास करती हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पढ़ने की आदत पर बाल पत्रिकाओं के प्रभाव को प्रस्तुत शोध द्वारा जानने का प्रयास किया गया है।

शोध अध्ययन के अनुसार हाई स्कूल स्तर पर साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग से ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत का विकास होता है व शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक एवं उत्साहवर्धक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

बाल सुलभ मन नितांत सरल, निश्छल और सतत् आनन्द की खोज में रहता है। बाल्यावस्था में रंग–बिरंगे चित्र, जीव–जन्तु, पेड़–पौधे और प्रकृति की रचना, उनकी उत्पत्ति की गाथाएँ, परीलोक की कहानियाँ, खेल, विज्ञान और सम्पूर्ण क्रिया–कलाप बच्चों की जिज्ञासाओं और उनकी कल्पनाओं की दुनिया होती हैं। ये सब उन्हें बाल पत्रिकाओं, बाल विज्ञान पत्रिकाओं में बड़ी सहजता से उपलब्ध हो जाते हैं। यही कारण है कि एक ओर जहाँ बच्चे पाठ्य–पुस्तकों के प्रति अरूचि दिखाते हैं वही बाल पत्रिकाओं, कॉमिक्स आदि को पढ़ने के प्रति सहज आकर्षण दिखाते हैं। अतः हमारा दायित्व हो जाता है कि हम उनके इस आकर्षण का उपयोग कर पढ़ने की आदत का विकास करें।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. छात्रों में पढ़ने की आदत की स्थिति ज्ञात करना।

2. सामान्य अध्ययन के विषय में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति ज्ञात करना।
3. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह में साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत ज्ञात करना।
4. बाल पत्रिकाओं के प्रभाव के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत की पश्चात् स्थिति ज्ञात करना।
5. पढ़ने की आदत में परिवर्तन का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–प्रस्तुत शोध के लिए निर्मित परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों के पढ़ने की आदतों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
02. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों के पढ़ने की आदतों पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
03. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
04. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
05. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा पढ़ने की आदत में सह संबंध नहीं पाया जायेगा।
06. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत में पूर्व एवं पश्चात परीक्षण में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
07. साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग तथा छात्रों की पढ़ने की आदतों में सह संबंध नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध के लिए परिसीमन निम्नानुसार है –

1. स्तर – कक्षा 9 वीं में अध्ययनरत छात्र–छात्राएँ।
2. शैक्षिक उपलब्धि – विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान विषय।
3. क्षेत्र – (क) शहरी – नगर निकाय के अंतर्गत की शालाएँ
   (ख) ग्रामीण– ग्राम पंचायत के अंतर्गत की शालाएँ

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत अध्ययन में हाईस्कूल स्तर पर बिलासपुर जिले के कोटा विकास खण्ड के दो विद्यालयों के 160 विद्यार्थियों (80 बालक, 80 बालिकाएँ – प्रति शाला 40 बालक, 40 बालिकाएँ) का चयन उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से गया। विद्यार्थियों के दो समान समूह (प्रायोगिक व नियंत्रित) निर्मित किए गए।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया –

1. पढ़ने की आदत परीक्षण (Reading Habit Test) – इस परीक्षण का निर्माण Jamnalal Bayti and Pushpa Sodhi Reading Test (R.T.) Hindi meant for 11 to 15 years school going children of both sexes.
2. शैक्षणिक उपलब्धि मापनी (स्वनिर्मित)।
3. बाल पत्रिकाओं पर आधारित प्रश्नावली (स्वनिर्मित) ।

- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया –

1. स्वतंत्र चर – बाल पत्रिकाएँ (साहित्यक एवं विज्ञान संबंधी)
2. आश्रित चर – पढ़ने की आदत (Reading Habit)
3. सह–चर – लिंग एवं स्थान।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध और उसकी सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 01 (a)
नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण	40	23.8	9.63	78	6.49	sp<0.01
2	शहरी	40	35.2	10.1			

सारिणी क्रमांक – 01 (b)

प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण	40	24.8	8.50	78	7.39	sp<0.01
2	शहरी	40	37.30	7.08			

उपरोक्त तालिकाओं से स्पष्ट है पढ़ने की आदत के संबंध में क्षेत्र के आधार पर नियंत्रित एवं प्रायोगिक दोनों समूहों में ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए मध्यमान क्रमशः 23.88 व 24.38 तथा शहरी विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 35.20 व 37.30 पाया गया। t का मान 6.49 व 7.39 पाया गया जो कि 78 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः .01 विश्वास स्तर पर नियंत्रित तथा प्रायोगिक समूहों के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के मानों में सार्थक अन्तर पाया गया। परिणाम के अनुसार विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत पर क्षेत्र का प्रभाव पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 अस्वीकृत होती है। पुष्टि – यादव, कुमारी कांति (2008) के शोध अध्ययन में भी इस प्रकार का परिणाम पाया गया था।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की पढ़ने की आदतों पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 02 (a)

नियंत्रित समूह के छात्र – छात्राओं की पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	छात्राएँ	40	32.8	14.5	78	1.11	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2	छात्र	40	29.80	9.99			

सारणी क्रमांक – 02 (b)

प्रायोगिक समूह के छात्र – छात्राओं की पढ़ने की आदत संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	छात्राएँ	40	31.3	10.1	78	0.48	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2	छात्र	40	30.45	10.7			

नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के छात्रों के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 29.80 एवं 30.45 है जिसकी तुलना में छात्राओं के प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 32.8 एवं 31.3 पाया गया। df 78 पर t का मान 1.11 तथा 0.48 है, जो .05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.96 से कम है। अतः नियंत्रित व प्रायोगिक दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं की पढ़ने की आदत के संबंध में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना–02 स्वीकृत होती है क्योंकि नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया। पुष्टि – लिण्डा बी. गेमब्रेल (1996) के शोध अध्ययन में इस प्रकार का परिणाम पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03 (a)

नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण	40	14.15	3.56	78	1.24	0.01 विश्वास स्तर पर NS
2	शहरी	40	15.43	5.44			

नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 14.15 व 15.43 तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 3.56 व 5.44 है। गणना से प्राप्त t मान 1.24 है जो कि .01 विश्वास स्तर पर सारणी मान 2.59 से कम है अर्थात् नियंत्रित समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

सारिणी क्रमांक – 03 (b)

प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण	40	18.3	3.44	78	3.53	sp<.01
2	शहरी	40	22.43	5.88			

प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांकों का माध्य क्रमशः 18.3 व 22.43 तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 3.44 व 5.88 है। t मान 3.53 पाया गया जो कि .01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है। अतः सार्थक अंतर पाया गया। अतः प्रायोगिक समूह के लिए परिकल्पना – 03 अस्वीकृत होती है।

पुष्टि – यादव, कुमारी कांति (2008) के शोध अध्ययन में इस प्रकार का परिणाम पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 04 (a)

नियंत्रित समूह के छात्र – छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	छात्र	40	14.2	4.68	78	0.95	NS 0.01 विश्वास स्तर पर
2	छात्राएँ	40	14.74	4.70			

सारिणी क्रमांक – 04 (b)

प्रायोगिक समूह के छात्र – छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि संबंधी प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t मान	सार्थकता
1	छात्र	40	20.69	6.19	78	0.86	NS 0.01 विश्वास स्तर पर
2	छात्राएँ	40	20.54	4.01			

नियंत्रित एवं प्रायोगिक दोनों ही समूहों में छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांक का माध्य क्रमशः 14.2 व 14.74 तथा 20.69 व 20.54 है, प्रमाप विचलन क्रमशः 4.68 व 4.70 तथा 6.19 व 4.01 है। t मान क्रमशः 0.95 एवं 0.86 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर t के सारणी मान से कम है। इस प्रकार दोनों ही समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत gqbZA

पुष्टि – प्राप्त परिणाम लिण्डा बी. गेमब्रेल (1996) के शोध परिणामों के अनुकूल है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा पढ़ने की आदत में सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 05 (a)

नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पढ़ने की आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	सह–संबंध r	परिणाम	स्तर
1	पढ़ने की आदत	80	29.88	+0.45	धनात्मक	मध्यम
2	शैक्षिक उपलब्धि	80	15.13			

सारिणी क्रमांक – 05 (b)

प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं पढ़ने की आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	सह–संबंध r	परिणाम	स्तर
1	पढ़ने की आदत	80	52.93	+0.56	धनात्मक	मध्यम
2	शैक्षिक उपलब्धि	80	30.01			

नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि के माध्य क्रमशः 29.88 व 15.13 तथा 52.93 व 30.01 है तथा सह संबंध गुणांक क्रमशः +0.45 तथा +0.56 है, जो कि मध्यम धनात्मक स्तर का है अर्थात् पढ़ने की आदत उच्च होने पर छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च पाई गई।

पुष्टि – प्राप्त परिणाम से मिलते–जुलते परिणाम Holtzman, W.H. (1954) एवं सेन. बरात कल्पना (1992) के शोध में भी पाया गया है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूहों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 06 (a)

नियंत्रित समूह में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत के संबंध में पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक	df	t मान	सार्थकता
1	पूर्व परीक्षण	40	35.1	10.19	78	1.37	NS 0.01 विश्वास स्तर पर
2	पश्च परीक्षण	40	35.9	9.18			

नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में पढ़ने की आदत पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षणों के प्राप्तांकों पर t मान 1.37 है जो .01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से कम है इसलिए सार्थक अंतर नहीं है। अतः नियंत्रित समूह के संदर्भ में परिकल्पना – 06 स्वीकृत हुई।

सारिणी क्रमांक – 06 (b)

प्रायोगिक समूह में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक	df	t मान	सार्थकता
1	पूर्व परीक्षण	40	37.30	7.08	78	6.41	sp<.01
2	पश्च परीक्षण	40	46.88	6.41			

प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में बाल पत्रिकाओं के उपयोग के परिपेक्ष्य में पढ़ने की आदत पर पूर्व एवं पश्चात् परीक्षणों के प्राप्तांकों पर t मान 6.41 है जो .01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है इसलिए सार्थक अंतर है। अतः प्रायोगिक समूह के संदर्भ में परिकल्पना – 06 अस्वीकृत हुई।

पुष्टि – प्राप्त परिणाम ICSSR Project Devrajan (1992) के शोध अध्ययन के अनुकूल है।

परिकल्पना क्रमांक – 07

''साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग तथा विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत में सहसंबंध नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 07

साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग तथा विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय विश्लेषण

स.क्र.	समूह परीक्षण	छात्रों की संख्या N	माध्य M	सह संबंध df	t मान	स्तर
1	बाल पत्रिका परीक्षण	80	24.93			
2	पढ़ने की आदत	80	50.29	+0.53	धनात्मक	मध्यम

बाल पत्रिकाओं एवं पढ़ने की आदत के बीच सह संबंध गुणांक पर आधारित प्राप्तांक +0.53 है जो कि मध्यम धनात्मक सह संबंध स्तर को दर्शाता है। अर्थात् बाल पत्रिकाओं के उपयोग से पढ़ने की आदत में सुधार एवं वृद्धि होती है। अतः परिकल्पना – 07 अस्वीकृत हुई।

पुष्टि – प्राप्त परिणाम से मिलते–जुलते परिणाम सेटी निशि, चिकारा सुधा (1993) एवं शुक्ला, कामता प्रसाद (2005) के शोध में पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध हेतु संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदतों में अन्तर पाया गया।
2. ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत उच्च पायी गयी।
3. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के छात्र एवं छात्राओं में पढ़ने की आदतों पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया। अर्थात् छात्र एवं छात्राओं में पढ़ने की आदत लगभग समान पायी गयी।
4. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं पाया गया। किन्तु प्रायोगिक समूह के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करने पर शहरी विद्यार्थियों में ग्रामीण की तुलना में उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त होती है।
5. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया गया अर्थात् छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि लगभग समान होती है।

6. नियंत्रित एवं प्रायोगिक समूह में विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध मध्यम स्तर का पाया गया। यह स्पष्ट है, कि पढ़ने की आदत के कारण शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति होना संभव है।
7. नियंत्रित समूह के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत में पूर्व एवं पश्चात् परीक्षणों में अन्तर नहीं पाया गया किन्तु प्रायोगिक समूह में अंतर पाया गया। बाल पत्रिकाओं के उपयोग से पढ़ने की आदत का विकास हुआ।
8. साहित्यिक एवं ज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं के उपयोग का विद्यार्थियों के पढ़ने की आदत में सहसंबंध मध्यम स्तर का पाया गया। यह प्रमाणित होता है कि बाल पत्रिकाओं के द्वारा छात्रों के पढ़ने की आदत में सुधार लाया जा सकता है।
9. बाल पत्रिकाओं के कक्षागत उपयोग एवं इसके प्रति छात्रों को अनुप्रेरित करने के प्रयास पढ़ने की आदत में वृद्धि करते हैं।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. विद्यालयों के पुस्तकालय में साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाओं को नियमित रूप से उपलब्ध कराते हुए विद्यालयों को उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. पालक भी बच्चों के साथ बाल पत्रिका पढ़ते हुए परिवार में उस पर चर्चा भी करें। इससे बच्चों में पढ़ने के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण होगा।
3. साहित्यिक एवं विज्ञान संबंधी बाल पत्रिकाएं शासन एवं समाज द्वारा निःशुल्क या कम खर्च में बच्चों तक सरलता पूर्वक उपलब्ध करायी जानी चाहिए।
4. धारावाहिक रूप से गतिविधियों, कहानियों एवं नाटकों के प्रकाशन से बच्चों में पत्रिकाओं को नियमित रूप से पढ़ने के प्रति रूझान बढ़ने से उनका संज्ञानात्मक विकास होगा।

संदर्भ (References) –

1. Badheka, Giju Bhai (2003) : Baal Shikshan Jaisa Maine Samajha, Ankit Publication, Jaipur.
2. Bharti, Jai Prakash: Bhartiya Baal Sahitya Ka Itihas, Thakur & Sons, Delhi.
3. Indira, K. (1992) : "A study of the reading intrest and study habits of new literates." M.Phil, Edu. Shri Venketeshwara Univercity 5th Survey of Education Research, NCERT, New Delhi, Vol-2, P.886.

4. Yadav, Ku. Kanti (2007-08) "An analytical Study of the effect of Children's magazines on the study habits and linguistic competence of the youngsters.

4. "छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन "

श्रीमती राजकुमारी महेन्द्र

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

स्कूलों में अध्ययन हेतु भिन्न–भिन्न परिवेश से विद्यार्थी आते हैं जिनमें से कुछ छात्रावासों में रहते हैं और कुछ गैर छात्रावासी होते हैं। छात्रावासी एक साथ रहते हैं। अतः उनकी कई आदतें और व्यक्तित्व एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। दूसरी ओर गैर छात्रावासी विद्यार्थी विभिन्न पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवेश से विद्यालयों में आते हैं। इनके परिवेश का प्रभाव उनके व्यक्तित्व व अध्ययन आदतों पर पड़ता है। प्रस्तुत शोध में छात्रावासी और गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन आदत मापनी (PSSHI), किशोर व्यक्तित्व परीक्षण (APT) प्रशासित करने पर छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

आज जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान ने अपना प्रभाव डाल कर जीवन यंत्रवत बना दिया है, ऐसे में बच्चों में चिंतन शक्ति के विकास के लिए अध्ययन आदत का होना आवश्यक है। यह विद्यार्थियों में स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

यद्यपि वातावरण भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि इसके अन्तर्गत वे समस्त तत्व समाहित रहते हैं जो मनुष्य के चारों ओर फैले हुए हैं तथा जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। एक ओर जहाँ विद्यालय का शैक्षिक वातावरण विद्यार्थी के व्यक्तित्व एवं आदतों को प्रभावित करता है, वहीं शाला के बाहर का वातावरण, उनका रहन–सहन भी व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। जिसमें छात्रावासी एवं

गैर छात्रावासी वातावरण मुख्य रूप से विद्यार्थी के व्यक्तित्व एवं अध्ययन आदत को प्रभावित करते हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का अध्ययन करना।
2. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
3. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की लिंगानुसार अध्ययन आदत का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–प्रस्तुत शोध के लिए निर्मित परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
02. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
03. छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
04. गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
05. छात्रावासी विद्यार्थियों की लिंगानुसार अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं होगा।
06. गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की लिंगानुसार अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध के लिए परिसीमन निम्नानुसार है –

शोध हाई स्कूल स्तर पर संचालित शासकीय आवासीय तथा गैर आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध हेतु 8 शालाओं (4 आवासीय तथा 4 गैर आवासीय) के कक्षा 10वीं के 200 विद्यार्थियों (100 छात्र तथा 100 छात्राएँ) का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया है। प्रति शाला 25 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. अध्ययन आदत मापनी - (मानकीकृत) M.N. Palsane & Sharma, Pune – PSSHI
2. व्यक्तित्व परीक्षण - (मानकीकृत) Smt. A. Pandey

- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

1. स्वतंत्र चर (Independent Variable) – छात्रावासी, गैर–छात्रावासी विद्यार्थी
2. आश्रित चर (Dependent Variable) – अध्ययन आदत एवं व्यक्तित्व

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 1

छात्रावासी एवं गैर–छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय मान

समूह	N	M	SD	df	SED	t	सार्थकता
छात्रावासी	100	60.11	7.47	198	1.04	1.26	NS
गैर छात्रावासी	100	58.59	7.29				

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का मध्यमान क्रमशः 60.11 तथा 58.59 प्रमाणिक विचलन 7.47 तथा 7.29 पाया गया। t मान गणना द्वारा 1.26 प्राप्त हुआ जो df 198 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान 1.98 से कम है। इसलिए यह सार्थक अंतर प्रदर्शित नहीं करता।

विश्लेषण के आधार पर छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्र.– 02

''छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की व्यक्तित्व के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय मान

समूह	N	M	SD	df	SED	t	सार्थकता
छात्रावासी	100	59.85	6.88	198	1.00	1.33	NS
गैर–छात्रावासी	100	58.51	7.29				

छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के प्राप्तांकों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमशः 59.85 तथा 58.5, प्रमाणिक विचलन 6.88 तथा 7.29 व t का मान 1.33 है जो df 198 के लिए 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारणी मान से कम है। इसलिए छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

छात्रावासी विद्यार्थियों का लिंगानुसार व्यक्तित्व के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय मान

समूह	N	M	SD	df	SED	t	सार्थकता
छात्र	50	58.4	7.77	98	1.46	2.33	P<.05
छात्रा	50	61.82	6.82				

गणना के आधार पर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 58.4 तथा 61.82, मानक विचलन 7.77 व 6.82, t मान 2.33 है जो 98 df पर 0.05 विश्वास स्तर के सारणी मान 1.97 से अधिक है। इसलिए उनमें सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना – 03 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक –04

''गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

गैर–छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय मान

समूह	N	M	SD	df	SED	t	सार्थकता
छात्र	50	60.68	7.51	98	1.37	1.20	NS
छात्रा	50	59.02	6.14				

गणना के आधार पर गैर–छात्रावासी विद्यार्थियों का लिंगानुसार व्यक्तित्व का t मान 1.20 पाया गया जो 0.01 विश्वास स्तर के मान से कम है। इसलिए लिंगानुसार सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 05

"'छात्रावासी विद्यार्थियों की लिंगानुसार अध्ययन आदत में अंतर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 05

छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदत के प्राप्तांक का सांख्यिकीय मान

समूह	N	M	SD	df	SED	t	सार्थकता
छात्र	50	55.96	6.07	98	1.35	4.19	P<0.05
छात्रा	50	61.62	7.36				

विश्लेषण के आधार पर छात्रावासी विद्यार्थियों में लिंगानुसार छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदत के लिए t मान 4.19 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है इसलिए सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना – 05 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की लिंगानुसार अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 06

गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदत के प्राप्तांकों का सांख्यिकीय मान

समूह	N	M	SD	df	SED	t	सार्थकता
छात्र	50	57.44	6.74	98	1.45	1.47	NS
छात्राएँ	50	59.58	7.33				

विश्लेषण के अनुसार गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार अध्ययन आदत हेतु t मान 1.47 पाया गया जो 98 df तथा 0.05 विश्वास स्तर के सारणी मान से कम है। इसलिए सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 06 स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैं –

1. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों की अध्ययन आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः दोनों की अध्ययन आदत समान पायी गयी।
2. छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया गया अर्थात् दोनों के व्यक्तित्व में समानता पायी गयी।
3. छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया। छात्रावासी छात्राओं का व्यक्तित्व, छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्तम है।
4. गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार व्यक्तित्व में सार्थक अंतर नहीं पाया अर्थात् गैर छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व में समानता पायी गयी।
5. छात्रावासी विद्यार्थियों की लिंगानुसार अध्ययन आदत में सार्थक अंतर पाया गया। अर्थात् छात्रावासी छात्राओं की अध्ययन आदतें छात्रों की अपेक्षा अधिक उत्तम पायी गयीं।
6. गैर छात्रावासी विद्यार्थियों के लिंगानुसार आदत में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् गैर–छात्रावासी छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन आदतों में समानता पायी गयी।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. प्रत्येक विद्यालय में शालेय पत्रिका का प्रकाशन किया जाय ताकि विद्यार्थियों को अपने विचार स्वतंत्र रूप से प्रगट करने अवसर मिल सकें।
2. विद्यार्थियों को अध्ययन के बीच में रूचिकर किताबें पढ़ने के अवसर प्रदान किये जाएँ ताकि अध्ययन की निरंतरता व लगन बनी रहे।
3. छात्रावास में भी अधिगम कोना तैयार किया जाये जिसमें बच्चों के लिए संदर्भ सामग्री उपलब्ध हो।
4. अधीक्षक एवं अधिक्षिका का बच्चों के प्रति व्यवहार स्नेहिल, सरल व सहज हो जिससे बच्चे अपने समस्याओं को उनके सम्मुख रख सकें तथा उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके तथा अध्ययन आदत को प्रोत्साहित करने वाला हो।

संदर्भ (References) –

- Agrahari, G.L. (1999) : An analytical study of study habits and attitude of gifted tribals students of Higher Secondary level.
- Bhambari, Nishi Tiwari, Preeti (2005) : The comparative study of the study habits and academic achievement of students studing in Higher

Secondary School conducted by C.B.S.E. & State Board of Secondary Education. Research Digest. Vol - I, p-37

- Ent Wistle N.J. and Ent Wistle D. (1970) - "Study of relationship between personality, study habits, academic performance and Eucational psychology." 40(10) 132-141, NCERT, New Delhi.

5. ''विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन''

नकुल प्रसाद पनागर

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

विज्ञान शिक्षण का उद्देश्य छात्रों को समाज में उपयोगी जीवन जीने के लिये सहायता प्रदान करना है। क्योंकि आज के प्रगतिशील समाज में नित–नयी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इन समस्याओं को हल करने के लिये बुद्धि, कल्पना, चिन्तन, सूझ, समन्वयीकरण आदि का सहारा लेना पड़ता है किंतु हाईस्कूल स्तर तक आते–आते वैज्ञानिक अभिवृत्ति का परिमार्जन न हो तो विज्ञान विषय नीरस व अरूचिकर हो जाता है। अतः वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्रभावों का अध्ययन शोध कार्य के रूप में चुना गया है ताकि व्यक्तित्व की सूक्ष्म जानकारी से बालक की वैज्ञानिक अभिवृत्ति को विकसित किया जा सके एवं उसके उन्नत व्यक्तित्व विकास के लिये परिस्थितियों एवं वातावरण का निर्माण किया जा सके।

प्रस्तुत शोध में कक्षा नवमीं के छात्रों के संदर्भ में उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

वैज्ञानिक अभिवृत्ति मानव व्यवहार या अधिगम व्यवहार में वह परिवर्तन है जिसके द्वारा प्राकृतिक वातावरण में परिस्थितियों या घटित घटनाओं की अधिकतम शुद्धता से व्याख्या करने का प्रयास किया जाता है।

समय की मांग के अनुरूप अधिकांश विद्यार्थियों को हाईस्कूल स्तर के बाद विज्ञान विषय लेने के लिये अच्छे कैरियर को ध्यान में रखने की बाध्यता होती है किन्तु यदि यह विषय हाईस्कूल स्तर पर बच्चों के दृष्टिकोण से नीरस व अरूचिकर है तो वैज्ञानिक अभिवृत्ति को बढ़ावा देकर इस विषय को अधिक रूचिकर व सरल बनाया जाना आवश्यक है। छात्र की मानसिक क्रिया के बिना विद्यालय में अधिगम बहुत कम होता है। सबसे अधिक प्रभावशाली अधिगम उस समय होता है जब मानसिक क्रिया सर्वाधिक होती है। अधिकतम मानसिक क्रिया प्रबल अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होती है।

वैज्ञानिक अभियोग्यता एवं उसके विकास हेतु शोधार्थियों द्वारा अनेक अध्ययन किये गये हैं किन्तु वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के सह–संबंधात्मक विकास के प्रयास हेतु अध्ययन की नितांत कमी है। अतः इस क्षेत्र में कार्य किया गया ताकि विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति की सूक्ष्म जानकारी से उनकी उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि की जा सके।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. ग्रामीण व शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण व शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन करना ।
3. ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयीं –

01. ग्रामीण शालाओं में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
02. शहरी शालाओं में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
03. ग्रामीण शालाओं में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
04. शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
05. ग्रामीण व शहरी शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

06. ग्रामीण व शहरी शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
07. ग्रामीण व शहरी शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) की वैज्ञानिक अभिवृत्ति और उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक सह–संबंध पाया जायेगा ।

परिसीमन (Delimitation) – इस अध्ययन को बिलासपुर जिले की ग्रामीण एवं शहरी बालक, कन्या तथा सहशिक्षा शासकीय/अशासकीय/अनुदान प्राप्त हाईस्कूल में अध्ययनरत् कक्षा नवमीं के छात्र–छात्राओं तक परिसीमित किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया गया।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोधकार्य में बिलासपुर जिले में स्थित बिल्हा विकासखण्ड के अंतर्गत दो शहरी एवं दो ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9वीं की एक सौ छात्राओं (Girls) व एक सौ छात्रों (Boys) (कुल दो सौ छात्र–छात्राओं) का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया।
- **उपकरण (Tools) –** प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया –
    1. उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (Achievement motivation test) %& डॉ. व्ही.पी. भार्गव के विधि तथा वाक्य पूर्ति परीक्षण पर आधारित।
- वैज्ञानिक अभिवृत्ति परीक्षण (Scientific Attitude Scale) :– डॉ. (श्रीमती) शैलजा भागवत द्वारा निर्मित विश्वसनीय एवं वैध Scientific Attitude Scale.
- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

    1. स्वतंत्र चर – उपलब्धि अभिप्रेरणा 2. आश्रित चर – वैज्ञानिक अभिवृत्ति

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"ग्रामीण शालाओं में अध्ययनरत के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

ग्रामीण शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों की सार्थकता

स. क्र.	वैज्ञानिक अभिवृत्ति	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	SEd	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण छात्र	50	71.1	4.63	1.05	98	1.46	NS, 0.05 विश्वास स्तर पर
2	ग्रामीण छात्राएँ	50	72.64	5.88				

उपरोक्त सारिणी के आधार पर प्राप्त t का मान 1.46 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर प्राप्त सारिणी मान 1.98 से कम है। अतः परिकल्पना–01 स्वीकृत हुई अर्थात् ग्रामीण शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 02

शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों की सार्थकता

स. क्र.	वैज्ञानिक अभिवृत्ति	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	SEd	df	t मान	सार्थकता
1	शहरी छात्र	50	77.28	5.16	1.08	98	1.55	NS 0.05 विश्वास स्तर पर
2	शहरी छात्राएँ	50	78.96	5.69				

उपरोक्त सारिणी के आधार पर प्राप्त t का मान 1.55 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारिणी के मान 1.98 से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इसलिए परिकल्पना – 02 स्वीकृत हुई। शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"ग्रामीण शालाओं में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 03

ग्रामीण शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में प्राप्तांकों की सार्थकता

स. क्र.	उपलब्धि अभिप्रेरणा	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	SEd	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण छात्र	50	18.56	3.12	0.69	98	1.30	NS 0.05 विश्वास स्तर पर
2	ग्रामीण छात्राएँ	50	19.46	3.83				

उपरोक्त सारिणी के आधार पर प्राप्त t का मान 1.30 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर प्राप्त सारिणी मान से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं है इसलिए परिकल्पना – 03 स्वीकृत हुई अर्थात् ग्रामीण शाला के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा के प्राप्तांकों की सार्थकता

स. क्र.	उपलब्धि अभिप्रेरणा	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	S.Ed	df	t मान	सार्थकता
1	शहरी छात्र	50	21.56	2.08	0.68	98	1.76	NS 0.05 विश्वास स्तर पर
2	शहरी छात्राएँ	50	22.76	4.39				

उपरोक्त सारिणी के आधार पर प्राप्त t का मान 1.76 है जो 0.05 सार्थकता स्तर पर प्राप्त सारिणी मान से कम है इसलिए सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत हुई अर्थात् शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''ग्रामीण एवं शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 05

ग्रामीण एवं शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति

के प्राप्तांकों की सार्थकता

स.क्र.	वैज्ञानिक अभिवृत्ति	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	S.Ed	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण (छात्र–छात्रा)	100	71.87	5.32	0.76	198	9.19	p<0.01
2	शहरी (छात्र–छात्रा)	100	78.12	5.47				

उपरोक्त सारिणी के अनुसार प्राप्त t का मान 9.19 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारिणी मान से अधिक है अर्थात् दोनों में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना – 05 अस्वीकृत हुई अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति उच्च पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''ग्रामीण एवं शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 06

ग्रामीण एवं शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा

के प्राप्तांकों की सार्थकता

स.क्र.	उपलब्धि अभिप्रेरणा	छात्रों की संख्या N	माध्य M	प्रमाणिक विचलन SD	S.Ed	df	t मान	सार्थकता
1	ग्रामीण (छात्र–छात्रा)	100	19.01	3.50	0.49	198	6.42	p<0.01
2	शहरी (छात्र–छात्रा)	100	22.16	3.47				

उपरोक्त सारिणी के आधार पर प्राप्त t का मान 6.42 है जो 0.01 विश्वास स्तर पर प्राप्त सारिणी मान से अधिक है अर्थात् दोनों में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना – 06 अस्वीकृत हुई अर्थात् ग्रामीण एवं शहरी शालाओं में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में सार्थक अंतर पाया गया। शहरी छात्रों की उपलब्धि अभिप्रेरणा उच्च पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 07

''ग्रामीण एवं शहरी शालाओं के छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में सहसंबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 07

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में सहसंबंध

स.क्र.	वैज्ञानिक अभिवृत्ति	माध्य M	छात्रों की संख्या N	r	सहसंबंध
1	वैज्ञानिक अभिवृत्ति	74.99	200	0.23	+ ve
2	उपलब्धि अभिप्रेरणा	20.58			

उपरोक्त सारिणी के आधार पर प्राप्त सह संबंध गुणांक का मान 0.23 है जो निम्न धनात्मक सह–संबंध दर्शाता है। अतः परिकल्पना – 07 स्वीकृत हुई। अतः ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा में धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. ग्रामीण शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया।
2. शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया।
3. ग्रामीण शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर नहीं पाया गया।
4. शहरी शालाओं के छात्र एवं छात्राओं की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर नहीं पाया गया।
5. ग्रामीण एवं शहरी शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में अंतर पाया गया। शहरी शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति ग्रामीण शालाओं के छात्र–छात्राओं से उच्च है।
6. ग्रामीण व शहरी शालाओं में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में अंतर पाया गया। शहरी शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा ग्रामीण शालाओं के विद्यार्थियों से उच्च है।
7. ग्रामीण व शहरी शालाओं के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति और उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य धनात्मक सह–संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. व्यावसायिक विषयों जैसे – कृषि, उद्यान, डेयरी आदि के संदर्भ में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का मापन कर छात्रों की विशेष योग्यता को बढ़ाया जाना चाहिए।
2. सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के स्कूलों में विद्यार्जन कर रहे छात्रों की वैज्ञानिक जिज्ञासा शांत करने का दायित्व शिक्षकों का ही होता है। अतः इसके लिए शिक्षण कार्य क्रियात्मक, रूचिपूर्ण एवं प्रभावी होना चाहिए।

3. छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास तथा रूचि जागृत करने के लिए प्रत्येक विषय में छात्रों की सोच में वैज्ञानिकता के विकास करने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए एवं उनका सतत् मूल्यांकन भी किया जाना चाहिए।
4. ग्रामीण स्तर पर वाद–विवाद, परिचर्चा, डाक्यूमेंट्री, फिल्म आदि के आयोजन द्वारा आम नागरिकों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास किया जाना चाहिए।

संदर्भ (References) –

1. Banerjee T (1972) : Rorschach whole Response Intelligence and Achivement in science, Govt. of W. Bengal
2. Dani, D.N. (1984) : Scientific Attitude and Cognitive styles of Higher Secondry students.

6. ''विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के संदर्भ में सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि का अध्ययन''

रती राम विश्वकर्मा

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सामाजिक, मानसिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक विकास करना है। इसके लिए विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक क्षेत्र के साथ–साथ सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में विकास पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के संदर्भ में सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धियों का अध्ययन किया गया है। इस शोध हेतु शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से कक्षा 8वीं के 200 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। इन विद्यार्थियों पर सामाजिक बुद्धि मापनी एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षण को प्रशासित कर आँकड़े प्राप्त किए गए। गणना के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि सामाजिक बुद्धि एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि क्षेत्र का प्रभाव देखा गया है। उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों से उच्च पायी गयी।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति का बौद्धिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है शिक्षा उसके जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है उसके व्यवहार में परिवर्तन तथा परिवर्धन करती है जो कि व्यक्ति, समाज, देश तथा विश्वकल्याण के लिए आवश्यक है।

व्यक्ति सामाजिक बुद्धि के फलस्वरूप ही समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना पाता है तथा समाज व देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। विद्यार्थियों को सामाजिक बुद्धि प्रारंभ में अपने परिवार तथा वातावरण से प्राप्त होती है।

विद्यालयीन पाठ्यचर्या में विभिन्न क्षेत्रों का समावेश है जिसमें संज्ञानात्मक एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्र प्रमुख हैं। सह संज्ञानात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत शारीरिक स्वच्छता, कला, शाश्वत मूल्य, व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्य, पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता, अभिवृत्ति, रूचि आदि क्षेत्रों का समावेश किया जाता है। बच्चों का इन क्षेत्रों में विकास आवश्यक है। अतः शिक्षकों को विद्यार्थियों की इन क्षेत्रों में भागीदारी, रूचि और जुड़ाव का सतत् अवलोकन करना होगा तथा ऐसे अवसर निर्मित करने होंगे जिससे इनका विकास हो।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. छात्र–छात्राओं की सामाजिक बुद्धि को ज्ञात कर उसकी तुलना करना।
2. छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि ज्ञात कर उसकी तुलना करना।
3. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के मध्य तुलना करना।
4. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि का पता लगाना और दोनों के बीच तुलना करना।
5. उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि का पता लगाना।
6. विद्यार्थियों के सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि पर उनकी सामाजिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध के परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. छात्र–छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
02. छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
03. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

04. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

05. उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

06. छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की सहभागिता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध का परिसीमन बिलासपुर जिले की उच्च प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों तक किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** प्रस्तुत शोध में घटनोत्तर शोधविधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया। इसके लिए बिलासपुर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित दो शहरी एवं तीन ग्रामीण उच्च प्राथमिक शालाओं की कक्षा आठवीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों (छात्र–छात्राओं) का चयन किया गया है।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. सामाजिक बुद्धि मापनी (Social Intelligence Scale), :– डॉ. एन. के. चड्डा एवं श्रीमती उषा गनेशन
  2. सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित प्रश्नावली।
  3. सह संज्ञानात्मक क्षेत्र सहभागिता जानकारी प्रपत्र – स्वनिर्मित।
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर :– सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence)
  2. आश्रित चर :– सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि
  3. सह चर :– छात्र–छात्राएं

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''छात्र–छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 01

छात्र–छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	बालक	100	102.44	5.57	198	1.35	NS
2	बालिका	100	103.56	6.08			

सारिणी के अनुसार छात्र–छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान क्रमशः 102.44 व 103.56, मानक विचलन 5.57 व 6.08 तथा t मान 1.35 पाया गया जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारिणी मान से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इसलिए परिकल्पना – 01 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।'

सारिणी क्रमांक– 02

छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	बालक	100	63.50	3.05	198	1.11	NS
2	बालिका	100	64.00	3.29			

छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 63.50 व 64.00, मानक विचलन 3.05 व 3.29 तथा t मान 1.11 पाया गया जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया व परिकल्पना – 02 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 03

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थिय की सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण	100	101.80	5.06	198	2.83	P>0.01
2	शहरी	100	104.20	6.78			

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान क्रमशः 101.80 व 104.20, प्रमाणिक विचलन 5.06 व 6.78 तथा t का मान 2.83 पाया गया जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है। अतः परिकल्पना – 03 अस्वीकृत हुई । शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि, ग्रामीण विद्यार्थियों से उच्च पाई गई।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।''

सारिणी क्रमांक– 04

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि

के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण	100	63.00	3.02	198	2.79	P>0.01
2	शहरी	100	64.50	4.44			

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 63.00 व 64.05, मानक विचलन 3.02 व 4.44 तथा t मान 2.79 पाया गया जो 98 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है। अतः सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से उच्च पाई गई तथा परिकल्पना – 04 अस्वीकृत हुई है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह–संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 05

उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह–संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	उच्च सामाजिक बुद्धि	100	64.70	3.71	198	3.84	P>0.01
2	निम्न सामाजिक बुद्धि	100	62.80	3.21			

अतः माध्य के आधार पर उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि, निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अतः परिकल्पना–05 अस्वीकृत हुई ।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''छात्र–छात्राओं का सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की सहभागिता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 06

छात्र–छात्राओं के सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की सहभागिता में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	बालक	100	68.56	3.60	198	1.71	NS
2	बालिका	100	69.50	4.12			

छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की सहभागिता का मध्यमान क्रमशः 68.56 व 69.50, तथा मानक विचलन 3.60 व 4.12 तथा t मान 1.71 पाया गया। अतः दोनों में सार्थक अन्तर नहीं है व परिकल्पना – 06 स्वीकृत की गयी।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. छात्र–छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3. शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि, ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि से उच्च पाई गई।
4. शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि से उच्च पाई गई।
5. उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह–संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों से उच्च पाई गई।
6. छात्र–छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की सहभागिता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रमों को स्थान दिया जाए जिससे विद्यार्थियों की विभिन्न शैक्षिक रूचियों का विकास हो सके।
2. शिक्षक–पालक संबंधों को दृढ़ बनाने का प्रयास किया जाए जिससे विद्यार्थियों की जानकारी पालकों को मिलती रहे।
3. विद्यालय में विद्यार्थियों के मनोबल एवं आत्म विश्वास को विकसित करने के लिये शिक्षकों द्वारा समय–समय पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन एवं पुरस्कार दिया जाए।
4. ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन हो जिससे विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के विकास के अवसर मिलें।
5. छात्र–छात्राएॅ पोर्टफोलियो का निर्माण करें जिसमें बच्चों की रूचि, व्यवहार, व विशेष योग्यताओं, क्षमताओं के अनुरूप उनके द्वारा किए गए कार्यों का संकलन हो एवं मूल्यांकन कर बच्चों तथा उनके अभिभावकों को अवगत कराया जाए।

संदर्भ (References) –

1. सुमंगला, एन, (1990), : ''ए स्टडी ऑफ लैंग्वेज क्रिएटीवटी ऑफ स्टेंडर्स नाइन्थ स्टूडेंट्स दन रिलेशन टू इन्टेलिजेन्सी, टीचर इनआल्वमेन्ट एण्ड जेण्डर।''
2. अफसान, (1991), : ''शहरी एवं ग्रामीण बुद्धिमान छात्राओं में व्यवसायिक अभिरूचि और सृजनात्मकता का अध्ययन।''

7. ''संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''

श्रीमती गायत्री शर्मा

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारक एक दूसरे को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करते हैं। यह अत्यावश्यक है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु मनोवैज्ञानिक कारकों से शिक्षक परिचित हों। प्रस्तुत शोध में संवेगात्मक बुद्धि का सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। शोध से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि का सृजनात्मकता पर धनात्मक प्रभाव पाया गया है। यदि किसी छात्र में संवेगात्मक बुद्धि अधिक हो तो उसे सृजनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित किया जा सकता है। उसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में भी धनात्मक सह–संबंध पाया गया। यदि किसी उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि संतोषप्रद न हो तो संभावित कारणों का पता लगाकर तथा संवेगात्मक बुद्धि के विकास द्वारा समस्या का समाधान किया जा सकता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

व्यक्ति के मानसिक विकास में संवेगों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सुखद संवेगात्मक स्थिति होने पर मानसिक स्वास्थ्य में भी वृद्धि होती है। साथ ही उसकी सभी मानसिक शक्तियाँ एवं क्षमताएँ अधिक सक्रियता से कार्य करने में सहयोग करती हैं अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य हेतु सकारात्मक संवेगात्मक बुद्धि का होना आवश्यक है। यह भी सत्य है

कि बुद्धि एवं सृजनात्मकता में संबंध होता है। बच्चों की सृजनात्मकता की प्रवृत्ति ज्ञात होने पर उन्हें नवीन आविष्कार एवं अनुसंधान के लिए प्रेरित कर उनका आत्मबल एवं विश्वास बढ़ाया जा सकता है। अतः बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास करने के लिए एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के लिए सकारात्मक संवेगात्मक वातावरण के निर्माण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का पता लगाना।
2. संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में सहसंबंध ज्ञात करना।
3. संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध ज्ञात करना।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की तुलना करना।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।
02. संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।
03. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
04. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
05. ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
06. ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।
07. ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध जाँजगीर–चाँपा जिले की 03 शहरी एवं 02 ग्रामीण शासकीय उच्चतर माध्यमिक शालाओं के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों तथा सामाजिक विज्ञान एवं हिन्दी विषय में उनकी शैक्षिक उपलब्धि तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में जाँजगीर–चाँपा जिले के 3 शहरी तथा 2 ग्रामीण शालाओं के 200 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया गया। ग्रामीण तथा शहरी दोनों क्षेत्रों से न्यादर्श के रूप में 50 बालक तथा 50 बालिकाओं का चयन किया गया।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. सृजनात्मकता मापनी – डॉ. बी.के. पासी, प्रोफेसर एंड हेड (रिटायर्ड), देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी, इंदौर (मध्यप्रदेश) – प्रकाशन वर्ष 1971,
  2. संवेगात्मक बुद्धि मापनी – श्री अनुकूल हायड (इंदौर), श्री संजोत पेठे (अहमदाबाद), श्री उपिन्दर धर (अहमदाबाद) – प्रकाशन वर्ष 1971,
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर – संवेगात्मक बुद्धि
  2. आश्रित चर – सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि
  3. सहचर – 1. लिंग – छात्र/छात्राएँ 2. क्षेत्र – ग्रामीण/शहरी

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 01

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				विशेष
			M	SD	df	r	
1	संवेगात्मक बुद्धि	200	112.1	33.82	398	0.61	धनात्मक सहसंबंध
2	सृजनात्मकता	200	37.93	13.36			

संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मक के मध्यमान क्रमशः 112.1 तथा 37.93, मानक विचलन 33.82 तथा 13.36 है। r का मान 0.61 पाया गया जो कि धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है। विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 02

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता
			M	SD	df	r	
1	संवेगात्मक बुद्धि	200	112.1	33.82	398	0.55	धनात्मक सहसंबंध
2	शैक्षिक उपलब्धि	200	45.01	20.042			

विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 112.1 तथा 45.01, मानक विचलन 33.82 तथा 20.042 है। r का मान 0.55 पाया गया जो कि धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है। अतः परिकल्पना – 02 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 03

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता
			M	SD	df	t	
1	उच्च संवेगात्मक बुद्धि	100	56.64	18.75	198	3.44	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं
2	निम्न संवेगात्मक बुद्धि	100	31.60	19.5			

उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 56.64 एवं 31.60 है तथा t का मान 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान से अधिक है। अतः उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना –03 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारिणी क्रमांक– 04

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता
			M	SD	df	t	
1	उच्च संवेगात्मक बुद्धि	100	48.33	11.23	198	1.02	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं।
2	निम्न संवेगात्मक बुद्धि	100	31.60	19.5			

उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 48.33 तथा 31.60, मानक विचलन 11.23 तथा 19.5 व t मान 1.02 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसलिए परिकल्पना – 04 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 05

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण	100	113.3	31.26	198	0.58	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं।
2	शहरी	100	25.5	14.50			

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि के मध्यमान क्रमशः 113.3 तथा 25.5, मानक विचलन 31.26 तथा 14.50 व t मान 0.58 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 05 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 06

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण	100	45.75	20.55	198	0.61	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं।
2	शहरी	100	44.29	20.34			

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता का मध्यमान क्रमशः 45. 75 तथा 44.29, मानक विचलन 20.55 तथा 20.34 व t मान 0.61 पाया गया। यह मान 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 06 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 07

''ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक– 07

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण	100	35.79	10.31	198	0.61	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं।
2	शहरी	100	25.5	14.50			

ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान क्रमशः 35.79 तथा 25.5 मानक विचलन 10.31 तथा 14.50 व t मान 0.61 पाया गया जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान से कम है अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना – 07 स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि और सृजनात्मकता में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
2. विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
3. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर पाया गया। उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता अधिक पायी गयी।

4. उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में अन्तर नहीं पाया गया।
6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में अन्तर नहीं पाया गया।
7. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव बुद्धि लब्धि पर पड़ता है। अतः बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किया जाए।
2. संवेगात्मक बुद्धि द्वारा सामाजिक गुण विकसित होते हैं। बच्चों में संवेगात्मक बुद्धि को विकसित किए जाने से समरसता, सहयोग, मित्रता जैसे गुण विकसित होंगे।
3. सृजनात्मक क्षमता विकसित करने हेतु शाला में बच्चों को नवीन मौलिक उत्पादक कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाए।
4. E.Q. बढ़ने से शैक्षिक उपलब्धि में भी वृद्धि होती है। शालेय वातावरण ऐसा हो कि बच्चे मिलकर अपना कार्य स्वयं करें। शिक्षक कक्षा कार्य में बच्चों की समान रूप से सहभागिता लें।
5. उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले बच्चों में सृजनात्मक क्षमता अधिक होती है जो बच्चे सृजनात्मक कार्यों में रूचि नहीं लेते उनको प्रेरित किया जाये। वाद–विवाद, सेमीनार, भ्रमण, स्काउट–गाइड, सांस्कृतिक कार्यक्रम कराए जायें।

संदर्भ (References) –

1. Asha, 1980 : Journal of American Science, 2009 P-110
2. Ailken Harra 2004 : Journal of American Science P-103
3. Aix, 1999 : Journal of American Science P-103
4. Behroomi, 1997 : Journal of American Science P-103
5. Karimi, 2000 : Journal of American Science P-103
6. Mishra, 2007 : लघु शोध, शास. उ. शि. महाविद्यालय, बिलासपुर
7. Nori, 2002 : लघु शोध, शास. उ. शि. महाविद्यालय, बिलासपुर
8. Sharma Renuka : By w.w.w.Edu.com.

8. ''विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन''

श्रीमती आरती पाण्डेय

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

सृजनात्मक चिंतन एक सहज मानवीय प्रवृत्ति है। इसका प्रयोग व्यक्ति प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान में करता है। व्यक्तिगत मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होती है। सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास शिक्षक, बालकों के व्यक्तित्व गुणों को ध्यान में रखकर कर सकते है एवं उनके मूल्यों को समझ सकते हैं। उचित वातावरण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की कक्षा 8वीं के लगभग 160 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। सृजनात्मक चिन्तन मापनी एवं व्यक्तिगत मूल्य मापनी के प्रशासन से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पाया गया कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति एवं व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग एवं क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति एवं सामाजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, ज्ञान मूल्यों में धनात्मक सह संबंध होता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

मानव जीवन में शिक्षा की अहम् भूमिका है। बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने का कार्य शिक्षा ही करती है। शिक्षा के माध्यम से ही समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है। जीवन में उदारता, उच्चता, चिन्तन, सृजन, सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही संभव है।

शिक्षक, सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास, बालक के व्यक्तित्व के गुणों को ध्यान में रखकर कर सकता है एवं उनके मूल्यों को समझ सकता है। वह सृजनशील

विद्यार्थियों को उचित वातावरण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने का सुअवसर प्रदान कर सकता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों में निहित व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य तथा सृजनात्मक चिन्तन शक्ति में संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01 विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

02 विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति पर क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

03 विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

04 विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

05 विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति तथा उनके व्यक्तिगत मूल्यों के विभिन्न घटकों के बीच सार्थक सह संबंध नहीं होता है।

परिसीमन (Delimitation) – अध्ययन सरगुजा जिले के विकासखण्ड बलरामपुर के अन्तर्गत आने वाली उच्च प्राथमिक शाला के कक्षा 8वीं के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

शोध विधि (Research Method) – इस अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

- **न्यादर्श (Sample)** – सरगुजा जिले के बलरामपुर विकासखण्ड की 3 शहरी एवं 3 ग्रामीण शालाओं के उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों (80 बालक तथा 80 बालिकाओं) का चयन यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि से किया गया।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. सृजनात्मक चिन्तन मापनी – डॉ. बाकर मेहदी (मानकीकृत)
  2. व्यक्तिगत मूल्य मापनी – डॉ. जी.पी. शेरी एवं डॉ. आर.पी. वर्मा (मानकीकृत)
- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर – व्यक्तिगत मूल्य

2. आश्रित चर – सृजनात्मक चिन्तन

3. सह चर – लिंग एवं क्षेत्र

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।''

सारिणी क्रमांक– 01

क्र.	लिंग	न्यादर्श संख्या (N)	सार्थकता M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	बालक	80	65.38	17.58	159	0.48	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं
2	बालिका	80	59.83	19.51			

बालकों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति के प्रदत्तों का मध्यमान 65.38 तथा प्रमाणिक विचलन 17.58 एवं बालिकाओं की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 59. 83 तथा प्रमाणिक विचलन 19.51 प्राप्त हुआ। बालक/बालिकाओं की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जांच के लिए 'टी' परीक्षण किया गया, जिसका मान 0.48 प्राप्त हुआ। 159 df तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर t का सारणीगत मान 1.96 है। गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीगत मान से कम है। अतः परिकल्पना – 01 स्वीकृत की जाती है। परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति पर क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

सारिणी क्रमांक– 02

क्र.	क्षेत्र	न्यादर्श संख्या (N)	सार्थकता M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t	सार्थकता स्तर
1	शहरी	80	63.21	19.10	159	0.66	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं
2	ग्रामीण	80	62	18.43			

शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन शक्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 63.21 तथा प्रमाणिक विचलन 19.10 एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन शक्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 62 तथा प्रमाणिक विचलन 18.43 प्राप्त हुआ। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए 't' परीक्षण किया गया जिसका मान 0.66 प्राप्त हुआ। 't' का सारिणीगत मान 159 df पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 है। गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीगत मान से कम है। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत की जाती है अर्थात् विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।''

सारिणी क्रमांक– 03

क्र.	मूल्य	लिंग	न्यादर्श संख्या (N)	सार्थकता M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t	सार्थकता स्तर 0.05
1	धार्मिक मूल्य	बालक	80	12.99	3.07	159	0.77	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	62	18.43			
2	सामाजिक मूल्य	बालक	80	13.5	3.18	159	0.53	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	13.19	2.89			
3	प्रजातांत्रिक मूल्य	बालक	80	13.74	3.17	159	0.98	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	13.73	3.10			
4	सौंदर्यात्मक मूल्य	बालक	80	11.19	2.45	159	0.5	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	11.44	3.32			
5	आर्थिक मूल्य	बालक	80	9.99	3.32	159	0.28	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	10.56	3.13			
6	ज्ञान मूल्य	बालक	80	13.54	3.05	159	0.12	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	12.71	2.93			
7	आनंद मूल्य	बालक	80	11.16	3.20	159	0.75	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	11.31	3.00			
8	शक्ति मूल्य	बालक	80	9.84	2.83	159	0.06	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	10.68	2.62			
9	परिवार प्रतिष्ठा मूल्य	बालक	80	12.89	3.04	159	0.46	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	12.54	3.00			

10	स्वास्थ्य मूल्य	बालक	80	11.18	2.75	159	0.26	सार्थक अन्तर नहीं है।
		बालिका	80	10.73	2.54			

परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।''

सारिणी क्रमांक– 04

क्र.	मूल्य	लिंग	न्यादर्श संख्या (N)	सार्थकता M	प्रमाणिक विचलन SD	df	t	सार्थकता स्तर 0.05
1	धार्मिक मूल्य	शहरी	80	13.34	2.95	158	0.28	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	12.78	3.21			
2	सामाजिक मूल्य	शहरी	80	14.04	3.04	158	0.03	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	12.7	2.89			
3	प्रजातांत्रिक मूल्य	शहरी	80	13.89	3.09	158	0.55	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	13.56	3.18			
4	सौंदर्यात्मक मूल्य	शहरी	80	11.29	2.67	158	0.90	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	11.34	2.51			
5	आर्थिक मूल्य	शहरी	80	9.86	3.31	158	0.11	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	10.69	3.12			
6	ज्ञान मूल्य	शहरी	80	13.09	3.16	158	0.87	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	13.16	2.87			
7	आनंद मूल्य	शहरी	80	10.74	2.89	158	0.03	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	11.74	3.22			
8	शक्ति मूल्य	शहरी	80	10.1	2.88	158	0.49	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	10.41	2.61			
9	परिवार प्रतिष्ठा मूल्य	शहरी	80	12.46	3.82	158	0.32	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	12.96	3.20			
10	स्वास्थ्य मूल्य	शहरी	80	11.2	2.83	158	0.24	सार्थक अन्तर नहीं है।
		ग्रामीण	80	10.7	2.43			

आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः परिकल्पना – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति तथा उनके व्यक्तिगत मूल्यों के विभिन्न घटकों के बीच सार्थक सह संबंध नहीं होता है।''

सारिणी क्रमांक– 05

क्र.	व्यक्तिगत मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	न्यादर्श संख्या (N)	सार्थकता df	सहसंबंध r	धनात्मक / ऋणात्मक
1	धार्मिक मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	–0.057	ऋणात्मक
2	सामाजिक मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	0.346	धनात्मक
3	प्रजातांत्रिक मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	0.271	धनात्मक
4	सौन्दर्यात्मक मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	–0.061	ऋणात्मक
5	आर्थिक मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	–0.330	ऋणात्मक
6	ज्ञान मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	0.251	धनात्मक
7	आनंद मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	–0.252	ऋणात्मक
8	शक्ति मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	–0.210	ऋणात्मक
9	परिवार प्रतिष्ठा मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	0.028	धनात्मक
10	स्वास्थ्य मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	160	158	0.008	धनात्मक

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के सामाजिक, प्रजातांत्रिक, ज्ञान, परिवार प्रतिष्ठा एवं स्वास्थ्य मूल्य का सृजनात्मक चिन्तन के साथ धनात्मक सह–संबंध प्राप्त हुआ है जबकि विद्यार्थियों के धार्मिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, आनंद एवं शक्ति मूल्य का सृजनात्मक चिन्तन के साथ ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. कक्षा 8 वीं स्तर के बालक / बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन शक्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन शक्ति पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।
3. छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. शहरी एवं ग्रामीण बालकों के व्यक्तिगत मूल्यों में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।
5.

1) विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति में ऋणात्मक सह संबंध होता है।
2) विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति में उच्च कोटि का धनात्मक सह–संबंध होता है।
3) विद्यार्थियों के प्रजातांत्रिक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्य उच्च कोटि का धनात्मक सह–संबंध होता है।
4) विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्य ऋणात्मक सह–संबंध होता है।
5) विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्य ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है।
6) विद्यार्थियों के ज्ञान मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्य धनात्मक सह–संबंध होता है।
7) विद्यार्थियों के आनंद मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के बीच ऋणात्मक सह–संबंध होता है।
8) विद्यार्थियों के शक्ति मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के बीच ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया।
9) विद्याथियों की परिवार प्रतिष्ठा मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के बीच धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
10) विद्यार्थियों के स्वास्थ्य मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति में सार्थक सह–संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शालाओं में पुस्तकीय अध्यापन के अतिरिक्त व्यक्तिगत मूल्यों के निर्माण तथा इनका परिमार्जन एवं सृजनात्मक विचारों एवं कार्यों से संबंधित अधिक से अधिक क्रियाकलापों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. विद्यालय में समस्त क्रियाकलापों के आयोजन में बालक एवं बालिकाओं को समान अवसर प्रदान किया जाना चाहिए।
3. पाठ्यक्रम में सृजनात्मकता एवं व्यक्तित्व विकास संबंधी विषय वस्तु को स्थान देना चाहिए।
4. बागवानी, फोटोग्राफी एवं चित्रकला का प्रशिक्षण तथा अन्य सृजनात्मक कार्यो पर बल देना चाहिए।

संदर्भ (References) –

1. **डोनगांवकर, निशा (2010)** : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी व्यवसायिक अभिरूचि के सन्दर्भ में अध्ययन (एम.एड. 2010 गुरुघासीदास विश्व विद्यालय, बिलासपुर) ।

2. **कौशर, एफ (1982) :** बुद्धि, सृजनात्मक एवं व्यक्तित्व का बच्चों की जिज्ञासा से संबंध का अध्ययन – IIIrd Survey, Vol.-II, N.C.E.R.T. Publications, New Delhi P.P. 402
3. **राजगोपाल, एस. (1988)** : सृजनात्मकता के अन्तर्गत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों पर कक्षागत वातावरण, उपलब्धि परीक्षण और मानसिक योग्यता का अध्ययन।

9. ''हाईस्कूल स्तर पर पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

केशव राम पटेल

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर

सारांश

माता–पिता तथा शिशु इन तीनों को मिलाकर बनने वाली परिवाररूपी प्राथमिक इकाई, शिशु के चरित्र निर्माण का प्रथम प्रशिक्षण क्षेत्र है। माता–पिता का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण आरंभ से ही बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर चिंतित रहते हैं जिसका प्रभाव उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। दूसरी ओर अशिक्षित माता–पिता भी बदलते परिवेश में अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। साथ ही शिक्षित व अशिक्षित पालक अपनी बच्चियों को भी शिक्षित कर रहे हैं, ताकि वे अपना भविष्य संवार सकें। प्रस्तुत अध्ययन उपरोक्त कथनों की समीक्षा करता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

बालक परिवार में जन्म लेता है। वहीं वह उठना–बैठना, दौड़ना, चलना, खाना–पीना सभी कुछ सीखता है। भाई–बहन से बात करना, माता–पिता, अतिथि आदि का आदर करना, ये सभी गुण वह परिवार से सीखता है। परिवार में उसे व्याख्यान नहीं दिये जाते, बल्कि वह सिद्धांतों का प्रायोगिक साक्षात्कार करता है। महामना पं. मदन मोहन मालवीय कहा करते थे कि ''मैंने परिवार से बचपन में जो कुछ सीखा, वहीं मेरी असली शिक्षा है।''

माता–पिता का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण (अभिवृत्ति) बालक की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। युवा बालक के विवेक और सदगुणों का स्वरूप माता–पिता की शिक्षा

के प्रति रूचि और विश्वास द्वारा प्रभावित होता है, उसे रचनात्मकता प्रदान करता है जिससे विद्यार्थी विद्यालयों के सामाजिक परिवेश में अपने आप को समायोजित करने में सक्षम महसूस करता है तथा इसका प्रभाव उसकी उपलब्धि पर दिखाई देता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. शिक्षित अभिभावकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. अशिक्षित अभिभावकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. शिक्षित अभिभावकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. अशिक्षित अभिभावकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का बालक/बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयीं –

01. शिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।
02. शिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।
03. अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सह संबंध पाया जायेगा।
04. अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।
05. शिक्षित एवं अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा।
06. शिक्षित एवं अशिक्षित पालकों के पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – यह शोध निम्नलिखित से परिसीमित है –

दुर्ग जिले के धमधा ब्लाक की चार शासकीय हाईस्कूलों की कक्षा नवमीं, दसवीं के छात्रों तथा उनके पालकों तक।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – इस अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध हेतु यादृच्छिक न्यादर्शन चयन विधि का प्रयोग कर निम्नानुसार विद्यार्थियों का चयन किया गया –

क्र.	विद्यालय	कक्षा	छात्र/छात्रायें	माता/पिता
1.	शास.उ.मा.वि., पेण्ड्रावन	9वीं	16–16	30
2.	शास.उ.मा.वि., बरहापुर	9वीं	16–16	30
3.	शास.उ.मा.वि., मेडेसरा	10वीं	16–16	30
4.	शास.उ.मा.वि., कन्हारपुरी	10वीं	16–16	30
	कुल योग 04 विद्यालय		64 छात्र 64 छात्रायें	120 पालक

- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मापनी – इस उपकरण में कुल 10 प्रश्न हैं जिन पर अपना मत तीन बिन्दुओं पर देना है।
  2. शिक्षकों के लिए अभिवृत्ति मापनी – जिसमें कुल 15 प्रश्न दिये गए हैं।
  3. विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली–स्वनिर्मित
  4. शैक्षिक उपलब्धि – शालेय परीक्षा प्राप्तांक।
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर – पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति
  2. आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"शिक्षित पालकों की अभिवृत्ति एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

क्र.	प्रदत्त	संख्या	मध्यमान	सहसंबंध	स्तर
1	शिक्षित पालकों की	40	27.65		

	अभिवृत्ति			0.96	उच्च धनात्मक सह संबंध
2	उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि	40	26.57		

सारिणी के अनुसार पालकों की अभिवृत्ति एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य + 0.96 सह संबंध पाया गया। चूंकि सहसंबंध अति उच्च धनात्मक सहसंबंध की श्रेणी में आता है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''शिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

क्र.	प्रदत्त	संख्या	मध्यमान	सहसंबंध	स्तर
1	शिक्षित पालकों की अभिवृत्ति	23	26.2	0.95	अति उच्च धनात्मक सह संबंध
2	बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि	40	26.57		

सारिणी के अनुसार शिक्षित पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं उनके पाल्यों (बालिकाओं) की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध 0.95 पाया गया। चूंकि यह सहसंबंध उच्च धनात्मक सहसंबंध की श्रेणी में आता है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सह संबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

क्र.	प्रदत्त	संख्या	मध्यमान	सहसंबंध	स्तर
1	अशिक्षित पालकों की अभिवृत्ति	23	29	0.8	अति उच्च धनात्मक सह संबंध
2	उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि	23	26		

उपरोक्त सारिणी के अनुसार अशिक्षित पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य 0.8 अति उच्च धनात्मक सह संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं उनकी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सह संबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक–04

क्र.	प्रदत्त	संख्या	मध्यमान	सहसंबंध	
1	अशिक्षित पालकों की अभिवृत्ति	42	24.1	0.7	उच्च धनात्मक सह संबंध
2	उनकी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि	42	24.3		

अशिक्षित पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं उनकी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य 0.7 सह संबंध पाया गया जो उच्च धनात्मक सहसंबंध की श्रेणी में आता है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''शिक्षित पालकों एवं अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक–05

क्र.	प्रदत्त	कुल छात्र	मध्यमान	विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	df
1	शिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	63	34.95	6.96	0.94	11.69	126
2	अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	65	23.96	2.99			

गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान 11.69 है जो 0.05 विश्वास स्तर तथा 126 df पर सारिणी मान से अधिक है। शिक्षित पालकों एवं अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्य सार्थक अंतर स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। उपर्युक्त परिकल्पना क्रमांक–05 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''शिक्षित तथा अशिक्षित पालकों के पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 06

क्र.	शैक्षिक उपलब्धि	कुल छात्र	मध्यमान	विचलन	प्रमाणिक त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	df
1	शिक्षित पालकों के पाल्य	63	27.96	5.61			
2	अशिक्षित पालकों के पाल्य	65	25.20	4.82	0.80	2.76	126

गणना से प्राप्त क्रांतिक अनुपात मान 2.76 है जो 0.05 विश्वास स्तर तथा 126 df पर सारिणी मान से अधिक है। अतः शिक्षित एवं अशिक्षित पालकों के पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 06 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. शिक्षित/अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का असर उनके पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।
2. शिक्षित तथा अशिक्षित दोनों पालक अपनी बालिकाओं की शिक्षा के प्रति सजग हैं।
3. शिक्षित व अशिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर दिखाई देता है। शिक्षित पालकों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अधिक पायी गयी।
4. शिक्षित व अशिक्षित पालकों के पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है शिक्षित पालकों के पाल्यों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. पालकों को अपने बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी नियमित रूप से दी जाए।
2. पालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति को बढ़ाने एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए।
3. पालकों को शालेय गतिविधियों से जोड़ने हेतु प्रयास किए जाएँ।

संदर्भ (References) –

1. साहू , महेश कुमार (2004–05) : +2 स्तर पर विद्यार्थियों के पालकों की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति तथा समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. मेश्राम, अरूण कुमार (2010–11) : पालकों की अभिवृत्ति का पाल्यों की अध्ययन आदत पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

10 ''शिक्षा के समान अधिकार अधिनियम–2009 के संदर्भ में प्राथमिक शालाओं की वर्तमान स्थिति का अध्ययन''

गोरेलाल श्रीवास

उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

भारत विश्व का एक विशाल लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि देश के सभी नागरिक शिक्षित हों, क्योंकि शिक्षा राष्ट्रीय विकास के प्रत्येक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

भारतीय संविधान में भी स्पष्ट किया गया है कि संविधान के क्रियान्वित होने के 10 वर्षो के मध्य राज्य उन सभी बच्चों के लिए जो 14 वर्ष आयु प्राप्त नहीं कर लेते निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान करेगा।

अतः प्रस्तुत शोध में शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के संदर्भ में शालाओं की वर्तमान स्थिति की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि शालाओं में बालकों की तुलना में बालिकाओं की निरंतरता में कमी है और त्याग दर अधिक है। अतः पालकों में जागरूकता लाने की दिशा में कार्य किया जाना आवश्यक है।

प्रस्तावना (Introduction) –

यदि प्राथमिक शिक्षा की बुनियाद सही व ठोस हो तथा उचित मार्गदर्शन की प्राप्ति हो तो ऐसी स्थिति में शिक्षा बच्चे के लिए कभी समस्या नहीं बन सकती। बाल्यावस्था ऐसी अवस्था होती है जब बच्चे को सही मार्गदर्शन प्रदान किया जाये तो बालक सम्पूर्ण बातों को पूर्णरूपेण आत्मसात कर लेगा और यह कार्य प्राथमिक शिक्षा द्वारा ही संभव है।

प्राथमिक शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए संविधान की धारा 27 में स्पष्ट किया गया है कि '' प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बालक का अधिकार है और उसकी इस मांग को पूरा करना राष्ट्र का कर्तव्य है।''

इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा की महत्ता स्वमेव स्पष्ट हो जाती है। इसी आवश्यकता को महत्व प्रदान करते हुए 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को शामिल कर घोषणा की गई है कि ''संविधान के क्रियान्वयन होने के 10 वर्षो के मध्य राज्य उन सभी बच्चों के लिए जो 14 वर्ष की आयु प्राप्त नहीं कर लेते निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान करेगा।

निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार :–

1. 6 से 14 साल के हर बच्चे को अपने पड़ोस के स्कूल में निःशुल्क और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार होगा।
2. उपखण्ड (1) को ऐसे समझा जावे कि अपनी प्रारंभिक शिक्षा को पाने और पूरा करने में किसी बच्चे को किसी तरह का शुल्क या खर्चा करने की जरूरत नहीं है।
3. साथ ही ऐसे अशक्त बच्चे जिनकी परिभाषा पर्सन्स विथ डिसेबिलिटी एक्ट 1996 की धारा 2 में दी गई है उन्हें भी उक्त अधिनियम के पांचवे अध्याय के अनुसार निःशुल्क और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार होगा।
4. 6 वर्ष से ज्यादा उम्र के ऐसे बच्चे जिनका किसी स्कूल में दाखिला नहीं हो पाया है या दाखिल है पर प्रारंभिक शिक्षा को पूरा नहीं कर पाये हैं, उन्हें अपनी उम्र के मुताबिक उपयुक्त कक्षा में दाखिला दिया जाएगा। यदि उम्र के अनुसार कक्षा में दाखिल नहीं हो पाया है तो दूसरे बच्चों के बराबर आने के लिए विशेष प्रशिक्षण का अधिकार होगा। जैसा कि प्रस्तावित किया जायेगा। इस प्रकार के दाखिले में 14 वर्ष की उम्र हो चुकने के बाद भी निःशुल्क और अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा को पूरा करने पर उसका अधिकार बना रहेगा।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की दर्ज संख्या में निरंतरता का पता लगाना।
2. ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की प्रतिधारण दर में अन्तर ज्ञात करना।

3. छात्र–छात्राओं के प्रवेश दर में नवाचार एवं योजनाओं के प्रभाव का पता लगाना।
4. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।
5. विभिन्न नवाचार, योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में जन प्रतिनिधियों के सहयोग व भागीदारी का पता लगाना।

शोध प्रश्न (Research Questions) – प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित शोध प्रश्न हैं –

01 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की दर्ज संख्या में कितनी निरंतरता है?

02 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की प्रतिधारण दर में कितना अन्तर है?

03 छात्र–छात्राओं की प्रवेश दर पर नवाचार एवं योजनाओं का कितना प्रभाव पड़ता है?

04 छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक योजनाओं का कितना प्रभाव पड़ता है?

05 विभिन्न नवाचार योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में जन प्रतिनिधियों का सहयोग व भागीदारी कितनी सकारात्मक है।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध बिलासपुर शैक्षणिक जिले के अन्तर्गत बिल्हा विकासखंड की प्राथमिक शालाओं में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर क्षेत्र के बिल्हा विकासखंड की 02 ग्रामीण व 02 शहरी प्राथमिक शालाओं 40 छात्र व 40 छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है।
- **उपकरण (Tools) –** प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. प्रश्नावली (स्वनिर्मित) – प्रधान अध्यापकों तथा अध्यक्ष ग्राम शिक्षा समिति।
  2. अभिलेखों का अध्ययन – विकासखंड कार्यालय के अभिलेख।
  3. प्रत्यक्ष अवलोकन
- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

1. स्वतंत्र चर – बालक/बालिकाएँ, शैक्षिक योजनाएँ।
2. परतंत्र चर – प्राथमिक शालाओं में बच्चों की वर्तमान स्थिति दर्ज संख्या, प्रतिधारण दर, शैक्षिक उपलब्धि।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान एवं प्रतिशत की गणना की गयी।

शोध प्रश्न क्रमांक – 01

''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में छात्र–छात्राओं की दर्ज संख्या में कितनी निरंतरता है?''

शोध प्रश्न के आधार पर प्राथमिक शालाओं के दर्ज संख्या पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन किया गया।

प्राथमिक शालाओं के दर्ज संख्या की गणना हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया गया –

$$\text{प्रगति दर} = \frac{\text{अगली कक्षा में अगले सत्र जाने वाले छात्रों की संख्या}}{\text{किसी सत्र में कक्षा 1ली में कुल छात्रों की संख्या}} \times 100$$

उपरोक्त सूत्र के आधार पर विद्यालय से निम्नलिखित आंकड़े प्राप्त कर उनका विश्लेषण किया गया।

सारिणी क्रमांक – 01 (क)

शहरी क्षेत्र में विगत 5 वर्षो में कक्षा में प्रवेश पश्चात् शाला में बने रहे (अध्ययनरत) विद्यार्थी

क्र	बालक समूह							बालिका समूह				
	सत्र	कक्षा	अजा	अजजा	पिछड़ा	सामान्य	योग	अजा	अजजा	पिछड़ा	सामान्य	योग
1	2007	1ली	08	03	22	02	35	12	02	25	02	41
2	2008	2री	07	02	12	02	23	06	02	22	02	32
3	2009	3री	07	01	11	01	20	04	02	21	02	29
4	2010	4थी	05	01	07	01	14	02	02	10	01	15
5	2011	5वी	04	00	04	00	08	02	02	10	01	15
कुल योग –			**31**	**07**	**56**	**06**	**100**	**26**	**10**	**88**	**08**	132

विश्लेषण – उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र में वर्ष 2007 में कक्षा पहली में दर्ज बालकों की संख्या 35 तथा बालिकाओं की संख्या 41, कुल 76 थी। कक्षा

दूसरी में प्रवेश लेने वाले बालक 23 तथा बालिकाएँ 32 थी। इस प्रकार कुल संख्या 55 थी। अतः प्रगति दर 72.36 प्रतिशत प्राप्त हुयी।

निष्कर्ष – शहरी क्षेत्र के कक्षा पहली से कक्षा दूसरी में जाने वाली बालक–बालिकाओं का प्रतिशत 72.36 है।

सारिणी क्रमांक – 01 (ख)

ग्रामीण क्षेत्र में विगत 5 वर्षो में कक्षा में प्रवेश पश्चात् शाला में बने रहे (अध्ययनरत) विद्यार्थी

क्र	बालक समूह							बालिका समूह				
	सत्र	कक्षा	अजा	अजजा	पिछड़ा	सामान्य	योग	अजा	अजजा	पिछड़ा	सामान्य	योग
1	2007	1ली	21	03	32	03	59	21	06	26	05	58
2	2008	2री	15	01	23	02	41	17	03	20	02	42
3	2009	3री	14	01	21	02	38	16	03	19	02	40
4	2010	4थी	14	01	19	02	36	16	03	18	02	39
5	2011	5वी	14	01	19	02	36	16	02	17	02	37
कुल योग –			78	07	114	11	210	86	17	100	13	216

विश्लेषण – उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र में 2007 वर्ष में शाला में प्रवेश लेने वाले बालक/बालिका की दर्ज संख्या 59 एवं 58 कुल 117 थी तथा तथा कक्षा 2 री में उनकी संख्या क्रमशः 41 एवं 42 तथा कुल 83 विद्यार्थी थे। प्रगति दर 70.94% प्राप्त हुई।

निष्कर्ष – ग्रामीण क्षेत्र के कक्षा पहली से कक्षा दूसरी में जाने वाले बालक–बालिकाओं का प्रतिशत 70.94 है। अतः शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों निरंतरता में अंतर पाया गया।

शोध प्रश्न क्रमांक – 02

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की प्रतिधारण दर में कितना अन्तर होगा?''

सारणी क्रमांक – 02 (क)

सत्र–2009 में ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की दर्ज संख्या

क्र.	क्षेत्र	वर्ग	1ली	2री	3री	4थी	5वीं
1	ग्रामीण	बालक	40	38	41	52	37
		बालिका	48	30	28	42	43
2	शहरी	बालक	58	42	46	44	32
		बालिका	41	46	49	51	42

सारणी क्रमांक – 02 (ख)

सत्र–2011–12 में ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की दर्ज संख्या

क्र.	क्षेत्र	वर्ग	1ली	2री	3री	4थी	5वीं
1	ग्रामीण	बालक	48	59	45	58	40
		बालिका	51	42	36	36	49
2	शहरी	बालक	78	44	48	52	41
		बालिका	76	45	42	50	54

विश्लेषण – उपरोक्त तालिका 02 (क) के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में –

वर्ष 2011–12 में दर्ज कक्षा 5 में बालक तथा बालिकाओं की संख्या 89 तथा तीन वर्ष पूर्व कक्षा 1ली में दर्ज बालक तथा बालिकाओं की संख्या 88 है। इसी प्रकार प्रति धारण दर 101.13 प्रतिशत प्राप्त हुई।

विश्लेषण – उपरोक्त तालिका 02 (ख) के अनुसार शहरी क्षेत्र में –

वर्ष 2011–12 में दर्ज कक्षा 5 में बालक/बालिका की संख्या 95 तथा तीन वर्ष पूर्व कक्षा 1ली में दर्ज बालक/बालिका की संख्या 99 है। अतः प्रतिधारण दर 95.95 प्रतिशत प्राप्त हुई।

निष्कर्ष – शहरी क्षेत्र की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की प्रतिधारण दर अधिक है। प्रतिधारण दर ग्रामीण क्षेत्र में 101.13% एवं शहरी क्षेत्र में 95.95% है।

शोध प्रश्न क्रमांक – 03

''छात्र–छात्राओं की प्रवेश दर पर नवाचार एवं योजनाओं का कितना प्रभाव पड़ता है?''

विश्लेषण – प्रश्न क्रमांक – 03 के परीक्षण हेतु विगत वर्षो की शालावार दर्ज संख्याओं की जानकारी सूची प्राप्त की गई।

सारिणी क्रमांक – 03

ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक शालाओं की दर्ज संख्या

क्र.	क्षेत्र	सत्र 2009–10			सत्र 2010–11			सत्र 2011–12		
		बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग
1	ग्रामीण	208	191	399	234	212	446	250	214	464
2	शहरी	222	239	461	252	251	503	263	267	533

उपरोक्त तालिका के अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की प्राथमिक शालाओं की दर्ज संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि हुई है। प्रतिवर्ष बालक/बालिकाओं की दर्ज संख्या में वृद्धि का कारण नवाचार एवं शैक्षिक योजनाओं का प्रभाव हो सकता है।

शोध प्रश्न क्रमांक – 04

''छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नवाचारी शैक्षिक योजनाओं का कितना प्रभाव पड़ता है?''

सारिणी क्रमांक – 04

ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक शालाओं की उपलब्धि

क्र.	विवरण	दर्ज	उत्तीर्ण	प्रतिशत	अंतर
1.	2007	103	52	50.4	42.6
2.	2011	200	186	93	

उपरोक्त तालिका के आधार पर कहा जा सकता है कि नवाचार एवं शैक्षिक योजनाओं का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

शोध प्रश्न क्रमांक – 05

''विभिन्न नवाचार योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में जनप्रतिनिधियों का सहयोग व भागीदारी कितनी सकारात्मक है?''

सारिणी क्रमांक – 05 (क)

प्रधान पाठकों के अभिमतानुसार विभिन्न योजनाओं के संदर्भ में जन प्रतिनिधियों की भागीदारी

क्र.	नाम	प्राप्त मत भार (प्रतिशत में)	
		ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
1	संतोषजनक	70	40
2	सामान्य	20	50
3	असंतोषजनक	10	10

उपरोक्त तालिका के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम विकास समिति का योगदान संतोषजनक है किन्तु शहरी क्षेत्रों में यह सामान्य है।

सारिणी क्रमांक – 05 (ख)

अध्यक्ष ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों के अभिमतानुसार जनप्रतिनिधियों की भागीदारी

क्र.	नाम	प्राप्त मत भार (प्रतिशत में)	
		ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
1	संतोषजनक	70	30
2	सामान्य	30	50

3	असंतोषजनक	निरंक	20

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम विकास समिति का सहयोग व भागीदारी संतोषजनक है किन्तु शहरी क्षेत्रों में यह सामान्य है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में छात्र/छात्राओं की निरंतरता क्रमशः 70.94% तथा 72.36 है।
2. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रवेश दर में निरंतर वृद्धि हुई है। अतः कहा जा सकता है कि विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के क्रियान्वयन से ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बालक/बालिकाओं के प्रवेश दर में वृद्धि हुई है।
3. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की शालाधारण दर कम पायी गयी है अर्थात् बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में शाला त्याग अधिक होती है।
4. शैक्षिक योजनाओं का शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
5. विभिन्न नवाचारी योजनाओं के क्रियान्वयन में जन प्रतिनिधियों का सहयोग व भागीदारी सकारात्मक है।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शालाओं में प्रवेश दर और शाला धारण बढ़ाने हेतु पालकों को जागरूक करना आवश्यक है। पालकों को जागरूक करने के लिए समय–समय पर रैली का आयोजन करना, सांस्कृतिक कार्यक्रम उन्मुखीकरण आदि के द्वारा शिक्षा के महत्व से परिचित करना चाहिए।
2. शिक्षकों का अध्यापन रूचिकर होना चाहिए जिससे शालाओं में शाला धारण बढ़े।
3. अध्यापन को रूचिकर बनाने के लिए शिक्षकों को सहायक शिक्षण सामग्री का पर्याप्त उपयोग करना चाहिए।
4. बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु बालिकाओं को छात्रवृत्ति दी जानी चाहिए।
5. इन्हें विद्यालय से जोड़ने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए।
6. विद्यालयों में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि का समय पर मूल्यांकन होना चाहिए जिससे शिक्षकों की सक्रियता भी प्रदर्शित हो।

संदर्भ (References) –

1. देवी, के.जी. (1983) : प्राब्लम आफ ड्राप आऊट इन प्रायमरी स्कूल आफ मनीपुर विथ स्पेशल रिफ्रेन्स टू इम्फाल टाऊन
2. दास, जे.आर. एवं गर्ग, पी.पी. (1985) ने इम्पेक्ट आफ प्री प्रायमरी एजुकेशन ड्राप आऊट, स्टेश्निशन एण्ड एकेमिक परफारमेन्स।
3. नायक, कु. छाया (1987) : ''शैक्षणिक जिला बिलासपुर में औपचारिकेत्तर शिक्षा की प्रगति एवं कार्य प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' (एम.एड.) लघुशोध प्रबंध शा.शि. म.वि., बिलासपुर।
4. ग्रोवर, जे. (1988) : ''ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा की भारतीय पृष्ठ भूमि में दर्ज संख्या तथा प्रतिधारण दर पर एक क्रमिक अध्ययन'' (Reciw Vol. 23 (4) 129, 134) ।

5. यादव, गीता (1993) : ''शिक्षा के लोक व्यापीकरण के परिपेक्ष्य में बिलासपुर शैक्षिक जिले में प्राथमिक शिक्षा की प्रगति का समीक्षात्मक अध्ययन'' (एम.एड.) लघुशोध प्रबंध शा.शि.म.वि. बिलासपुर।
6. आडवानी, अमृतलाल (1995) : ''जिला प्राथमिक शिक्षा के परिपेक्ष में प्राथमिक स्तर पर शाला प्रवेश, शालाधारण और शाला त्याग का समीक्षात्मक अध्ययन'' (एम.एड.) लघुशोध प्रबंध शा.शि.म.वि. बिलासपुर।
7. बांगिया, जयदेव : निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 एवं केन्द्रीय नियम 2010''

11. ''हाई स्कूल के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''

सुरेश सिंह चौहान

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंग हैं – शिक्षक, शिक्षार्थी तथा सामाजिक परिवेश। शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि का प्रभाव उनके कार्य की गुणवत्ता पर दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन में शिक्षक की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। हाई स्कूल स्तर के 100 पुरूष एवं 100 महिला शिक्षकों के न्यादर्श पर सर्वेक्षण विधि से कार्य किया गया। व्यावसायिक संतुष्टि मापनी एवं शिक्षक जनतांत्रिक अभिवृत्ति मापनी को प्रशासित किया गया। सांख्यिकी गणना द्वारा पुरूष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि में अंतर पाया गया। महिला शिक्षकों में पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा व्यावसायिक संतुष्टि अधिक पायी गयी। दोनों समूहों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में अंतर नहीं पाया गया। पुरूष व महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि व जनतांत्रिक अभिवृत्ति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

भारत के भाग्य का निर्माण करने वाले शिक्षकों का व्यवसाय से संतुष्ट होना अत्यंत आवश्यक है। व्यावसायिक संतुष्टि का तात्पर्य व्यक्ति की शारीरिक व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होना है।

यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा कि जब व्यावसायिक संतुष्टिपूर्ण शिक्षक उपलब्ध होंगे तभी वे मनोवैज्ञानिक ढंग से बालकों की रूचि, क्षमता और उनकी मनोदशाओं को समझकर शिक्षण कार्य करेंगे और जनतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष एवं समाजवादी राष्ट्र के उद्देश्यों को पूरा करने में अहम् भूमिका निभायेंगे।

अतः अध्यापक की व्यवसायिक संतुष्टि का उनकी जनतांत्रिक अभिवृत्ति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना आवश्यक समझा गया।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना।
2. हाई स्कूलों में अध्यापनरत महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर का अध्ययन करना।
3. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. हाई स्कूलों में अध्यापनरत महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. हाई स्कूलों में अध्यापनरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि व जनतांत्रिक अभिवृत्ति की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित निर्मित की गयी –

01 हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

02 हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

03 शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सह–संबंध नहीं पाया जायेगा।

04 उच्च एवं निम्न व्यावसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध रायगढ़ जिले के सारंगढ़ विकासखंड के हाई स्कूलों में अध्यापनरत शिक्षकों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध हेतु सारंगढ़ विकासखंड की उच्च माध्यमिक शालाओं में अध्यापनरत 100 पुरूष एवं 100 महिला शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया।
- **उपकरण (Tools)** – समस्या के अध्ययन तथा प्रदत्तों के संकलन करने के लिए निम्नांकित प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. शिक्षकीय व्यावसायिक संतुष्टि मापनी (मानकीकृत) – डॉ. मीरा दीक्षित
  2. शिक्षक जनतांत्रिक अभिवृत्ति मापनी – डॉ. वाय. व्ही. श्रीवास्तव एवं प्रो. बी.डी. करमाकर
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर – महिला शिक्षक, पुरूष शिक्षक
  2. आश्रित चर – व्यावसायिक संतुष्टि, जनतांत्रिक अभिवृत्ति

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 01

उच्च माध्यमिक विद्यालय के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्राप्तांकों का t मान

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t मान	सार्थकता स्तर
1	पुरूष	100	130.75	3.42	198	19.05	P>0.01 सार्थक अन्तर है
2	महिला	100	141.41	4.68			

माध्य के आधार पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि हेतु t का मान 19.05 प्राप्त हुआ जो 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर क्रमशः 1.97 व 2.63 दोनों मानों से अधिक है। पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना – 01 अस्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

हाई स्कूल के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का t मान

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t मान	सार्थकता स्तर
1	पुरूष	100	90.92	4.12	198	1.76	P<0.05 सार्थक अन्तर नहीं है।
2	महिला	100	91.90	3.72			

माध्य के आधार पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के लिए t का मान 1.76 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर क्रमशः 1.97 व 2.63 दोनों मानों से कम है। अर्थात् हाई स्कूल में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना – 02 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सह–संबंध नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का सांख्यिकी विश्लेषण

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	सह–संबंध मान
1	व्यावसायिक संतुष्टि	200	135.88	6.89	0.07
2	जनतांत्रिक अभिवृत्ति	200	91.41	3.95	

उपरोक्त तालिका से प्राप्त सहसंबंध गुणांक का मान 0.07 है। इससे ज्ञात होता है कि शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में नगण्य सह–संबंध पाया गया। अतः परिकल्पना – 03 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''उच्च एवं निम्न व्यावसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

उच्च एवं निम्न संतुष्टि वाले शिक्षकों के जनतांत्रिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का t मान

क्र.	विवरण	संख्या	माध्य	प्रमाणिक विचलन	स्वतंत्रता की कोटि	t मान	सार्थकता स्तर
1	उच्च व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति	100	93.90	3.74	198	5.41	P<0.01 सार्थक अन्तर है।
2	निम्न व्यावसायिक संतुष्टि शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति	100	90.92	4.12			

माध्य के आधार पर उच्च एवं निम्न व्यवसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक पाया गया जबकि परीक्षण से t का मान 5.41 प्राप्त हुआ जो सार्थकता स्तर 0.05 व 0.01 पर क्रमशः 1.97 व 2.63 दोनों के मानों से कम है। उच्च एवं निम्न व्यवसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः परिकल्पना – 04 अस्वीकृत हुई।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. हाई स्कूलों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाया गया। महिलाओं में व्यावसायिक संतुष्टि पुरूषों से अधिक पायी गयी।
2. हाई स्कूलों के अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों की जनतांत्रिक प्रवृत्ति समान पायी गयी।
3. शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सह–संबंध नहीं पाया गया।
4. उच्च एवं निम्न व्यावसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों की जनतांत्रिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षकों में कार्य संतुष्टि लाने हेतु विभाग द्वारा इनकी समस्याओं का युक्तियुक्त ढंग से निवारण किया जाना चाहिए।
2. विद्यालयों में रिक्त पदों की पूर्ति यथा संभव शीघ्र किया जाना चाहिए, इससे शिक्षकों तथा शिक्षा कर्मियों का कार्यभार संतुलित होगा जिसका विद्यार्थियों तथा समाज पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।
3. शिक्षा कर्मियों व विभागीय शिक्षकों हेतु समय–समय पर गोष्ठियाँ, कार्यशालाओं एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया जाना चाहिए। साथ ही उन्हें उत्तम कार्य हेतु प्रशंसा, पुरस्कार द्वारा भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन कार्यक्रमों से शैक्षिक अभिवृत्ति के साथ–साथ अध्यापन कार्य संतुष्टि में भी वृद्धि होगी।

संदर्भ (References) –

1. अग्रवाल, अनित : भारत ग्रामीण समाज, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर दिल्ली।
2. भार्गव, डॉ. महेश (1997) : ''आधुनिक मनोविज्ञान प्रशिक्षण एवं मापन'' प्रिंटर्स पैलेस, कमलानगर आगरा।
3. कपिल, डॉ. एच. के. (1997) : अनुसंधान विधियाँ, हरभार्गव पब्लिकेशन आगरा।
4. हेनरी ई. गैरेट : शिक्षा व मनोविज्ञान में सांख्यिकीय, कल्याणी पब्लिकेशन लुधियाना।
5. Nayak, K.D. (1982) : A study of adjustment and job satisfication of married and unmarried lady teachers.
6. Shah, K.(1982) : Socio economic book ground of primary teachers and job satisfaction.

12. ''किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता पर उनके समाजार्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन''

श्रीमती बसंती ठाकुर

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

विद्यालय में जाने वाले बच्चे के लिए समाज की स्वीकृति अत्यंत महत्व रखती है जो बच्चा समाज द्वारा स्वीकृत कर लिया जाता है, वह विद्यालय में आसानी से समायोजित हो जाता है। साधारणतया वे विद्यार्थी जिनका सामाजिक–आर्थिक स्तर उच्च होता है, वे विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों के बीच आकर्षण का केन्द्र बने रहते हैं। दूसरी ओर निम्न सामाजिक स्तर के विद्यार्थी विद्यालय में अपने आपको समायोजित नहीं कर पाते। सामाजिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी सीधा प्रभाव डालता है। यह विद्यार्थियों में पृथकता एवं असमानता की भावना उत्पन्न करता है। प्रस्तुत अध्ययन के अनुसार निम्न सामाजिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन क्षमता उच्च सामाजिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा कम पाई गयी।

प्रस्तावना (Introduction) –

वर्तमान परिदृश्य में यह देखा गया है कि विभिन्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों का विद्यालयीन परिवेश में समायोजन अलग–अलग होता है। जिन किशोरों का समाजार्थिक स्तर उच्च होता है वे शाला में स्वयं को आसानी से समायोजित कर लेते हैं तथा मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोर भी कुछ सीमा तक सामान्यतः समायोजित हो जाते हैं किन्तु निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोर विद्यालय में समायोजित नहीं हो पाते जिसका प्रभाव

उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। क्योंकि विद्यार्थी जब तक पूर्णतः स्वयं को समायोजित नहीं करेंगे तब तक वे शिक्षा में अपना ध्यान नहीं लगा पाएंगे। इसका दूसरा कारण यह भी है कि उच्च समाजार्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समक्ष सभी प्रकार की भौतिक, आर्थिक एवं अन्य सुख–सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। मध्यम समाजार्थिक स्तर के विद्यार्थी प्राप्त शिक्षण सुविधाओं में ही कठिन परिश्रम द्वारा अपनी शैक्षिक उपलब्धि उच्च बनाते हैं लेकिन निम्न समाजार्थिक स्तर के विद्यार्थियों के पास धनाभाव एक प्रमुख कारक होता है जिसके कारण उन्हें उपयुक्त शैक्षणिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि समाजार्थिक स्तर के संदर्भ में ज्ञात करना।
2. किशोरों की समायोजन क्षमता समाजार्थिक स्तर के संदर्भ में ज्ञात करना।
3. किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी समायोजन क्षमता के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विभिन्न समाजार्थिक स्तर वाले किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित निर्मित की गयीं –

01 – विभिन्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

1.1 उच्च और मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

1.2 मध्यम और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

1.3 उच्च और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

02 – विभिन्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

2.1 उच्च और मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

2.2 मध्यम और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

2.3 उच्च और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

03 – किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

3.1 उच्च समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

3.2 मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

3.3 निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध का परिसीमन धमतरी जिले की उच्च माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों तक है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample) –** प्रस्तुत शोध हेतु धमतरी नगर की 4 उच्चतर माध्यमिक शालाओं के कक्षा 9वीं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों (100 बालक, 100 बालिकाओं) का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया।
- **उपकरण (Tools) –** प्रयुक्त उपकरण निम्नानुसार हैं –
  1. मानकीकृत या प्रमाणिक उपकरण –
     1. समाजार्थिक स्तर मापनी – सुनील कुमार उपाध्याय एवं अल्का सक्सेना।
     2. समायोजन क्षमता मापनी – श्री ए.के. सिंह एवं ए. सेन गुप्ता ।
  2. स्वनिर्मित उपकरण – शैक्षिक उपलब्धि मापनी।
- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर – समाजार्थिक स्तर
  2. आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन स्तर

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

" विभिन्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

उप परिकल्पना क्रमांक 1.1 – "उच्च और मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 1.1

उच्च व मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का सारणीयन

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी. एफ.	सी.आर. मान	परिणाम

1	उच्च	55	31.31	4.44	11.35	123	11.35	0.05 विश्वास स्तर पर
2	मध्यम	70	22	4.75				

उच्च व मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि के कुल प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 31.31 एवं 22 है, प्रमाणिक विचलन क्रमशः 4.44 एवं 4.75 है, दोनों समूहों के मध्यमान में अंतर की मानक त्रुटि .82 प्राप्त हुई सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। क्रांतिक अनुपात का मान 11.35 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक सारिणी मान से अधिक है। इसलिए सार्थक अंतर पाया गया। अतः उप परिकल्पना क्रमांक – 1.1 की पुष्टि हुई।

उप परिकल्पना क्रमांक 1.2 – ''मध्यम और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 1.2

मध्यम व निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का सारणीयन :–

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी. एफ.	सी.आर. मान	परिणाम
1	मध्यम	70	22	4.75	1.8	143	1.88	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
1	निम्न	75	20.5	4.9				

गणना के अनुसार क्रांतिक अनुपात का मान 1.88 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से कम है। अतः उप परिकल्पना क्रमांक –1.2 की पुष्टि नहीं हुई।

उप परिकल्पना क्रमांक 1.3 – ''उच्च और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 1.3

उच्च व निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि का सारणीयन

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी. एफ.	सी.आर. मान	परिणाम
1	उच्च	55	31.31	4.44	13.18	128	13.18	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	निम्न	75	20.5	4.9				

गणना से क्रांतिक अनुपात का मान 13.18 प्राप्त हुआ जो 5**%** विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः उप परिकल्पना क्रमांक 1.3 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक 02

''विभिन्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

उप परिकल्पना क्रमांक 2.1 – उच्च और मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक – 2.1

उच्च व मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता का सारणीयन

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी.एफ.	सी.आर. मान	परिणाम
1	उच्च	55	125.55	16.5	7.29	123	7.29	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया।
2	मध्यम	70	105	14.5				

आंकड़ों के विश्लेषण से क्रांतिक अनुपात का मान 7.29 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः उपपरिकल्पना क्रमांक–2.1 की पुष्टि हुई।

उप परिकल्पना क्रमांक 2.2 – मध्यम और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक – 2.2

मध्यम व निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता का सारणीयन :–

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी. एफ.	सी.आर. मान	परिणाम
1	मध्यम	70	105	14.5	6.12	143	6.12	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	निम्न	75	82.73	18.6				

आंकड़ों के विश्लेषण से क्रांतिक अनुपात का मान 6.12 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः उप परिकल्पना क्रमांक – 2.2 की पुष्टि हुई।

उप परिकल्पना क्र. 2.3 – उच्च और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

सारिणी क्रमांक 2.3

क्र.	स्तर	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	डी. एफ.	सी.आर. मान	परिणाम
1	उच्च	55	125.55	16.5	13.68	128	13.68	0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
2	निम्न	75	82.73	18.6				

क्रांतिक अनुपात की गणना के आधार पर 13.68 प्राप्त हुआ जो 5% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान से अधिक है। अतः उप परिकल्पना क्रमांक–2.3 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।''

उप परिकल्पना क्रमांक 3.1 – ''उच्च समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।''

उक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए उच्च समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन क्षमता के कुल प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध की गणना की गई जिसका मान .16 पाया गया जो धनात्मक है। अतः उप परिकल्पना 3.1 की पुष्टि हुई।

उप परिकल्पना क्रमांक 3.2 – ''मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।''

उक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि व समयोजन क्षमता के कुल प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध की गणना की गई जिसका मान .21 पाया गया जो धनात्मक है। अतः उप परिकल्पना क्र. 3.2 की पुष्टि हुई।

उप परिकल्पना क्रमांक 3.3 – ''निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।''

उक्त परिकल्पना की पुष्टि के लिए निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के कुल प्राप्तांकों के मध्य सहसंबंध की गणना की गई जिसका मान .17 पाया गया जो धनात्मक है। अतः उप परिकल्पना क्र 3.3 की पुष्टि हुई।

उच्च, मध्यम और निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सह–संबंध पाया गया अर्थात् समायोजन अधिक होगा तो शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होगी।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे निम्नलिखित हैं –

1. मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा उच्च समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गई।
2. मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की अपेक्षा अधिक पायी गई।
3. जिन किशोरों का समाजार्थिक स्तर उच्च होता है उनकी समायोजन क्षमता भी उच्च होती है।
4. मध्यम समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की समायोजन क्षमता से अधिक होती है।
5. उच्च, मध्यम, निम्न समाजार्थिक स्तर के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन क्षमता के मध्य धनात्मक सहसंबंध है अर्थात् जिन किशोरों की समायोजन क्षमता उच्च होती है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अधिक होती है।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत है –

1. निम्न समाजार्थिक स्तर के प्रतिभाशाली बालकों को विशेष आर्थिक व शैक्षिक सुविधायें जैसे – पुस्तकें, कापियाँ व अन्य लेखन सामग्री शैक्षिक मार्गदर्शन एवं आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
2. शिक्षक अभिभावक संघ को मजबूत बनाया जाए ताकि वे विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान कर सकें।
3. प्रत्येक बालक को उनकी अभिक्षमता के अनुरूप शिक्षण प्रदान किया जाये ताकि वह अपनी प्रतिभा का समुचित विकास कर सके।

4. विद्यालय में विभिन्न पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए ताकि विद्यार्थी अपनी रचनात्मक व क्रियात्मक शक्तियों को अभिव्यक्त कर सकें।

संदर्भ (References) –

1. भटनागर, भटनागर, भटनागर : अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया।
2. सिंग, अरूण कुमार : शिक्षा मनोविज्ञान।

---

13. "भूगोल विषय के शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन"

हेमन्त कुमार डडसेना

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षा, शिक्षक एवं बालक के बीच की अनंत क्रिया है। प्रारंभ में शिक्षा, शिक्षक केन्द्रित थी किन्तु वर्तमान में शिक्षण पद्धति में परिवर्तन आया है। विषय वस्तु को रोचक व प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग किया जाने लगा है। प्रस्तुत अध्ययन में भूगोल विषय के शिक्षण में शिक्षण अधिगम सामग्री की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। परंपरागत शिक्षण विधि के द्वारा नियंत्रित समूह का अध्यापन किया गया। शिक्षण अधिगम सामग्री से क्रियात्मक समूह को भूगोल विषय पढ़ाया गया जिसके कारण उनकी उपलब्धि अधिक पायी गयी। शोध परिणाम के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिवृत्ति में धनात्मक सह संबंध पाया गया।

प्रस्तावना (Introduction) –

किसी भी राष्ट्र की प्रगति, समृद्धि संस्कृति का मूलाधार शिक्षा ही होता है। शिक्षा को राष्ट्रोत्थान का मूलतत्व माना गया है क्योंकि यह देश में किये जाने वाले कार्यो की रीढ़ होती है। अतएव शिक्षण में दृश्य, श्रव्य व दृश्य–श्रव्य सामग्री द्वारा विद्यार्थियों की रूचियों व अभिवृत्तियों को विकसित किया जा सकता है। कक्षा अध्यापन के समय कुछ विद्यार्थी भूगोल विषय की संकल्पनाओं को रट लेते हैं पर उनकी समझ नहीं रखते हैं।

इसलिए परीक्षा में संतोषजनक प्रदर्शन नहीं कर पाते। यहाँ पर यह विचार किया जाना भी आवश्यक है कि अपेक्षित प्रदर्शन नहीं किये जाने के कारणों को चिन्हांकित किया जा सकता है। कक्षा में बालकों का शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास एक समान हो इसके लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का उपयोग भूगोल विषय की समझ विकसित करने तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में सहायक होगा।

भूगोल विषय में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग प्रभावशाली शिक्षण को प्रेरित करता है तथा अध्ययन को स्पष्ट, तर्कसंगत एवं क्रमबद्ध रूप से समझाने की क्षमता विकसित करता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल विषय का अध्यापन कर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि ज्ञात करना।
4. शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि ज्ञात करना।
5. परम्परागत शिक्षण विधि एवं शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा भूगोल अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का पता लगाना।
6. परम्परागत शिक्षण विधि से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और भूगोल विषय में अभिरूचि के मध्य सह–संबंध ज्ञात करना।
7. शिक्षण अधिगम सामग्री से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और भूगोल विषय में अभिरूचि की प्रगति के मध्य सह–संबंध ज्ञात करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01 परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों (नियंत्रित समूह) एवं प्रायोगिक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ाये गये विद्यार्थियों (प्रयोगात्मक समूह) की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।

02 परम्परागत विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों एवं प्रायोगिक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिरूचि में अन्तर पाया जावेगा।

03 शिक्षण अधिगम सामग्री द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह–संबंध पाया जावेगा।

04 परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह–संबंध पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध व्याख्यान विधि (परम्परागत विधि) तथा बाल केन्द्रित विधि (प्रयोगात्मक विधि) तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** इस अध्ययन में प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत अध्ययन में महासमुंद जिले की दो शासकीय शालाओं के 60 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से कर दो समान समूहों का निर्माण किया गया।

क्रमांक	समूह	छात्र संख्या
1.	परम्परागत समूह	30
2.	क्रियात्मक समूह	30

- **उपकरण (Tools)** – अध्ययन के लिए स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया गया –
  1. अभिरूचि परीक्षण 2. उपलब्धि परीक्षण
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर – (1) परम्परागत शिक्षण विधि (2) शिक्षण अधिगम सामग्री शिक्षण विधि।
  2. परतन्त्र चर – (1) अभिरूचि (शिक्षा के प्रति) (2) शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ाये गये विद्यार्थियों एवं प्रायोगिक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया जावेगा।

सारिणी क्रमांक – 01

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
परम्परागत समूह	60	36.58	2.96	6.6	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर
क्रियात्मक समूह	60	41.2	4.59		

परंपरागत एवं क्रियात्मक समूह के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 36.58 व 41.2, प्रमाणिक विचलन 2.96 व 4.59 तथा t मान 6.6 पाया गया। यह मान 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है अर्थात् परम्परागत समूह एवं क्रियात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों (परम्परागत समूह)एवं शिक्षण अधिगम सामग्री विधि द्वारा भूगोल पढ़ने वाले विद्यार्थियों (क्रियात्मक समूह) की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

समूह	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
परम्परागत समूह	60	38.41	16.74	4.85	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर
क्रियात्मक समूह	60	34.33	26.04		

मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t के मान की गणना की गयी। t तालिका के अनुसार एक प्रतिशत विश्वास स्तर पर t का मान 2.63 होना चाहिए। प्राप्त मान इससे अधिक है। अतः मध्यमानों में सार्थक अंतर है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि क्रियात्मक शिक्षण विधि से भूगोल अध्ययन करने वाले समूह और परम्परागत शिक्षण विधि से भूगोल अध्ययन करने वाले समूह की शैक्षिक अभिरूचि में अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह–सम्बंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

समूह	छात्र संख्या	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
परम्परागत समूह	60	0.04	नगण्य स्तर का धनात्मक सहसंबंध

गणना द्वारा प्राप्त सह संबंध गुणांक का मान 0.04 है। अतः कहा जा सकता है कि परम्परागत समूह के विद्यार्थियों में भूगोल विषय में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिरूचि के मध्य में नगण्य धनात्मक सह–संबंध है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''क्रियात्मक अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में धनात्मक सह–सबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

समूह	छात्र संख्या	सहसंबंध गुणांक	परिणाम
क्रियात्मक समूह	60	0.39	धनात्मक सहसंबंध

गणना द्वारा प्राप्त मान के अनुसार क्रियात्मक शिक्षण विधि द्वारा भूगोल अध्यापन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक अभिरूचि में निम्न धनात्मक सबंध पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत की गयी।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. परम्परागत समूह एवं क्रियात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया क्रियात्मक समूह की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।
2. परम्परागत शिक्षण विधि (परम्परागत समूह) एवं शिक्षण अधिगम सामग्री विधि (क्रियात्मक समूह) के द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में अन्तर पाया गया।
3. परम्परागत समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में नगण्य धनात्मक सह संबंध पाया गया।
4. क्रियात्मक समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में निम्न धनात्मक सह संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. भूगोल शिक्षण के लिए उचित शैक्षिक सामग्रियाँ विद्यालय में उपलब्ध होनी चाहिए जिससे शिक्षक, शिक्षण कार्य में इनका उपयोग करते हुए प्रभावी शिक्षण कर सकें।
2. नए उपकरणों के सृजन की ओर शिक्षकों को छात्रों के साथ प्रयास करने चाहिए।
3. शिक्षण हेतु शिक्षकों को परम्परागत शिक्षण विधियों की अपेक्षा क्रियात्मक/प्रायोगिक विधि का प्रयोग करना चाहिए।
4. पाठ्यक्रम में परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे उन्हें नई विधियों की जानकारी प्राप्त हो सके।
5. भूगोल विषय के शिक्षकों को कक्षा शिक्षण में इस प्रकार का अध्यापन करना चाहिए कि सभी विद्यार्थी रूचि पूर्वक भाग ले सकें।

संदर्भ (References) –

1. सिंह, एन.एच. : भूगोल शिक्षण, राजा बलवंत सिंह कालेज, आगरा
2. कपिल, डॉ. एच. के. : अनुसंधान विधियाँ हरप्रसाद भार्गव, आगरा
3. कपिल, डॉ. एच. के. : सांख्यिकीय के मूल तत्व, हरप्रसाद भार्गव, आगरा

14. ''नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन"

श्री दरशजी दर्शन

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

समाज की शिक्षा व्यवस्था में विद्यालयीन शिक्षा का सशक्त औपचारिक साधन के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यालय एक विशिष्ट स्थान है जहाँ बच्चे को वांछित विकास करने के लिए जीवन से जुड़ी क्रियाएँ एवं अवसर प्रदान किये जाते हैं। प्रस्तुत शोध में नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों पर आकांक्षा स्तर मापनी एवं व्यावसायिक अभिरूचि मापनी का प्रशासन कर सांख्यिकीय गणना द्वारा परिणाम प्राप्त किए गए। प्राप्त परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि, सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पायी गयी। आकांक्षा स्तर उच्च होगा तो निश्चित रूप से व्यावसायिक अभिरूचि भी उच्च होगी। इस तरह मनुष्य के जीवन में आकांक्षा स्तर का उच्च होना अतिआवश्यक है।

प्रस्तावना (Introduction) –

आकांक्षा स्तर का आधार वास्तव में अमूर्त चिन्तन से संबंधित है। विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्यम से उनकी व्यावसायिक अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभावों को जाना जा सकता है क्योंकि व्यक्ति के आकांक्षा स्तर का मापन करने से हमें उस व्यक्ति की अमूर्त बुद्धि के बारे में पता चलता है। प्रायः यह माना जाता है कि जिस व्यक्ति का आकांक्षा स्तर जितना ऊँचा होगा, उसकी अमूर्त बुद्धि उतनी ही तीक्ष्ण होगी और वह अपनी अभिरूचि के अनुसार विभिन्न प्रकार के कार्य करने में सक्षम होगा। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त चलती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसमें वृद्धि होती है। इस प्रकार शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

अतः शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि वे विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को बनाये रखें एवं पोषित करने के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित करें। उनकी जिज्ञासाओं को शांत एवं उत्प्रेरित करने के लिए उपयुक्त व्यावसायिक अभिप्रेरणा प्रस्तुत करें जिससे विद्यार्थी अपने आकांक्षा के अनुरूप व्यावसायिक क्षमता अर्जित कर सकें।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि का अध्ययन करना।
3. नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि के मध्य सह संबंध का अध्ययन करना।
4. सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि के मध्य सह संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी हैं –

01 नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

02 नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

03 नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।

04 सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध निम्न प्रकार से परिसीमित है –

1. नवोदय विद्यालय सरायपाली (महासमुन्द) के माध्यमिक स्तर (कक्षा दसवीं) के विद्यार्थियों तक।
2. सामान्य विद्यालय महासमुन्द जिला के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक स्तर (कक्षा दसवीं) के विद्यार्थियों तक।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method) –** इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample) –** प्रस्तुत शोध हेतु असभाव्यता न्यादर्श प्रति चयन विधि का प्रयोग कर न्यादर्श चयन किया गया। महासमुंद जिले के 1 नवोदय विद्यालय के 50 विद्यार्थी (30 छात्र एवं 20 छात्राएँ) तथा सामान्य विद्यालयों से 50 विद्यार्थियों (30 छात्र एवं 20 छात्राएँ) का चयन किया गया।
- **उपकरण (Tools) –** अध्ययन के लिए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. आकांक्षा स्तर मापनी – वी.पी. शर्मा तथा अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित।
  2. व्यावसायिक अभिरूचि मापनी – डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित।
- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में निम्नांकित चर हैं –
  (1) स्वतंत्र चर – आकांक्षा स्तर (2) आश्रित चर – व्यावसायिक अभिरूचि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 01

नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर परीक्षण के प्राप्तांकों का विश्लेषण

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	निष्कर्ष 5% विश्वास स्तर पर	परिणाम
1	नवोदय विद्यालय	50	32.16	4.04	2.41	सार्थक अंतर	परिकल्पना

2	सामान्य विद्यालय	50	27.70	4.16		पाया गया	स्वीकृत

नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों में अंतर अर्थात् क्रांतिक अनुपात का मान 2.41 है जो 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर प्राप्त सारिणी मान 1.96 से अधिक है। अतः मध्यमानों के मध्य सार्थक अंतर है अर्थात् दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर है। नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

नवोदय एवं सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि परीक्षण के प्राप्तांकों का तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक अनुपात	निष्कर्ष 5% विश्वास स्तर पर	परिणाम
1	नवोदय विद्यालय	50	80.46	12.47	2.00	सार्थक अंतर पाया गया	परिकल्पना स्वीकृत
2	सामान्य विद्यालय	50	71.74	28.20			

उक्त दोनों विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन के आधार पर क्रांतिक अनुपात ज्ञात किया गया है। जिसका मान 2.00 है जो 5 प्रतिशत विश्वास स्तर पर प्राप्त सारिणी मान 1.96 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों के मध्य सार्थक अंतर है। दोनों विद्यालयों के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अंतर है और नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और व्यावसायिक अभिरूचि में धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

क्र.	विद्यालय	छात्र संख्या	आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि में सहसंबंध गुणांक	परिणाम
1	नवोदय विद्यालय	50	0.696 धनात्मक (उच्च)	परिकल्पना स्वीकृत

प्रस्तुत विश्लेषण में सहसंबंध गुणात्मक का मान 0.696.है। जो कि उच्च धनात्मक सहसबंध को बताता है। अतः नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और व्यावसायिक अभिरूचि में धनात्मक सह संबंध है। अतः परिकल्पना क्रमांक–03 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और व्यावसायिक अभिरूचि में धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

क्र.	विद्यालय	छात्र संख्या	आकांक्षा स्तर एवं व्यावसायिक अभिरूचि में सहसंबंध गुणांक	परिणाम
2	सामान्य विद्यालय	50	0.231 धनात्मक (निम्न)	परिकल्पना स्वीकृत

प्रस्तुत विश्लेषण में सहसंबंध गुणांक का मान 0.231 है जो कि निम्न धनात्मक सहसबंध को बताता है। अतः नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और व्यावसायिक अभिरूचि में निम्न धनात्मक सह संबंध है। इसलिए परिकल्पना क्र.–04 स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक है।
2. नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक है।
3. नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और व्यावसायिक अभिरूचि में उच्च धनात्मक सह संबंध पाया गया।
4. सामान्य विद्यालय के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर और व्यावसायिक अभिरूचि में निम्न धनात्मक सह संबंध पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर व्यावसायिक रूचियों का प्रभाव पड़ता है। अतः विद्यार्थियों के आकांक्षा को बढ़ाने के लिए उन्हें शाला में निरंतर प्रेरित किया जाना चाहिए।
2. शिक्षक को विद्यार्थियों की उपलब्धि को ध्यान में रखकर उचित मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए जिससे वे अपने आकांक्षा स्तर के अनुसार अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित हो सकें।
3. कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर को बनाये रखने एवं पोषित करने के लिए उपयुक्त वातावरण निर्मित किया जाए और उनकी जिज्ञासाओं को शांत व

उत्प्रेरित करने के लिए उपयुक्त व्यावसायिक अभिप्रेरणा प्रस्तुत की जाए जिससे विद्यार्थी अपनी आकांक्षा के अनुरूप व्यावसायिक क्षमता अर्जित कर सकें।

संदर्भ (References) –

1. नलगुंडवार, अनुपमा (1991–92) : +2 स्तर पर अध्ययनरत बालिकाओं की आकांक्षाओं, सामाजिक अपेक्षाओं एवं समस्याओं का विद्यालयीन पाठ्यचर्या एवं व्यवस्था के संदर्भ में अध्ययन एवं सुधार हेतु सुझाव।
2. चन्द्राकर, एस. (2010–11) : मुस्लिम बालिकाओं के परिवार के शैक्षिक वातावरण का उनके आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
3. वर्मा, राजकमल (1995) : शैक्षिक आकांक्षा और बुद्धि का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।

---

15. ''विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता के संदर्भ में सृजनात्मकता का अध्ययन''

श्री लीला राम साहू

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

मानव सभ्यता एवं संस्कृति की पृष्ठभूमि विज्ञान के इतिहास और साहित्य में छिपी हुयी है। किसी भी देश में किसी समय की वैज्ञानिक उन्नति उस देश की सभ्यता और संस्कृति का चित्र उपस्थित कर सकती है। आज बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना एवं विकास के उपयुक्त अवसर देना आवश्यक हो गया है, जिससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता का विकास हो। परिणाम स्वरूप बालक सुगमतापूर्वक अधिगम स्थानांतरण में सफल हो सके। प्रस्तुत शोध में +2 स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता के संदर्भ में उनकी सृजनात्मकता एवं उनके मध्य सह संबंध का अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है। वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण माला एवं रचनाशक्ति परीक्षण उपकरणों के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों की सांख्यिकीय गणना से प्राप्त परिणामों के अनुसार विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं उनकी सृजनात्मकता में धनात्मक सह संबंध होता है अतः शालाओं में विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता के विकास के साथ–साथ उनकी सृजनात्मकता के विकास के लिए

गतिविधियों का आयोजन, शिक्षकों का प्रशिक्षण एवं पाठ्यवस्तु में संबंधित मुद्दों को शामिल किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

प्रस्तावना (Introduction) –

विज्ञान के अध्ययन से जहाँ हमें सत्य की खोज करके अपार शांति एवं प्रसन्नता का अनुभव होता है, वहीं जीवन में नित्य प्रति आने वाली समस्याओं का समाधान करने के लिए यथेष्ठ बुद्धि एवं प्रशिक्षण भी मिलता है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य हैं वैज्ञानिक अभिवृत्ति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक अभिक्षमता का विकास करना जिससे बालकों में जिज्ञासा, सृजनात्मकता, वस्तुगत समस्याओं को सुलझाने और निर्णय करने की योग्यताएँ विकसित हों।

प्रस्तुत शोध शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। राष्ट्र की प्रगति एवं विकास के लिए बालकों में वैज्ञानिक अभिरूचि, वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता का होना अति आवश्यक है। बालकों की वैज्ञानिक अभिक्षमता की पहचान कर उसे भविष्य में कार्य निष्पादन हेतु उचित मार्गदर्शन दिया जा सकेगा। बालक स्वयं भी जान सकेगा कि अमुक क्षेत्र में वह अधिक उन्नति कर सकता है। बालक की सृजनात्मकता का परीक्षण कर, उचित अवसर प्रदान कर उसकी जिज्ञासा एवं उत्सुकता को पूर्ण कर विज्ञान, कला, साहित्य, नृत्य, कविता, चित्र, हस्तकला आदि में अधिकतम नवीनता लायी जा सकती है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. +2 स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता का अध्ययन करना।
2. +2 स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का अध्ययन करना।
3. +2 स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में सह–संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयीं–

01. +2 स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।
02. +2 स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

03. +2 स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता में धनात्मक सह संबंध पाया जावेगा।

04. +2 स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।

05. + 2 स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सह–संबंध पाया जावेगा।

06. +2 स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के सह–संबंधों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जावेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध का परिसीमन निम्नानुसार किया गया है –

- जिला धमतरी।
- + 2 स्तर पर अध्ययनरत 11वीं एवं 12वीं कक्षा के विज्ञान विषय के विद्यार्थी

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – अध्ययन हेतु +2 स्तर पर अध्ययनरत शा.उ.मा. विद्यालय जी. जामगाँव, विकासखण्ड कुरूद एवं शा.उ.मा.विद्यालय अंवरी, विकासखण्ड कुरूद के विज्ञान विषय के कक्षा 11वीं एवं 12वीं के 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन प्रसंगात्मकता प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध हेतु चयनित उपकरण हैं –
    1. **वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण माला –** विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता मापन हेतु डॉ. के.के. अग्रवाल (New Delhi) द्वारा निर्मित वैज्ञानिक अभिक्षमता परीक्षण।
    2. **रचनाशक्ति परीक्षण/सृजनात्मकता –** डॉ. नरेन्द्र सिंह चौहान तथा डॉ. गोविन्द तिवारी द्वारा निर्मित Creative Thinking के शाब्दिक परीक्षण (हिन्दी में)

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"+2 स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया जावेगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	df	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता
छात्र	50	59.6	13	98	0.72	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं
छात्रा	50	57.8	12			

सांख्यिकी गणना के आधार पर छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता क्रांतिक अनुपात 0.72 प्राप्त हुआ । यह मान 98 df तथा 1% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना क्रमांक–01 की पुष्टि होती है अर्थात् छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"+2 स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जावेगा।"

सारिणी क्रमांक –02

वर्ग	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	df	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थकता
छात्र	50	69.4	18.3	98	0.59	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर नहीं
छात्रा	50	67.2	19.0			

सांख्यिकी गणना के आधार पर छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता का क्रांतिक अनुपात 0.59 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df तथा 1% विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.63 से कम है। अतः परिकल्पना क्रमांक –02 की पुष्टि होती है। अर्थात् छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''+2 स्तर पर अध्ययनरत छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जावेगा।''

उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.632 प्राप्त हुआ जो उच्च धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक–03 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

" +2 स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा। "

उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.551 प्राप्त हुआ जो साधारण धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक–04 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

" +2 स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता में धनात्मक सहसंबंध पाया जायेगा।"

उक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंध की गणना की गई, जिसका मान 0.507 प्राप्त हुआ जो साधारण धनात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। अतः उक्त परिकल्पना क्रमांक–05 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

" + 2 स्तर पर अध्यनरत छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के सहसंबंध में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। "

सारिणी क्रमांक – 03

वर्ग	N	सहसंबंध गुणांक (r)	फिशर का Z मान	क्रांतिक अनुपात (CR)
छात्र	50	$r_1 = 0.63$	$Z_1 = 0.74$	0.6
छात्रा	50	$r_2 = 0.55$	$Z_2 = 0.62$	

सांख्यिकी गणना के आधार पर छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के सहसंबंधों का क्रांतिक मान 0.6 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df पर 1 प्रतिशत सार्थकता के लिये आवश्यक मान 0.195 से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 06 अस्वीकृत की जाती है और कहा जा सकता है कि छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंधों में सार्थक अंतर है।

संभावित कारण – छात्र पढ़ाई को जीवकोपार्जन की दृष्टि से देखते हैं। वह अच्छे से पढ़–लिख कर भविष्य में डॉक्टर, इंजीनियर आदि व्यावसायिक क्षेत्रों में जाना चाहते हैं। छात्रायें पढ़ाई को जीवकोपार्जन की दृष्टि से कम देखती हैं साथ ही घर के वातावरण में छात्रों की अपेक्षा छात्राओं को अपनी प्रतिभा, कौशल एवं सृजनात्मकता के विकास के कम अवसर उपलब्ध होते हैं। छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक बहिर्मुखी व्यक्तित्व के होते हैं। इस कारण दोनों के सहसंबंधों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. छात्र–छात्राओं की सृजनात्मकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
3. छात्रों की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
4. छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
5. विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिक्षमता एवं सृजनात्मकता के मध्य सामान्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया है।
6. छात्र–छात्राओं की वैज्ञानिक अभिक्षमता और सृजनात्मकता के मध्य सहसंबंधों में सार्थक अंतर पाया गया है।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. विद्यालय में अध्ययन के अलावा अन्य गतिविधियां जो विद्यार्थी में सृजनात्मकता के विकास हेतु आवश्यक हैं उनके आयोजन को निश्चित करने हेतु ठोस नियम निर्धारित किये जायें तथा इनका सभी विद्यालयों में अनिवार्य रूप से पालन किया जावे।
2. सृजनात्मकता के विकास के लिए पाठ्यवस्तु में इससे संबंधित सामग्री समाविष्ट की जाये।
3. शिक्षकों को सृजनात्मक बालकों की शिक्षा के संदर्भ में पर्याप्त प्रशिक्षित किया जाये।

संदर्भ (Reference) –

1. त्रिपाठी, सुरेन्द्र नाथ : प्रतिभा और सृजनात्मकता।
2. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव : आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान।

3. Gupta, Krishna kumara (1988) : The creative development of Sec.School Children in relation to sex, intelligence and urban and rural back ground.

16. "विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों के संदर्भ में गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"

मुकुन्द राम साहू

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

बच्चों में अच्छी आदतें उनके बचपन में ही विकसित की जा सकती हैं। जिस प्रकार छोटे पौधे को आसानी से सीधा किया जा सकता है पर बड़ा वृक्ष बनने पर सीधा करना कठिन हो जाता है। उसी प्रकार बच्चों में अच्छी आदतों का विकास उसके जीवन के आरंभिक काल में ही सम्भव है। एक बार आदतें बन जाने पर उनमें परिवर्तन लाना कठिन होता है। शिक्षा के माध्यम से बच्चों में नैतिकता के विकास के साथ–साथ अध्ययन आदतों का विकास भी किया जा सकता है। इस कार्य में शिक्षकों, पालकों तथा समाज का योगदान अति महत्वपूर्ण होगा। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव हेतु प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार पाया गया कि गणित विषय की उपलब्धि पर उनकी अध्ययन आदतों का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को इच्छापूर्वक बार–बार करता है, तो वह उस कार्य को करने का अभ्यस्त हो जाता है। जिसे हम आदत कहते हैं जो सीखने का परिणाम होती है तथा निश्चित रूप से उपलब्धियों को प्रभावित करती हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं अभिवृत्तियों में व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। विद्यार्थी न केवल परीक्षा में सफल होने के लिए अपितु व्यावसायिक परीक्षाओं में भी सफलता की इच्छा के लिए अध्ययन करते हैं। अतः विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों एवं अभिवृत्तियों को सकारात्मक रूप देने के लिए सार्थक प्रयास किए जाने चाहिए ताकि अध्ययन आदत विकसित कर विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सके तथा उनके भविष्य को उज्जवल बनाया जा सके।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना ।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों की जानकारी प्राप्त करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों का गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं –

01 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और उनकी गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जाएगा।

02 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

03 उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

परिसीमन (Delimitation) – यह अध्ययन रायपुर जिले की 02 शहरी एवं 02 ग्रामीण शासकीय शालाओं में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रसंभाव्यता सिद्धांत पर आधारित यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकार्य के लिए कक्षा 10वीं के 100 विद्यार्थियों को चुना गया है जो हिन्दी माध्यम की शासकीय शालाओं में अध्ययनरत् हैं जिनमें से 25 छात्र व 25 छात्राएँ, शहरी क्षेत्र से तथा 25 छात्र व 25 छात्राएँ ग्रामीण क्षेत्र से चयनित किए गए हैं।
- **उपकरण (Tools)** – इस शोध हेतु निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. अध्ययन आदत मापनी – प्रमापीकृत उपकरण डॉ. सी.पी.जी. माथुर द्वारा निर्मित
  2. शैक्षिक उपलब्धि मापनी – स्वनिर्मित उपकरण
- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में निम्नांकित चर हैं –
  1. स्वतंत्र चर – अध्ययन आदत
  2. आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और उनकी गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा''

विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह संबंध गुणांक का मान गणना द्वारा 0.567 प्राप्त हुआ। स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह संबंध गुणांक साधारण धनात्मक है। विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 01

	N	M	CR	df	सार्थकता
ग्रामीण	50	40.7	2.67	98	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
शहरी	50	43.7			

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की गणित विषय की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर के लिए t का मान 2.67 प्राप्त हुआ, जो 98 df के लिए 0.01 विश्वास स्तर पर वास्तविक मान से 2.63 से अधिक है। अतः शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अंतर पाया गया है और परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

	N	M	CR	df	सार्थकता
ग्रामीण	50	26.5	2.7	98	0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
शहरी	50	29.4			

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर के लिए t का मान 2.7 प्राप्त हुआ जो 98 df. के लिए 0.01 विश्वास स्तर पर वास्तविक मान से 2.63 से अधिक है। अतः शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया है व परिकल्पना क्रमांक–03 स्वीकृत हुई।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों और गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य साधारण धनात्मक सह–संबंध पाया गया अर्थात् अध्ययन आदतों का गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की गणित विषय की शैक्षिक उपलब्धि उच्च है।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में अन्तर पाया गया। शहरी विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के सभी विद्यालयों में आवश्यक शैक्षिक सामग्री, पुस्तकालय, पुस्तकों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अप्रशिक्षित शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए तथा समय–समय पर गणित विषयों के शिक्षकों के लिए विषयगत् उन्मुखीकरण, प्रशिक्षण आयोजित किए जाने चाहिए।
3. ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों की शालाओं में गणित विषय की प्रयोगशाला निर्मित की जावे।
4. बालक अध्ययन की उचित योजना नहीं बना पाते हैं। अतः उनकी अध्ययन आदतों के विकास हेतु उचित मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को विद्यालय के पुस्तकालय का भरपूर उपयोग करना चाहिए।

संदर्भ (References) –

1. भारद्वाज, परदेशी राम : हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी विज्ञान विषय के प्रति अभिरूचि एवं अध्ययन आदतों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सिंह, जॉएस ग्रेस : हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी अध्ययन आदतों व अभिवृत्ति के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

17. ''उच्च प्राथमिक स्तर पर सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन''

श्रीमती सलमा कुरैशी

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

बच्चों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन क्षमता में भिन्नता पाई जाती है जिसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर पड़ता है। देश के बच्चों की शिक्षा बालक–बालिकाओं हेतु पृथक विद्यालयों तथा सह–शिक्षा शालाओं दोनों में दी जा रही है। सह शिक्षा विद्यालय तथा पृथक विद्यालय के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व व्यक्तित्व गुण भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। प्रस्तुत शोध में इन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि सह–शिक्षा विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता तथा व्यक्तित्व गुण उच्च हैं।

प्रस्तावना (Introduction) –

उन्नति का सबसे बड़ा एवं प्रारंभिक आधार शिक्षा है। प्रारंभिक शिक्षा ही वह नींव है जिस पर देश की उन्नति की इमारत खड़ी होती है। यदि हमें प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमिकीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना है तो बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा के लिए गंभीरतापूर्वक सकारात्मक वातावरण बनाना होगा। उस कार्य में शासन, प्रशासन, शिक्षक, समाज एवं पालक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

देश में सह–शिक्षा और बालक–बालिकाओं के लिए पृथक विद्यालयों में शिक्षा दोनों ही दी जा रही हैं। सह–शिक्षा अधिकतर ग्रामीण परिवेश के विद्यालयों में दी जा रही है जबकि शहरों में पृथक रूप से बालक–बालिका विद्यालय संचालित हैं।

पृथक विद्यालय तथा सह–शिक्षा विद्यालयों के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व व्यक्तित्व गुण भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। अतः विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों एवं समायोजन क्षमता को परखकर उचित शिक्षण दिया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)–प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. सह शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की समायोजन क्षमता का पता लगाना।
2. सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों के बारे में पता लगाना।
3. सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों की तुलना करना।
4. सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं –

01 सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

02 सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

03 सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

04 सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध अध्ययन दुर्ग जिले के बेमेतरा विकासखंड के अन्तर्गत नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों की विभिन्न शालाओं के कक्षा 8 के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – इसमें असंभव्यता न्यादर्श प्रतिचयन विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में 03 सहशिक्षा विद्यालय एवं 02 पृथक विद्यालयों के कक्षा 8वीं में अध्ययनरत 80 विद्यार्थियों (40 छात्र, 40 छात्राएँ) का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।
- **उपकरण (Tools)**–प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया गया है–
  1. समायोजन मापनी – प्रो. ए.के. सिन्हा एवं प्रो. आर.पी. सिन्हा द्वारा निर्मित
  2. Dimension of Temperament Scale (DTS) - डॉ. एन. के. चड्ढा एवं श्रीमती सुनन्दा चान्दना द्वारा निर्मित मापनी
- **चर (Variables)** – प्रस्तुत शोध में निम्नांकित चर हैं –
  1. स्वतंत्र चर – सह शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के विद्यार्थी
  2. आश्रित चर – समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुण

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के छात्रों की समायोजन क्षमता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	सह शिक्षा विद्यालय	20	27.00	7.90	2.54	38	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	पृथक विद्यालय	20	21.25	6.24			

सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के छात्रों के क्रान्तिक अनुपात की गणना करने पर मान 2.54 प्राप्त हुआ है जो कि 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान 2.02 से अधिक है। जो

यह दर्शाता है कि दोनों में सार्थक अन्तर है अर्थात् सह–शिक्षा विद्यालय के छात्रों की समायोजन क्षमता पृथक विद्यालय के छात्रों से अधिक पाई गई। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"सह शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 02

सह शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों की छात्राओं की समायोजन क्षमता का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्राओं की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन sd	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	सह शिक्षा विद्यालय	20	30.25	5.31	2.57	38	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	पृथक विद्यालय	20	22.00	6.00			

सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों की छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 2.57 है। 38 df एवं 0.05 विश्वास स्तर पर तालिका में CR का मान 2.02 है। गणना से प्राप्त मान सार्थक अन्तर हेतु आवश्यक मान से अधिक है। अर्थात् सार्थक अन्तर है सह शिक्षा विद्यालयों की छात्राओं की समायोजन क्षमता उच्च है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 03

सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्रों की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	सह शिक्षा विद्यालय	20	108.75	9.01	21.73	38	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	पृथक विद्यालय	20	88.75	8.55			

सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों के बीच सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 21.73 है। 38 df एवं 0.05 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से प्राप्त मान अधिक है। अर्थात् सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''सहशिक्षा एवं पृथक विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालयों की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों का सांख्यिकीय विश्लेषण

क्र.	विद्यालय का प्रकार	छात्राओं की संख्या	प्राप्ताकों का मध्यमान	प्राप्तांकों का प्रमाप विचलन	क्रान्तिक अनुपात	df	सार्थक परिणाम
1	सह शिक्षा विद्यालय	20	107.25	12.37	11.41	38	0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर
2	पृथक विद्यालय	20	92.75	13.36			

सह शिक्षा एवं पृथक विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों बीच सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई जिसका मान 11.41 है। 38 df एवं 0.05 तथा 0.01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से प्राप्त मान अधिक है। अर्थात् सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत होती है। सह शिक्षा एवं पृथक विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion)–प्रस्तुत शोध में संकलित आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. सह–शिक्षा विद्यालय के छात्रों की समायोजन क्षमता पृथक विद्यालय के छात्रों से अधिक पाई गई।
2. सह–शिक्षा विद्यालय की छात्राओं की समायोजन क्षमता पृथक विद्यालय की छात्राओं से अधिक पाई गई।
3. सह–शिक्षा एवं पृथक विद्यालय के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अन्तर पाया गया। सह–शिक्षा विद्यालय के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व गुण पृथक विद्यालय के छात्र–छात्राओं से बेहतर पाए गए।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षक आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, नवीन तकनीकी कौशलों का प्रयोग करते हुए छात्र–छात्राओं को ऐसी शिक्षा प्रदान करें जिससे उनमें सामाजिक अच्छाइयाँ विकसित हो सकें तथा उनमें लोकतान्त्रिक समाजवादी भावना, धर्मनिरपेक्षता जैसे सद्‌गुणों एवं समायोजन क्षमता का विकास हो सके।
2. छात्र–छात्राओं को समान रूप से अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर दिया जाना चाहिए।

संदर्भ (References) –

1. परमेश्वरन् (1952) : किशोरों और वयस्कों की समायोजन क्षमता का अध्ययन।
2. राव, नारायण (1964) : विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन।
3. पाठक, समवेद (1972) : समायोजन के क्षेत्र में लोकप्रिय विद्यार्थियों एवं अस्वीकृत छात्र तथा छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन।

18. ''योग शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन''

श्रीमती आशा शर्मा

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

योग एक पूर्ण विज्ञान है, एक पूर्ण जीवन शैली है, एक पूर्ण चिकित्सा पद्धति है एवं एक पूर्ण अध्यात्म विद्या है। प्रस्तुत शोध में योग शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। रायपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षकों एवं शिक्षाविदों पर योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मापन हेतु परीक्षण का प्रशासन कर सांख्यिकीय गणना द्वारा परिणाम प्राप्त किए गए। जिससे यह ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण शिक्षकों का झुकाव योग शिक्षा के प्रति शहरी शिक्षकों से अधिक है। जबकि ग्रामीण शिक्षिकाओं की अपेक्षा शहरी शिक्षिकाएँ योग पर ज्यादा ध्यान देती हैं। अतः योग शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति यदि सकारात्मक होगी तो निःसंदेह भारत में स्वस्थ, कुशल, दृढ़ एवं सच्चरित्र नागरिक तैयार होंगे।

प्रस्तावना (Introduction) –

आधुनिक युग में भौतिक सुख सुविधाओं का अंबार लग जाने के बाद मानव जीवन और संघर्षमय हो गया है। जीवन जटिलताओं से भर गया है। समाज में असुरक्षा, भय, अशांति के वातावरण के कारण आज बालक उस वातावरण में अपनी क्रियाओं एवं व्यवहार का निष्पादन स्वतंत्रतापूर्वक करने व लक्ष्य प्राप्त करने में असफल होता है जिसके कारण मानसिक एवं सांवेगिक तनाव की ग्रथियां उसमें घर कर जाती हैं और बालक इन्हीं से संघर्ष करता रहता है जिससे उसके विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

आज शिक्षा विभाग ने योग की उपादेयता को समझकर प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर से लेकर हाई स्कूल स्तर तक के सभी विद्यालयों में योग शिक्षा आरंभ कर दी है। योग शिक्षा के क्रमिक विकास के साथ इनका समयोचित एवं अनुकूल प्रशिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षकों के प्रशिक्षण का लाभ छात्रों तक पहुंचकर उनमें ज्ञानात्मकता का विकास करेगा। वर्तमान में योग के शैक्षिक महत्व एवं आवश्यकता पर नित नई योजनाएँ भी शासन द्वारा लागू की जा रही हैं। इसलिए आवश्यक हो जाता है कि योगशिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति की जानकारी प्राप्त की जाए।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. शहरी एवं ग्रामीण पुरूष शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी एवं ग्रामीण महिला शिक्षिकाओं की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना ।
3. महिला एवं पुरूष शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
02. शहरी एवं ग्रामीण शिक्षिकाओं की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।
03. पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत शोध निम्न प्रकार से परिसीमित है –

1. क्षेत्र के रूप में अध्ययन हेतु रायपुर जिले तक।
2. ग्रामीण क्षेत्र के लिए आरंग विकासखण्ड के 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं तक।
3. शहरी क्षेत्र में रायपुर शहर से 25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाओं तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध हेतु रायपुर जिले के आरंग तथा रायपुर विकासखंड के 50–50 शिक्षकों (25 महिला, 25 पुरूष शिक्षक प्रति विकासखंड) चयन प्रसम्भाव्यता प्रतिचयन विधि से किया गया।
- **उपकरण (Tools)**–शोधकर्त्ता द्वारा स्वनिर्मित शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है। अभिवृत्ति के मापन हेतु परीक्षण – यह उपकरण योग के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति ज्ञात करने हेतु प्रशासित किया गया। इस स्वनिर्मित मापनी में 55 कथनों का समावेश किया गया है व कुल 110 अंक निर्धारित किये गये हैं। इसे प्रशासित करने में 30 मिनट का समय निर्धारित किया गया।
- **चर** – प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार है –
  1. स्वतंत्र चर – शिक्षक व शिक्षिकाएँ
  2. आश्रित चर – योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

क्र.	विवरण	योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान	मानक विचलन	CR का मान	df	सार्थकता
1	शहरी शिक्षक	90.4	9.1	3.08	48	1% विश्वास स्तर पर मानक विचलन 2.68 से अधिक है। इसलिए सार्थक अंतर है।
2	ग्रामीण शिक्षक	97.4	6.8			

आकड़ों की गणना से प्राप्त मान 3.08 स्वतंत्रता के अंश 48 तथा 1% विश्वास स्तर पर सारणी से प्राप्त CR मान 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक–01 की पुष्टि होती है। ग्रामीण शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति शहरी शिक्षकों से अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"शहरी एवं ग्रामीण शिक्षिकाओं की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 02

क्र.	विवरण	योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान	मानक विचलन	CR का मान	df	सार्थकता
1	शहरी शिक्षक	101.56	9.1	3.06	48	1% विश्वास स्तर पर मानक विचलन 2.68 से अधिक है। इसलिए सार्थक अंतर है।
2	ग्रामीण शिक्षक	93.7	5.8			

आकड़ों की गणना से प्राप्त मान 3.6 है, जो 48 df तथा 1% विश्वास स्तर पर प्राप्त सारिणीगत मान 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक–02 की पुष्टि होती है। शहरी शिक्षिकाओं की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण शिक्षिकाओं से अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर पाया जायेगा।"

सारिणी क्रमांक – 03

क्र.	विवरण	संख्या	योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान	मानक विचलन	CR का मान	df	सार्थकता
1	पुरूष शिक्षक	50	93.9	8.75	4.43	98	1% विश्वास स्तर पर मानक विचलन 2.68 से अधिक है। इसलिए सार्थक अंतर है।
2	महिला शिक्षक	50	101.18	7.63			

आकड़ों की गणना से प्राप्त CR का मान 4.43 है जो 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 2.68 से अधिक है। अतः परिकल्पना क्रमांक–03 की पुष्टि हुई। महिला शिक्षिकाओं की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अधिक पायी गयी।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. ग्रामीण शिक्षकों का झुकाव योग शिक्षा के प्रति शहरी शिक्षकों से अधिक है। इसका कारण यह है कि शहर की जिंदगी भागम–भाग से भरी हुई है यहाँ शिक्षक अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए समय निकाल नहीं पाते। अतः चाह के भी योग शिक्षा के लिए उतना समय नही दे पाते जितना ग्रामीण शिक्षक। योग का प्रचार प्रसार गाँव–गाँव में जाकर कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। अतः योग के प्रति ग्रामीण शिक्षक की अभिवृत्ति शहरी शिक्षकों से अधिक है।
2. ग्रामीण शिक्षिकाओं की अपेक्षा शहरी शिक्षिकाएँ योग पर ज्यादा ध्यान देती हैं। इसका कारण यह कि शहरी शिक्षिकाएँ अपने स्वास्थ्य और व्यक्तित्व निखारने के प्रति ज्यादा सजग रहती हैं।
3. पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षकों का झुकाव योग के प्रति अधिक है।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षकों को सभी वर्गों के विद्यार्थियों को योग शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित कर आत्मविश्वास बढ़ाना चाहिए जिससे उनकी मानसिक योग्यता और समायोजन क्षमता में वृद्धि हो सके।
2. विद्यार्थियों की एकाग्रता बढ़ाने के लिए शिक्षक उन्हें रोज ओम (ऊँ) का उच्चारण करने की आदत डालें।

संदर्भ (References) –

1. देवी, कु. लेखा (2010–11) : शिक्षकों की योग शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति व उसका विद्यार्थियों की योग शिक्षा के प्रति रूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. Nelson and Thomas Kuzan (1933) ; & Abozona University volum 54, Page No. 132. “Education believe and understanding about Environmental Education Resources for Cirocumlum decision making on yoga.

3. Anna Cloowley (Dec.2012) ; Swinburn University of Technology Hawthoron, Victoria 3122" The Psychological and Physiological effects of yoga on children.

19. ''बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

सेवक राम देवांगन

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रकृति नित्य परिवर्तनशील है। प्रत्येक वस्तु पर परिवर्तन का प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है। शिक्षण प्रक्रिया भी इस परिवर्तन से परे नहीं है। आज का युग तकनीक प्रधान युग है अतएव परम्परिक शिक्षण विधि की तुलना में नवीन तकनीक आधारित शिक्षण विधि की आवश्यकता महसूस होने लगी है, इसीलिये शोधकर्ता ने बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया है। अध्ययन में प्रयोगात्मक शोध विधि का उपयोग किया गया। कक्षा ग्यारहवीं के 100 विद्यार्थियों के दो समूह (50–50 के) बनाकर एक समूह को परम्परागत शिक्षण विधि व

दूसरे समूह को बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर शिक्षकों ने बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी गयी व छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी बढ़ी। बहुमाध्यम उपागम का प्रभाव छात्रों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक पड़ा है। अतएव कक्षा शिक्षण को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाने के लिये बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण परम्परागत् शिक्षण विधि की तुलना में छात्रों के लिए लाभप्रद है।

प्रस्तावना (Introduction) –

किसी भी देश की आर्थिक समृद्धि में विज्ञान और तकनीक का महत्वपूर्ण योगदान होता है, यह तथ्य वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रहा है नई पीढ़ी अपनी खोजी प्रवृति के कारण पूर्व ज्ञान के आधार पर नित नये आविष्कारों को जन्म दे रही है। इन आविष्कारों की श्रृंखला में ''कक्षा शिक्षण अध्ययन–अध्यापन में बहुमाध्यम उपागम'' के प्रयोग का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान परिदृश्य में इसने शिक्षा के परिक्षेत्र को प्रभावित किया है तथा यह शिक्षा एवं मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान बना चुका है।

बहुमाध्यम उपागम में बहुमाध्यम शब्द एक से अधिक माध्यम की ओर संकेत करता है। इस उपागम में एक से अधिक तकनीकों और साधनों का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यवस्तु को छात्रों तक पहुंचाने के लिए शिक्षक के द्वारा अनेक माध्यमों का प्रयोग किया जाता है। जैसे व्याख्यान, ओ.एच.पी., टेप रिकार्डर स्लाइड, मॉड्यूल, टी.वी., कम्प्यूटर, पाठ्यपुस्तक, फिल्म, रेडियो, सेमीनार, कार्यशाला, विभिन्न विधियाँ, प्रणालियां इत्यादि।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता की जानकारी प्राप्त करना।
2. बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व प्रभाव का अध्ययन करना।
3. बहुमाध्यम उपागम का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ हैं –

01 शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी जायेगी।

02 परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।

03 परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – यह शोध रायपुर जिले की उच्चतर माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध हेतु कक्षा 11वीं के 100 विद्यार्थियों का यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया तथा उन्हें निम्न दो समूहों में बांटा गया –
  1. प्रयोगात्मक समूह – 50 विद्यार्थी बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण के लिए।
  2. नियंत्रित समूह – 50 विद्यार्थी परम्परागत शिक्षण विधि द्वारा शिक्षण के लिए।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित एवं मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. **शैक्षिक–उपलब्धि परीक्षण –** प्रस्तुत शोध कार्य हेतु शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के लिये शोधार्थी ने स्वनिर्मित वस्तुनिष्ठ शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण का प्रयोग किया।
  2. **व्यक्तित्व मापनी परीक्षण –** विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के मापन हेतु Dr. Arun Kumar Singh (Patna) & Ashish Kumar Singh द्वारा Differential Personality Inventory (D P I – SS) Hindi Version का प्रयोग किया गया।
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –
  1. स्वतंत्र चर – बहुमाध्यम उपागम तथा परम्परागत विधि
  2. आश्रित चर – व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''शिक्षण प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी जायेगी।''

उक्त परिकल्पना की पूर्ति हेतु शिक्षकों का अभिमत जानने के लिए प्रश्नावली (अभिमतावली) भरवाकर तथा विश्लेषण कर व्याख्या की गयी। प्राप्त अभिमत को सारणी में प्रतिशत में दर्शाया गया है –

सारिणी क्रमांक –01

शिक्षकों के अभिमत हेतु प्रश्नावली		प्रतिशत में उत्तर	
क्र.	प्रश्न	हाँ	नहीं
1	क्या आपको बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण की जानकारी है ?	95%	5%
2	क्या परंपरागत शिक्षण की अपेक्षा बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करना अधिक आसान है।	65%	35%
3	क्या शिक्षक को बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करने में अधिक मेहनत एवं स्व–अध्ययन की आवश्यकता होती है ?	70%	30%
4	क्या बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग करने वाले शिक्षकों को तकनीकी विषयक ज्ञान होना आवश्यक है ?	85%	15%
5	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण से शाला में विद्यार्थियों की उपस्थिति बढ़ेगी ?	90%	10%
6	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम पर आधारित शिक्षण से शाला में विद्यार्थी पूरे समय तक रुकेंगे ?	90%	10%
7	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के द्वारा शिक्षण करने से विद्यार्थियों की अध्ययन रूचि को बढ़ाया जा सकेगा ?	100%	00%
8	क्या आप इस बात से सहमत हैं कि बालकों जो शिक्षा दी जाए वह रोचक एवं प्रभावपूर्ण होनी चाहिए ?	100%	00%
9	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से शिक्षक और छात्रों के आपसी संबंधों में सुधार होगा और छात्रों की झिझक कम होगी ?	90%	10%
10	बहुमाध्यम उपागम के उपयोग से विद्यार्थियों में परस्पर निर्भरता एवं सहयोग की भावना का विकास हो सकेगा ?	100%	00%
11	क्या वर्तमान विज्ञान एवं तकनीकी के युग में भी परंपरागत शिक्षण प्रदान किया जाना आपकी दृष्टि में उचित है ?	20%	80%
12	क्या शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक होना चाहिए ?	100%	00%
13	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से छात्रों के व्यक्तित्व विकास एवं शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जाता है ?	90%	10%
14	निजी शिक्षण संस्थान में नवीन तकनीक (बहु. उपा.) आधारित शिक्षण कराया जाता है तथा शासकीय शिक्षण संस्थान में नहीं क्या वहाँ के विद्यार्थियों में अंतर पाया जायेगा ?	100%	00%
15	क्या विद्यार्थी किताबी ज्ञान एवं व्याख्यान पर आधारित शिक्षण की अपेक्षा ''करके सीखने'' से अधिक आसानी से एवं जल्दी सीखते हैं ?	100%	00%
16	क्या बहुमाध्यम उपागम उपयोग से छात्रों में स्वाध्याय की आदत को बढ़ाया जा सकेगा ?	85%	15%
17	क्या बहुमाध्यम उपागम का प्रयोग समय , श्रम एवं धन का अपव्यय मात्र है ?	30%	70%
18	क्या परंपरागत शिक्षण की तुलना में बहुमाध्यम उपागम के प्रयोग से कक्षा का वातावरण प्रभावी होगा तथा बालक कक्षा में अधिक सक्रिय रहेगा ?	100%	00%
19	क्या आप अपने विद्यालय में बहु. उपा. पर आधारित शिक्षण दिये जाने के पक्ष में हैं ?	100%	00%
20	क्या बहुमाध्यम उपागम के उपयोग से छात्रों में आत्मविश्वास एवं कर्मठता की भावना का	70%	30%

	विकास हो सकेगा ?		

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षक बहुमाध्यम उपागम शिक्षण देने हेतु सहमत हैं, व इसे रोचक व प्रभावपूर्ण उपागम मानते हैं।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अंतर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक–02

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण की व्याख्या एवं विश्लेषण

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	df	T मान की सार्थकता
परंपरागत शिक्षण समूह	50	16.3	4.955	3.329	98	1.98 तथा 2.63 मान से अधिक अतः सार्थक अंतर है।
बहुमाध्यम उपागम आधारित समूह	50	19.4	4.35			

परंपरागत एवं बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक–उपलब्धि के लिए C.R. मान 3.329 प्राप्त हुआ जो 98 df तथा मान 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.98 से अधिक है । अतः दोनों समूहों के मध्यमान में सार्थक अंतर है। इस आधार पर परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की जाती है। इस प्रकार बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण समूह के विद्यार्थियों एवं परंपरागत शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के शैक्षिक–उपलब्धि में अंतर पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''परंपरागत विधि से शिक्षण पश्चात् एवं बहुमाध्यम उपागम द्वारा शिक्षण पश्चात् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

विद्यार्थियों के व्यक्तित्व परीक्षण की व्याख्या एवं विश्लेषण

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात.	df	T मान की सार्थकता
परंपरागत शिक्षण समूह	50	83.9	5.003	3.486	98	0.05 तथा 0.01

बहुमाध्यम उपागम आधारित समूह	50	88.0	6.65			विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।

परंपरागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व हेतु C.R. मान 3.486 प्राप्त हुआ। यह मान 98 df तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सारणी मान 1.98 अधिक है। अतः दोनों समूहों के मध्यमान में सार्थक अंतर है। अतः इस आधार पर परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की जाती है । इस प्रकार बहुमाध्यम उपागम आधारित शिक्षण समूह के विद्यार्थियों एवं परंपरागत शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अंतर पाया गया।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं **–**

1. शिक्षकों की दृष्टि से शिक्षण प्रक्रिया में बहुमाध्यम उपागम की उपयुक्तता पायी गई।
2. परंपरागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक–उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया। बहुमाध्यम उपागम आधारित (प्रयोगात्मक) शिक्षण विद्यार्थियों की उपलब्धि अधिक पायी गयी। बहुआयाम उपागम से कक्षा शिक्षण प्रभावशाली होता है। छात्र रूचि लें कर व सक्रिय बने रहते हैं जबकि परम्परागत शिक्षण में छात्र निष्क्रिय रहते हैं व रूचि नहीं लेते हैं।
3. परंपरागत एवम् बहुमाध्यम उपागम शिक्षण समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया गया। बहुमाध्यम उपागम शिक्षण का प्रयोगात्मक समूह के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. शिक्षण में बहुमाध्यम उपागम (नवाचार साधन, तकनीक) का प्रयोग एक सशक्त साधन है। इससे विद्यार्थियों, पालकों, शिक्षकों व जन सामान्य को भी परिचित कराना आवश्यक है। शिक्षकों को इस उपागम को कक्षा शिक्षण में उपयोग करने हेतु प्रेरित करना लाभप्रद होगा।

2- शासन शिक्षकों को निर्देशित करें कि आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, नवीन तकनीकी कौशलों का प्रयोग करते हुए छात्रों को ऐसी शिक्षा प्रदान करें, जिससे विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर में वृद्धि के साथ–साथ उनके व्यक्तित्व का भी विकास हो।

संदर्भ (References) –

1. अग्रवाल, वंदना (2005) : पारम्परिक व्याख्यान विधि एवं कंप्यूटर सहायतित शिक्षण की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शर्मा, पूजा (2010–11) : पारम्परिक व्याख्यान विधि एवं कम्प्यूटर सहायतित शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन।
3. Panday, Ajay Kumar (2007) : Impact of interactive radio instruction programme "English is fun" in Primary School of Chhattisgarh State.

20. "विशेष पिछड़ी जनजाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक –उपलब्धि पर, उनके सामाजार्थिक स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन"

श्रीमती पुष्पलता साहू
शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

देश की आजादी के इतने वर्षों पश्चात् भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों का शैक्षिक विकास नहीं हो पाया है। अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों में यह और भी कम देखा गया है। विशेष पिछड़ी जनजाति के लोगों में यह विकास अल्प मात्रा में ही दिखाई पड़ता है। अनुसूचित जनजाति समूहों का सामाजार्थिक स्तर कम है। विशेष पिछड़ी जनजातियों के व्यक्तियों का सामाजार्थिक स्तर भी अति न्यून है। शोध निष्कर्ष के अनुसार सामाजार्थिक स्तर का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। अतः अनुसूचित जनजातियों के व्यक्तियों के सामाजार्थिक स्तर के विकास पर ध्यान दिया जाना होगा। यदि अनुसूचित जनजाति तथा विशेष पिछड़ी जनजातियों के बच्चों को उचित शिक्षा प्राप्त करने में मदद

दी जाएगी तभी वे देश की मुख्य धारा में रहकर देश की भलाई के लिए कुछ करने में पूर्णतः सक्षम हो सकेंगे।

प्रस्तावना (Introduction) –

भारत में शिक्षा का दायित्व है समाज के विभिन्न वर्गो को साथ लाना और एकजुट समतावादी समाज का निर्माण करना। देश के दूर वनांच्छादित पठारों, पहाड़ियों तथा बीहड़, अगम्य अंचलों में कई जातियाँ निवास करती हैं इन्हें वन्यजाति, आदिवासी, वनवासी, जनजाति और गिरिजन आदि नामों से संबोधित किया जाता है।

इन जातियों के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों के कारण शाला में उपस्थिति संबंधी अनियमितता एवं शाला त्याग देखने को मिलता है।

इस संवर्ग के लोगों में से अधिकांशतः अशिक्षित हैं, उनकी शिक्षा का विकास अभी नहीं हो पाया है। तात्पर्य यह है कि आज भी सामाजिक आर्थिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण विशेष पिछड़ी जनजातियाँ (बैगा, पहाड़ी कोरवा, अबुझमाड़िया, कमार, बिरहोर) एवं अनुसूचित जनजातियाँ औपचारिक शिक्षा से दूर हैं, यही बात उनके विकास में बाधक है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है –

1. निम्न/मध्यम/उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
2. निम्न/मध्यम/उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी हैं –

01. निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
02. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

03. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

04. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

05. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

06. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

07. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

08. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु. सूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

09. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

परिसीमन (Delimitation) – यह शोध गरियाबंद विकासखंड की उच्च प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों तक परिसीमित है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध हेतु रायपुर जिले के गरियाबंद विकासखण्ड की विभिन्न शालाओं के कक्षा 7वीं में नियमित अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों (60 छात्र–छात्राएँ विशेष पिछड़ी जनजाति के तथा 60 छात्र–छात्राएँ अनुसूचित जनजाति) का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
  1. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित
  2. सामाजार्थिक मापनी – प्रमाणिक उपकरण, राजीव लोचन भारद्वाज द्वारा निर्मित
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध के चर निम्नानुसार हैं –

(1) सामाजार्थिक स्तर–स्वतंत्रचर (2) शैक्षिक उपलब्धि–आश्रित चर।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 01

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	21	10.62	1.1265	35	2.78	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थी	16	13.75				

निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	21	10.62	0.804	50	9.36	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु.जनजाति के विद्यार्थी	31	18.16				

निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि.पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों की सार्थकता में 1% विश्वास

स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक–02 स्वीकृत की गयी। मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थी	21	10.62	1.7385	32	40.34	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	13	80.76				

निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के मे अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर हैं। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	30	16.36	0.969	44	2.69	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थी	16	13.75				

मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर हैं। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत की गयी। मध्यम समाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 05

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थी	30	16.36	3.1726	59	2.53	5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	31	18.16				

मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक–05 स्वीकृत की गयी। मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 06

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता T
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थी	30	16.36	1.788	41	36.01	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	13	80.76				

मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% तथा विश्वास 5% स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 06 स्वीकृत की गयी। उच्च समाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 07

''उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 07

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	09	20.88	2.29	23	3.101	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	16	13.75				

उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 07 स्वीकृत की गयी। उच्च समाजार्थिक के स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 08

''उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 08

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	09	20.88	1.091	38	2.85	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	31	18-16				

उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 08 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 09

''उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 09

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	(df)	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	09	20.88	1.247	20	2.45	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थी	13	80.76				

उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 09 स्वीकृत की गयी।

निष्कर्ष (Conclusion) – शोध में संकलित आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न सामाजिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।
2. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।
3. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।
4. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गयी।
5. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।
6. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।
7. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कम पायी गयी।
8. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गयी।

9. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति की तुलना में उच्च समाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पायी गयी।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. अनुसूचित जनजाति एवं विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों के लिए विशेष कोचिंग की व्यवस्था की जाए।
2. दृश्य, श्रव्य सामग्रियों के आधार पर रोचक विधियों से सिखाया जाए।

संदर्भ (References) –

1. राय, सीमा (1999–2000) : बस्तर जिले की अनुसूचित जनजाति के विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. साहू, तिलक राम (1992–93) : जनजातियों के जीवन स्तर पर उनकी शैक्षिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन।

---

21. "CG एवं CBSE विद्यार्थियों में तनाव का अध्ययन : मूल्यांकन प्रक्रिया की अभिवृत्ति के संदर्भ में"

संजीत कुमार मिश्रा

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

वर्तमान शिक्षा पद्धति में मूल्यांकन एवं उसके स्वरूप का महत्वपूर्ण स्थान है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या–2005 की अनुशंसाओं को लागू करने हेतु प्रो. यशपाल जैसे शिक्षाविदों ने कई सलाहें दी हैं जिससे विद्यार्थियों में व्याप्त तनाव को कम किया जा सके।

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्त्ता ने विद्यार्थी में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति तथा परीक्षा के प्रति तनाव के संबंध पर शोध किया है। शोध से निष्कर्ष निकलता है कि सी.जी. बोर्ड के बालकों में तनाव बालिकाओं की अपेक्षा अधिक होता है। सी.जी तथा सी.बी.एस.ई. शालाओं में परीक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर सार्थक प्रभाव नहीं देखा गया है। सतत् एवं

व्यापक मूल्यांकन से तनाव का स्तर कुछ कम तो होता है लेकिन विद्यार्थी पूरी तरह से तनाव मुक्त नहीं होते।

प्रस्तावना (Introduction) –

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन शिक्षा में एक नवीन दृष्टिकोण का परिणाम माना जाता है परंतु प्राचीन काल से ही शिक्षण में मूल्यांकन का अस्तित्व स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन समय में भी शैक्षिक स्तर का मूल्यांकन विषय के ज्ञान की न्यूनता एवं उच्चता के रूप में किया जाता था। आधुनिक मूल्यांकन पद्धति में विभिन्न विधियों एवं प्रविधियों के प्रयोग पर ध्यान दिया जाने लगा है। आधुनिक मूल्यांकन मात्र शिक्षार्थियों की उपलब्धि को नहीं मापता है अपितु पाठ्यक्रम के विभिन्न उद्देश्यों को व्यापक स्तर पर मापने का प्रयास करता है।

मूल्यांकन प्रक्रिया बच्चे की मानसिक योग्यता एवं अभिवृत्ति का आकलन करती है। कुछ बच्चे जिनकी मानसिक योग्यता उच्च होती है, उच्च अभिवृत्ति वाले होंगे। उनमें भी मूल्यांकन प्रक्रिया के कई पद तनाव अवश्य उत्पन्न करते होंगे। यदि छात्रों की अभिवृत्ति का परीक्षण कर उन्हें विषय–बोध का अवसर दिया जाए तो अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे। बच्चों में परीक्षा के कारण उत्पन्न कुण्ठा, अवसाद या तनाव को कम करने की दिशा में ही केन्द्र सरकार ने सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम में ग्रेडिंग पद्धति को अपनाकर बच्चों पर पड़ने वाले अनावश्यक तनाव को कम करने की दिशा में नई पहल की है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. CG एवं CBSE शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में परीक्षा संबंधी तनावों का अध्ययन करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के परीक्षा संबंधी तनावों का अध्ययन करना।
3. CG एवं CBSE शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. परीक्षा संबंधी तनाव एवं मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. CG एवं CBSE शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में परीक्षा संबंधी तनावों में सार्थक अंतर नहीं होगा।
02. CG बोर्ड के छात्र–छात्राओं में परीक्षा संबंधी तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
03. CBSE बोर्ड के छात्र–छात्राओं में परीक्षा संबंधी तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
04. CG बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
05. CBSE बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।
06. परीक्षा संबंधी तनाव एवं मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–संबंध नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitation) – इस अध्ययन को बिलासपुर जिले के CG एवं CBSE शासकीय/अशासकीय विद्यालय/अनुदान प्राप्त हाई स्कूल में अध्ययनरत कक्षा दसवीं एवं ग्यारहवीं के छात्र–छात्राओं तक सीमित किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – शोध हेतु बिलासपुर जिले में संचालित CG एवं CBSE पाठ्यक्रम वाले 4–4 विद्यालयों (2 शासकीय, 2 अशासकीय) उच्च माध्यमिक शालाओं के 200 विद्यार्थियों (प्रतिशाला 25 विद्यार्थी) का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है –
    1. विद्यार्थियों का परीक्षा तनाव मापनी – डॉ. मधु अग्रवाल व सुश्री वर्षा कौशल के द्वारा निर्मित विद्यार्थियों का परीक्षा तनाव मापनी का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में परीक्षा के तनाव से संबंधित 38 कथन हैं।

2. मूल्यांकन के अभिवृत्ति पर प्रभाव के परीक्षण हेतु मापनी – इसमें स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण में कुल 30 कथन हैं।

- **चर (Variables) –** शोध में चर निम्नानुसार हैं –
  1. स्वतंत्र चर – मूल्यांकन
  2. आश्रित चर – अभिवृत्ति, तनाव
  3. सहचर – सी.जी. व सी.बी.एस.ई. विद्यालय एवं छात्र–छात्राएँ

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"CG एवं CBSE शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में परीक्षा संबंधी तनावों में सार्थक अंतर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

Board	N	M	SD	SED	df	t	Significance
CG	100	20.22	5.44	0.72	198	1.77	NS at 0.01 level
CBSE	100	18.13	4.82				

प्राप्तांकों की गणना के उपरांत दोनों मध्यमानों का सार्थक अंतर 1.77 प्राप्त हुआ है जो .01 सार्थकता स्तर पर सारिणीगत मान 2.59 से कम है। अतः मान असार्थक सिद्ध हुआ तथा परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत होती है। CG तथा CBSE शालाओं के विद्यार्थियों के परीक्षा संबंधी तनाव में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"CG बोर्ड के छात्र–छात्राओं में परीक्षा संबंधी तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक – 02

Board	Gender	N	M	SD	SED	df	t	Significance
CG	Boys	50	21.7	4.79	1.05	98	2.81	Significant
CBSE	Girls	50	18.4	5.69				at 0.01 level

प्राप्तांकों की गणना के उपरांत दोनों मध्यमानों का सार्थक अंतर 2.81 प्राप्त हुआ है जो .01 सार्थकता स्तर पर सारिणीगत मान 2.59 से अधिक है। अतः मान सार्थक सिद्ध हो

रहा है। अतः सी.जी. बोर्ड के छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा अधिक तनाव देखा गया। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

"CBCE बोर्ड के छात्र–छात्राओं में परीक्षा संबंधी तनाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक – 03

Board	Gender	N	M	SD	SED	df	t	Significance
CG	Boys	50	18.86	4.54	0.97	98	2.88	Significant
CBSE	Girls	50	21.66	5.13				at 0.01 level

प्राप्तांकों की गणना के उपरांत दोनों मध्यमानों का सार्थक अंतर 2.88 प्राप्त हुआ है जो .01 सार्थकता स्तर पर सारिणीगत मान 2.59 से अधिक है। अतः मान सार्थक सिद्ध हो रहा है। अतः सी.बी.एस.ई. बोर्ड की छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अधिक तनाव देखा गया। परिकल्पना क्रमांक – 03 अस्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 04

"CG बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक – 04

Board	Category	N	M	SD	SED	df	t	Significance
CG	Govt.	50	19.92	2.73	0.38	98	1.16	Not Significant
CBSE	Private	50	20.38	2.72				at 0.01 level

प्राप्तांकों की गणना के उपरांत दोनों मध्यमानों का सार्थक अंतर 1.16 प्राप्त हुआ है जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारिणीगत मान 2.59 से कम है। अतः मान असार्थक है। इसलिए परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत होती है। CG बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 05

" CBSE बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक – 05

Board	Category	N	M	SD	SED	df	t	Significance
CG	Govt.	50	19.92	2.4	0.29	98	1.66	Not Significant
CBSE	Private	50	20.82	2.97				at 0.01 level

प्राप्तांकों की गणना के उपरांत दोनों मध्यमानों का सार्थक अंतर 1.16 प्राप्त हुआ है जो .01 सार्थकता स्तर पर सारिणीगत मान 2.59 से कम है। अतः मान असार्थक सिद्ध हो रहा है। चूंकि मान असार्थक है इसलिए परिकल्पना क्रमांक – 05 स्वीकृत होती है। CBSE बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''परीक्षा संबंधी तनाव एवं मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–संबंध नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 06

	No of Student	r	Lavel
Anxiety	200	0.030	Negligible
Attitude	200		Positive

गणना द्वारा प्राप्त r का मान 0.030 प्राप्त हुआ है जो नगण्य धनात्मक सह संबंध है। इसलिए परिकल्पना क्रमांक – 06 स्वीकृत होती है। प्राप्त परिणाम से यह निष्कर्ष निकलता है कि परीक्षा संबंधी तनाव एवं मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–सबंध नहीं होता है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध में संकलित आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं –

1. CG एवं CBSE शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों में परीक्षा संबंधी तनावों में सार्थक अंतर नहीं है।
2. CG बोर्ड के छात्रों में तनाव CBSE बोर्ड के छात्रों से अधिक पाया गया।
3. CG बोर्ड के छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा अधिक तनाव पाया गया।
4. CBSE बोर्ड की छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा अधिक तनाव पाया गया।
5. CG बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
6. CBSE बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
7. परीक्षा संबंधी तनाव एवं मूल्यांकन के प्रति अभिवृत्ति में कोई सह–संबंध नहीं पाया गया।

8. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में तनाव का स्तर कुछ कम होता दिखाई देता है लेकिन छात्र पूरी तरह से तनावमुक्त नहीं होते।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत है –

1. समस्त विषयों का क्रियात्मक एवं रूचिपूर्ण ढंग से अध्यापन करके विद्यार्थियों का ध्यान विषय की ओर केन्द्रित किया जाये जिससे उनका मूल्यांकन के प्रति तनाव एवं भय को समाप्त किया जा सके।
2. प्रत्येक तीन माह में संभाग, जिला अथवा विकासखंड स्तर पर शिविर लगाकर विषय–विशेषज्ञों के व्याख्यान प्रस्तुत कराये जाने चाहिए जिसमें परीक्षा में उत्तर लिखने की उचित विधि बतलाई जाये।
3. हर समय शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रति छात्रों में निर्भीक वातावरण तैयार करने में सहयोग किया जाना चाहिए।

संदर्भ (References) –

1. लास्कर, रामाधार (2011) : सतत् एवं समग्र मूल्यांकन पद्धति में परिवर्तन का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. सतत् एवं समग्र मूल्यांकन हेतु दिशा–निर्देश : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.)
3. वारे, उल्हास (2001) : बिलासपुर नगर की प्राथमिक शालाओं में सतत् मूल्यांकन की सार्थकता का एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन।

---

22. "हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन"

कु. अनामिका दुबे

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

सारांश

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। बहुभाषी देश में विभिन्न मातृभाषाएँ राज्यों में बोली जाती हैं एवं मातृभाषा में कार्य भी सम्पन्न किए जाते हैं। अतः शिक्षा की प्रारंभिक अवस्था में शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा होना चाहिए। भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना है। भाषा की पाठ्य पुस्तकों में इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास किये गये हैं। राज्य में हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में छत्तीसगढ़ी पाठों को जोड़ा गया है। प्रस्तुत शोध में शिक्षकों का दृष्टिकोण छत्तीसगढ़ी पाठों के प्रति कितना

सकारात्मक है यह जांचा गया एवं पाया गया कि शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक एवं ग्रामीण/शहरी शिक्षकों के दृष्टिकोण में समानता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। बहुभाषी देश में प्रत्येक राज्य में निवासरत जनसंख्या अपना कार्य मातृभाषा में संपन्न करती है। अतः शिक्षा की प्रारंभिक अवस्था में शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा होना चाहिए क्योंकि मातृभाषा का शाब्दिक अर्थ है – माँ की भाषा। जिसे बालक माँ के सानिध्य में रहकर सहज रूप से सुनता और सीखता है। जिस भाषा का प्रयोग बच्चा सर्वप्रथम अपनी माँ से सीखता है और जिसके माध्यम से वह परिवार एवं समुदाय में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है उसे ही प्रारंभिक ज्ञान के लिए माध्यम बनाया जाना आवश्यक है क्योंकि इस अवस्था में उसे विद्यालय में भी पारिवारिक वातावरण की आवश्यकता होती है।

भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य है– सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। भाषा की पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास किये गये हैं और अपने राज्य की आवश्यकता के अनुसार हिन्दी की पुस्तकों में छत्तीसगढ़ी पाठों को समावेशित किया गया है। पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के द्वारा विद्यार्थी क्षेत्रीय लेखकों एवं कवियों द्वारा प्रस्तुत विचारों का अनुभव प्राप्त करेंगे। साथ ही पाठ विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर के उन्नयन में सहायक सिद्ध होंगे। बालकों को ज्ञान देने का दायित्व शिक्षकों का है। अतः शिक्षकों से इस संबंध मेंदृष्टिकोण को जानना आवश्यक है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
2. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्यापन करने वाले शिक्षकों के दृष्टिकोणों की तुलना करना।
3. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोणों की तुलना करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)–प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी–

01. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक होगा।

02. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

03. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitation) – इस अध्ययन का निम्नानुसार परिसीमन किया गया है –

1. क्षेत्र–बिलासपुर जिले के अन्तर्गत बिल्हा विकासखंड की ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय
2. स्तर–शासकीय विद्यालयों के व्याख्याता एवं उच्च वर्ग शिक्षक

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत लघुशोध प्रबंधन हेतु न्यादर्श के रूप में बिलासपुर जिले के बिल्हा विकासखंड के अन्तर्गत 40 शहरी एवं 40 ग्रामीण शासकीय माध्यमिक शालाओं में अध्यापन करने वाले महिला एवं पुरूष शिक्षकों (व्याख्याता एवं उच्च वर्ग शिक्षक) का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया।

चयनित शहरी/ग्रामीण स्कूलों एवं शिक्षक/शिक्षिकाओं की संख्या

क्र.	क्षेत्र	विद्यालय	विद्यालयों की संख्या	शिक्षक	शिक्षिका	योग
1	शहरी	शासकीय	40	25	25	50
2	ग्रामीण	शासकीय	40	25	25	50
योग –			80	50	50	100

- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तावित शोध अध्ययन में शोध उद्देश्यों को ध्यान में रखकर एक स्वनिर्मित अभिमतावली का निर्माण किया गया है।

  यह अभिमतावली भाषायी कौशल, सामाजिक वार्तालाप, व्यावसायिक दक्षता एवं मूल्यांकन, व्याकरण, प्रशिक्षण, साहित्य एवं पाठ्यपुस्तक, सहायक विषय एवं

छत्तीसगढ़ी भाषा के आधार पर वर्गीकृत है। अतः अभिमतावली में इन्हीं वर्गों को आधार मानकर शिक्षक दृष्टिकोण मापनी प्रपत्र तैयार किया गया है।

- **चर (Variables) –** प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में निम्नलिखित चर हैं –
  1. स्वतंत्र चर – पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठ, विद्यालय (शहरी/ग्रामीण), महिला/पुरूष शिक्षक
  2. आश्रित चर – शिक्षकों का दृष्टिकोण

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक होगा।''

सारिणी क्रमांक – 01

क्र.	विद्यालय	न्यादर्श	सकारात्मक दृष्टिकोण वाले शिक्षक	प्रतिशत
1	ग्रामीण	50	2736	68.4
2	शहरी	50	2628	65.7

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

क्र.	विद्यालय	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	स्वतंत्रता कोटि (अंश)	मानक विचलन की मानक त्रुटि	टी परीक्षण	सार्थकता स्तर
1	ग्रामीण	50	57.44	6.79	98	1.48	1.34	NS
2	शहरी	50	55.44	8.02				

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण की सार्थकता की गणना करने पर स्वतंत्रता की कोटि 98 पर t = 1.34 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर t के सारिणी मान 1.98 से कम है। छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में ग्रामीण एवं शहरी

विद्यालयों के शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक–02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

क्र.	विद्यालय	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन	स्वतंत्रता कोटि (अंश)	मानक विचलन की मानक त्रुटि	टी परीक्षण	सार्थकता
1	महिला	50	57.78	7.10	98	1.47	1.81	NS
2	पुरूष	50	55.1	7.62				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण में 98 df तथा 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक–03 स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध में संकलित आँकड़ों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे निम्नलिखित हैं –

1. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण सकारात्मक है।
2. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों के समान दृष्टिकोण हैं।
3. हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित छत्तीसगढ़ी पाठों के संबंध में पुरूष एवं महिला शिक्षकों के दृष्टिकोण समान हैं।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. छत्तीसगढ़ी भाषा को हिन्दी के पाठ्यक्रम का भाग न मानकर उसे एक स्थानीय भाषा के ज्ञान के रूप में पढ़ाया जाये।
2. विद्यार्थियों को लोक–कलाओं, कलाकारों, पर्वों एवं त्यौहारों संबंधी जानकारी दी जाये इसके लिए विचारगोष्ठी, पर्वों का आयोजन एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित कर उनके ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है।

संदर्भ (References) –

1. सिंह, विजय बहादुर (1984) : बिलासपुर एवं रायपुर जिले के उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा पर लोकभाषा छत्तीसगढ़ी के प्रभावों का अध्ययन।
2. शर्मा, प्रद्युम्न कुमार (2003) : मानक भाषा हिन्दी की वर्तनी में छत्तीसगढ़ी बोली के प्रभाव का अध्ययन।
3. खूँटे, राजेश कुमार (2004) : पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के पाठ्यक्रम में ''हमारा छत्तीसगढ़'' विषय के अध्ययन के प्रभाव का अध्ययन।

23. "खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन साई प्रशिक्षण योजना के संदर्भ में''

श्रीमती प्राची शर्मा

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षा में सामाजिक प्रकृति का तात्पर्य बालकों में सामाजिक गुणों को विकसित करना है जिससे वे अपना विकास करते हुए समाज के कल्याण में भी पूर्ण सहयोग प्रदान कर सकें। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के व्यवहार को वातावरण के अनुसार बदलना शिक्षा का लक्ष्य होता है। बच्चे अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन कर उत्तम नागरिक बन सकें, अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। यही शिक्षा का उद्देश्य है।

वर्तमान शिक्षा बालक केन्द्रित है। सीखने–सिखाने के उपक्रम में बालक की क्षमता तथा उसकी संतुष्टि महत्वपूर्ण है। इस तारतम्य में शारीरिक शिक्षा तथा खेल के संस्थान महत्वपूर्ण हैं। प्रस्तुत शोध निष्कर्षों के अनुसार बालक के व्यक्तित्व पर खेलों का प्रभाव पड़ता है। खिलाड़ी व गैर खिलाड़ी बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व पर खेल भावना का भी प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है।

प्रस्तावना (Introduction) –

शिक्षा एक सापेक्ष, चेतन अथवा अचेतन, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक वातावरण संबंधी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व से संबंधित सभी पक्षों का विकास इस प्रकार से होता है कि वह परिवर्तन को समझ सके तथा रचनात्मक साधन और आनंद प्राप्त कर सके। तीव्रता से परिवर्तित हो रही सामाजिक परिस्थितियों ने ज्ञान का विस्फोट तथा विज्ञान का प्रसार किया है। इस परिवेश ने शिक्षा के सामने नयी चुनौतियाँ रख दी हैं। आज शिक्षा का कार्य मनुष्य को केवल विषय विशेष का ज्ञान देना ही नहीं है वरन् उसके व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास कर उसे वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने के योग्य बनाना है। इस तारतम्य में शिक्षा में शारीरिक शिक्षण का तथा खेलों का स्थान महत्वपूर्ण है। खेलों के माध्यम से बालक की मूलवृत्तियाँ स्वयं बाहर आती हैं, उन्हें अभिव्यक्त कर बालक प्रसन्न होते हैं और खेलते–खेलते बहुत सारी बातें सीख जाते हैं जो उनके व्यक्त्वि को भी प्रभावित करती हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. खिलाड़ी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों की पहचान करना।
2. गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों में व्यक्तित्व गुणों की पहचान करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

01. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व गुणों में अंतर पाया जायेगा ।
02. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से संबंधित गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा ।
03. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से असंबंधित व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

04. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालकों के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

05. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालकों के खेल से संबंधित व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

06. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालकों के खेल से असंबंधित व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अतंर नहीं पाया जायेगा ।

07. खिलाड़ी बालिका तथा खिलाड़ी बालक के खेल से संबंधित व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

08. गैर खिलाड़ी बालिका तथा गैर खिलाड़ी बालक के खेल से असंबंधित व्यक्तित्व गुण में सार्थक अंतर पाया जायेगा।

09. खिलाड़ी बालक–बालिका तथा गैर खिलाड़ी बालक–बालिका के व्यक्तित्व गुण में सार्थक अंतर पाया जायेगा ।

परिसीमन (Delimitation) – इस अध्ययन में निम्नानुसार परिसीमन किया गया है –

स्थान एवं संसाधन की दृष्टि से रायपुर जिले के सांई प्रशिक्षण केन्द्र तथा शासकीय उ.मा.वि. पं. रविशंकर शुक्ल वि. वि. परिसर, रायपुर (छ.ग.) के 14 से 18 वर्ष के खिलाड़ी।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत शोध में असम्भाव्य उद्देश्यीय तथा साधारण अनियमित न्यादर्श लिया गया है। खिलाड़ी विद्यार्थी के प्रतिनिधित्व के लिये साई प्रशिक्षण केन्द्र इनडोर/आउटडोर स्टेडियम , रायपुर के 25 बालक तथा 25 बालिकाओं का चयन किया गया है। गैर खिलाड़ी विद्यार्थी के लिये शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पं.रविशंकर शुक्ल वि.वि. परिसर में अध्ययनरत छात्रों में से 25 बालक तथा 25 बालिकाओं का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 100 विद्यार्थियों (50 खिलाड़ी, 50 गैर खिलाड़ी) का चयन किया गया है।

- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत लघुशोध में दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया गया है। दोनों उपकरण प्रश्नावली हैं।
  1. 16 P.F. questionnaire – श्री एस.डी. कपूर
  2. Sports Specific Personality Test (SSPT)–डॉ. अग्याजीत सिंह, डॉ. एच.एस. चीमा
- **चर (Variables) –** प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित चर है –
  1. स्वतंत्र चर – प्रशिक्षण की सुविधा
  2. परतंत्र चर – व्यक्तित्व गुण

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''खिलाड़ी बालिकाओं तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

Factor Q4 :– Sports Specific personality test में खिलाड़ी व गैर खिलाड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व के गुणों सामाजिकता, प्रभुत्व, मानसिक दृढ़ता तथा भावनात्मक स्थिरता में क्रांतिक अनुपात क्रमशः 3.1, 1.9, 5.4, 6.02, 3.8, 3.8 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारिणीगत मान 2.6 से अधिक है अतः इन गुणों में दोनों वर्ग की बालिकाओं के व्यक्तित्व में अंतर पाया गया।अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक–02

''खिलाड़ी बालिकाओं तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से संबंधित व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

16 पीएफ में खेल से संबंधित गुणों (Factor A, C, E, F, H, I, L, N, O, Q1, Q2, Q3, Q4) में खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के मध्य क्रांतिक अनुपात क्रमशः 4.89, 7.7, 3.3, 2.69, 3.37, 3.17, 2.65, 6.7, 5.7, 6.77, 5.3, 4.7 प्राप्त हुआ जो 1 प्रतिशत विश्वास स्तर तथा 48 स्वतंत्रता की कोटि पर सारिणीगत मान 2.6 से अधिक है। प्राप्त अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 02 की पुष्टि होती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

खिलाड़ी बालिकाओं तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से असंबंधित गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से असंबंधित गुणों (Factor B, G, M, Q1) में क्रांतिक अनुपात क्रमशः 0.59, 0.9, 0.159, 0.76 प्राप्त हुआ है जो 1 प्रतिशत विश्वास स्तर तथा 48 df पर मान 2.6 से कम है। अतः प्राप्त अंतर सार्थक नहीं है। परिकल्पना क्रमांक – 03 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 04

"खिलाड़ी बालकों तथा गैर खिलाड़ी बालकों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जायेगा।"

Factor A में दोनों वर्ग के बालकों में क्रांतिक अनुपात 4.8 है जो तालिका के मान से अधिक है अतः अंतर सार्थक है।

Sports Specific personality test में मापित गुण–सामाजिकता, प्रभुत्वशीलता, बहिर्मुखता, पारम्परिकता, आत्मधारणा, मानसिक दृढ़ता, भावनात्मक दृढ़ता में खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालकों में क्रांतिक अनुपात क्रमशः 2.7, 3.1, 2.8, 4.6, 3.2, 4.2, 3.11 प्राप्त हुआ जो 1 प्रतिशत विश्वास स्तर तथा df 48 पर प्रमाणिक मान 2.6 से अधिक है, इसलिए अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना क्र. – 04 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 05

"खिलाड़ी बालकों तथा गैर खिलाड़ी बालकों से संबंधित व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।"

खेल से संबंधित गुणों (Factor A, C, E, F, H, I, L, N, O, Q1, Q2, Q3, Q4) में दोनों समूह के बालकों के मध्य क्रांतिक अनुपात 4.8, 7.2, 3.5, 3.12, 2.7, 3.8, 2.12, 5.12, 3.4, 5.96, 5.14, 4 प्राप्त हुआ है जो 1 प्रतिशत विश्वास स्तर तथा स्वतंत्रता की कोटि 48 पर सारिणी मान 2.6 से अधिक है अतः अंतर सार्थक है।

S.S.P.T. द्वारा मापित गुणों में उक्त समूहों में क्रांतिक अनुपात सामाजिकता – 2.7, प्रभुत्व – 3.1, बहिर्मुखता – 2.8, पारम्परिकता – 4.6, आत्मधारणा – 3.2, मानसिक दृढ़ता – 4.2, भावनात्मक स्थिरता – 3.11, प्राप्त हुआ है जो प्रमाणिक मान से अधिक है अतः अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 05 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 06

खिलाड़ी बालकों तथा गैर खिलाड़ी बालकों के खेल से असंबंधित गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

प्रश्नावली 16 P.F. द्वारा मापित गुणों में खेल से असंबंधित गुणों, Factor B, G, M, Q1 में दोनों समूहों में क्रांतिक अनुपात क्रमशः 0.246, 0.11, 0.38, 0.01 प्राप्त हुआ है जो तालिका के मान से कम है, इसलिए अंतर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक–06 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 07

''खिलाड़ी बालकों तथा खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से संबंधित व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

16 P.F. प्रश्नावली द्वारा मापित गुणों में खिलाड़ी बालक तथा बालिका के खेल से संबंधित गुण (Factor A, C, E, F, H, I, L, N, O, Q2, Q3, Q4) में क्रांतिक अनुपात क्रमशः 0.48, 0.145, 0.46, 0.34, 0.34, 0.75, 0.27, 0.135, 0.26, 0.13, 0.29 प्राप्त हुआ जो तालिका के मान से कम है अतः दोनों वर्गों के व्यक्तित्व गुणों में अंतर सार्थक नहीं है।

S.S.P.T. द्वारा मापित गुणों सामाजिकता, प्रभुत्व, बहिर्मुखता, पारम्परिकता, आत्मधारणा, मानसिक दृढ़ता, भावनात्मक स्थिरता में दोनों समूह के विद्यार्थियों में क्रांतिक अनुपात क्रमशः 0.67, 0.4, 0.2, 0.25, 0.77, 0.38, 0.27 प्राप्त हुआ है जो प्रमाणिक मान से कम है अतः दोनों वर्गों के व्यक्तित्व में अंतर सार्थक नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 07 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 08

''गैर खिलाड़ी बालिकाओं तथा गैर खिलाड़ी बालकों के खेल से असंबंधित गुण में सार्थक अंतर पाया जायेगा।''

16 P.F. द्वारा मापित गुणों Factor B, G, M, Q1 में बालिकाओं में क्रांतिक अनुपात 2.8, 2.0, 5.15, 4.7 प्राप्त हुआ जो 48 df पर सारिणीगत मान 1 प्रतिशत विश्वास स्तर से अधिक है। अतः दोनों वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 08 की पुष्टि हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 09

"खिलाड़ी बालक–बालिकाओं तथा गैर खिलाड़ी बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया जायेगा।"

प्राप्त आँकड़ों के अनुसार खिलाड़ी बालकों व खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से संबंधित व्यक्ति गुणों में सार्थक अंतर नहीं है तथा गैर खिलाड़ी बालकों व गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से संबंधित गुणों में सार्थक अंतर नहीं है जबकि खिलाड़ी बालकों व गैर खिलाड़ी बालकों के व्यक्तित्व गुणों में अंतर सार्थक है तथा खिलाड़ी बालिकाओं और गैर खिलाड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर है। अतः खिलाड़ी बालक–बालिकाओं और गैर खिलाड़ी बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व गुण में अंतर सार्थक है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 09 की पुष्टि हुई।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध में संकलित आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष हैं –

1. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जाता है। खेलों द्वारा विकसित गुण जैसे बहिर्मुखता, सामाजिकता, प्रभुत्व आदि का समावेश खिलाड़ी बालिकाओं में अधिक रहता है।
2. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से संबंधित गुणों में सार्थक अंतर पाया जाता है।
3. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालिकाओं के खेल से असंबंधित गुणों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता। उनके व्यक्तित्व में अंतर खेल से संबंधित गुणों के कारण होता है।
4. खिलाड़ी बालकों तथा गैर खिलाड़ी बालकों के व्यक्तित्व में सार्थक अंतर पाया जाता है। खेल से संबंधित गुण जैसे आत्मधारणा, मानसिक दृढ़ता, भावनात्मक स्थिरता जैसे गुण खिलाड़ी में अधिक पाये जाते हैं।
5. खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी बालक में खेल से असंबंधित गुण एक समान होते हैं।
6. खिलाड़ी बालक तथा बालिका के खेल से संबंधित गुणों में अंतर नहीं पाया जाता ।
7. गैर खिलाड़ी बालक तथा बालिकाओं के खेल से संबंधित गुण एक समान होते हैं।
8. खिलाड़ी बालक तथा बालिकाओं के खेल से असंबंधित गुणों में भिन्नता नहीं पायी जाती।
9. खिलाड़ी बालक–बालिकाओं तथा गैर खिलाड़ी बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व में भिन्नता पायी जाती है।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. विद्यालयों को सभी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत प्रोफाइल तैयार की जानी चाहिये, जिससे उनके स्वभाव, रूझान तथा व्यक्तित्व का ज्ञान हो सके।
2. विद्यालयों के लिये आवश्यक है कि वे विद्यार्थियों की वैयक्तिक विभिन्नता का सम्मान करें सभी विद्यार्थियों से सभी गुणों की अपेक्षा न करें तथा रुचि के अनुसार खेल–खेलने हेतु अवसर प्रदान करें।

संदर्भ (References) –

1. असवाल, एम.एस. (2008–09) : ''खिलाड़ी तथा गैर खिलाड़ी छात्राओं के अन्तर्मुखी व्यक्तित्व प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।
2. ब्रो, माइकल (1998) : विद्यालय में खेलने वाले और न खेलने वाले खिलाड़ियों के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन।

24. ''अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन''

अभिमन्यु प्रसाद शर्मा

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

सारांश

प्रत्येक बालक–बालिका में चिंतन, मनन एवं कल्पना करने की क्षमता भिन्न–भिन्न होती है जिसके आधार पर वह विभिन्न प्रकार के कार्य सम्पादित कर जीवन पथ पर अग्रसर होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आत्मबोध का सक्रिय रूप से प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत शोध में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। कक्षा 10 वीं के विद्यार्थियों पर आत्मबोध परीक्षण तथा शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण प्रशासित कर सांख्यिकीय गणना द्वारा यह

ज्ञात हुआ है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके आत्मबोध का धनात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः विद्यार्थियों को शैक्षिक भ्रमण,सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधि, सेमीनार तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में शामिल कर उनके आत्मबोध में वृद्धि के अवसर प्रदान कर शैक्षिक उपलब्धि में सुधार किया जाना चाहिए।

प्रस्तावना (Introduction) –

समान शैक्षिक वातावरण में शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद प्रत्येक बालक–बालिका की सोच एवं व्यवहार में अंतर पाया जाता है। प्रायः विद्यार्थियों की बौद्धिक शक्तियों एवं शैक्षिक उपलब्धियों पर वातावरण एवं वंशानुक्रम के साथ–साथ बुद्धि, अभिप्रेरणा, आर्थिक–सामाजिक स्तर, पढ़ने की आदत एवं आत्मबोध जैसे अनेक कारकों का सक्रिय रूप से प्रभाव पड़ता है। इन समस्त कारकों में आत्मबोध एक प्रमुख कारक है, जो विद्याथियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

आत्मबोध व्यक्ति के स्वयं को देखने का तरीका है। यह उसके सोचने, अनुभव करने के तरीकों को भी दर्शाता है। आत्मबोध का सीधा संबंध व्यक्ति की सूझ से होने के साथ–साथ मानसिक परिपक्वता से भी होता है। आत्मबोध बालक–बालिका की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। आत्मबोध व्यक्ति विशेष के खास गुण, आचरण और सोच को प्रदर्शित करता है। छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में स्वयं के बोध की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होती है। अतः शिक्षण प्रक्रिया के लिए यह आवश्यक है कि बालक के आत्मबोध का अधिकाधिक विकास किया जाए। साथ ही शिक्षकों को छात्रों के आत्मबोध का भी ज्ञान होना चाहिए, जिससे छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि की जा सके।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

1. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध का अध्ययन करना।
3. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करना।
4. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध की तुलना करना।

5. अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में सह संबंध का अध्ययन करना।
6. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।
7. अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं –

1. अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
3. अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
6. अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध में कोईं सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
7. अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।
8. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।
9. अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन (Delimitation) – प्रस्तुत अध्ययन को जिला–जाँजगीर–चाम्पा के विकास खण्ड नवागढ़ एवं बलौदा के अंतर्गत आने वाले ग्रामीण एवं शहरी शासकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के कक्षा 10वीं में अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्र–छात्राओं तक परिसीमित किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) –

शोध विधि (Research Method) – इस शोध समस्या के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत लघु शोध में न्यादर्श का चयन निम्नानुसार है –

स. क्र.	चयनित माध्यमिक विद्यालय	वर्गवार न्यादर्शविद्यार्थियों का वितरण				योग
		अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति		
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	ग्रामीण	25	25	25	25	100
	शहरी	25	25	25	25	100
योग		50	50	50	50	200

- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध के निम्नांकित उपकरण हैं –

(1) आत्मबोध परीक्षण मापनी (SBP) – डॉ. जी. पी. शैरी, डॉ. आर. पी. वर्मा, डॉ. पी. के. गोस्वामी

(2) स्व निर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण मापनी – कुल 30 वैकल्पिक प्रश्न हैं।

- **चर (Variables)** – प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में निम्नलिखित चर हैं –
  1. स्वतंत्र चर – आत्मबोध
  2. आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

''अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 01

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी– मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	20.18	3.04	0.65	98	1.23	1% विश्वास स्तर NS
2.	अनुसूचित जाति के शहरी विद्यार्थी	50	20.98	3.44				

अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के मध्य अंतर का t मान 1.23 पाया गया जो 98 df तथा 1 प्रतिशत विश्वास स्तर पर सारिणी मान से कम है। अतः अंतर सार्थक नहीं है व परिकल्पना क्रमांक–01 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 02

''अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 02

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी–मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	20.92	4.55	0.95	98	1.38	1% विश्वास स्तर NS
2.	अनुसूचित जनजाति के शहरी विद्यार्थी	50	22.24	4.96				

अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर के मध्यमान क्रमशः 20.92 तथा 22.24 प्राप्त हुए। मध्यमानों के मध्य अंतर का t मान 1.38 प्राप्त हुआ जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणीगत मान से कम है। अतः दोनों में सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए परिकल्पना क्रमांक – 02 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''अनुसूचित जाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी–मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	33.08	5.62	1.13	98	2.58	sp<0.05
2.	अनुसूचित जाति के शहरी विद्यार्थी	50	36	5.75				

अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों ग्रामीण व शहरी के आत्मबोध के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 33.08 तथा 36 पाया गया। मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता का मान 2.58 है जो 0.05 विश्वास स्तर पर सारिणीगत मान से अधिक है। उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना क्रमांक– 03 अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 04

''अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में सार्थक अन्तर नहीं होगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी– मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण विद्यार्थी	50	32.64	5.24	1.14	98	1.24	NS 0.01 विश्वास स्तर पर
2.	अनुसूचित जनजाति के शहरी विद्यार्थी	50	34.06	6.20				

अनुसूचित जनजाति के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध के मानों के मध्यमान क्रमशः 32.61 तथा 34.06 पाए गए। इनके मध्य सार्थकता की गणना हेतु प्राप्त t मान 1.24 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान से कम है। अतः दोनों में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 05

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी– मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जाति के कुल विद्यार्थी	100	20.58	3.26	0.57	198	1.75	0.05 विश्वास स्तर पर NS
2.	अनुसूचित जनजाति के कुलविद्यार्थी	100	21.58	4.78				

दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य t मान 1.75 प्राप्त हुआ जो 0.05 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान से कम है। अतः सार्थक अंतर नहीं है। इसलिए परिकल्पना क्रमांक– 05 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''अनुसूचितजाति एवं जनजाति के विद्यार्थिंयों की आत्मबोध में कोईं सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 06

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी– मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जाति के कुल विद्यार्थीं	100	34.54	5.4	1.14	198	1.04	0.01 विश्वास स्तर पर NS
2.	अनुसूचित जनजाति के कुलविद्यार्थीं	100	33.35	5.76				

अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध के मध्यमानों के मध्य t मान 1.04 प्राप्त हुआ है जो सारिणी मान 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणीगत मान से कम है। अतः सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना क्रमांक– 06 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 07

''अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थिंयों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध में धनात्मक सह संबंध पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 07

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान		सह संबंध गुणांक	सह संबंध का प्रकार एवं स्तर
			शैक्षिक उपलब्धि	आत्मबोध		
1.	अनुसूचित जाति एवं जनजाति के कुल विद्यार्थीं	200	21.08	33.95	+ 0.18	नगण्य धनात्मक सह संबंध

अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध के मध्यमानों के मध्य प्राप्त सह संबंध + 0.18 पाया गया जो नगण्य धनात्मक सह संबंध है। इसलिए क्रमांक– 07 स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना क्रमांक – 08

''अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 08

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी– मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जाति वर्ग की बालिकाएँ	50	36.48	5.95	1.11	98	3.49	sp<0.01
2.	अनुसूचित जाति वर्ग के बालक	50	32.60	5.19				

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना क्रमांक– 08 अस्वीकृत की जाती है क्योंकि अनुसूचित जाति वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के मध्य आत्मबोध पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया।

परिकल्पना क्रमांक – 09

''अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग का प्रभाव नहीं पाया जायेगा।''

सारिणी क्रमांक – 09

क्र.	समूह	न्यादर्श संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	स्वतंत्रता का अंश	टी– मान	सार्थकता स्तर
1.	अनुसूचित जनजाति वर्ग के बालक	50	22.02	4.56	0.95	98	0.92	NS
2.	अनुसूचित जनजाति वर्ग की बालिकाएँ	50	21.14	5.01				

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर परिकल्पना क्रमांक–09 स्वीकृत की जाती है क्योंकि अनुसूचित जनजाति के बालक व बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों की सार्थकता का मान सारिणीगत मान से कम है, इसलिए सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत शोध में संकलित आँकड़ों से प्राप्त निष्कर्ष हैं –

1. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया।
2. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मबोध में अन्तर नहीं पाया गया।

3. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर नहीं पाया गया।
4. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों के आत्मबोध में अन्तर नहीं पाया गया।
5. अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मबोध के मध्य धनात्मक सह संबंध पाया गया।
6. अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्मबोध पर उनके लिंग का प्रभाव पाया गया।
7. अनुसूचित जनजाति के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions) – शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. आत्मबोध निर्माण के लिए ग्रामीण एवं शहरी शालाओं के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों हेतु विशेष प्रयास करना चाहिए।
2. विद्यार्थियों के आत्मबोध वृद्धि हेतु शैक्षिक भ्रमण, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधि, सेमीनार तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

संदर्भ (References) –

1. आदित्य,प्रमोद (1994) :– ''आदिवासी छात्र–छात्राओं के आत्मबोध का उनकी उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' (एम.एड. लघुशोध, गु.घा.वि.वि. बिलासपुर)
2. भारथी, जी.ए.(1984) : ''ए स्टडी ऑफ सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड एचिव्हमेंट ऑफ अर्ली एडोलसेन्ट'' (फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, 1983–88, वॉल्यूम–1) पेज–34

25. A study of the impact of emotional maturity on educational achievement of adolescents

Mrs. Shabnam Khan

IASE, Bilaspur (C.G.)

ABSTRACT

Emotional maturity means being able to accept the reality of people and things as it is. Emotional maturity is very important aspect which directly affects the achievement of an adolescent. An emotionally mature adolescent if given more exposure and chance to develop can do better than others. It is the part of the education to provide opportunity to adolescents so that they can fully develop and enhance their capabilities. Adolescents having high

emotional stability also have high educational achievement i.e emotional maturity influences educational achievement of adolescent.

Introduction -

Adolescence is the Latin word which means "TO GROW, TO MATURE". It is the most crucial and significant period of an individual's life due to rapid revolutionary changes in the physical, mental, moral, spiritual, sexual and social outlook of an individual.

Adolescence is characterized by physical maturation of the brain and body, giving rise to intense psychological and physical changes. One primary class of psychological change typical of adolescent's is an intensification of emotional experience.

Effect of Emotions on Adolescence:-

- Emotions provide energy to an adolescent to face a particular situation.
- Emotions influence their adjustment in the society.
- Highly emotional condition disturbs the mental equilibrium of an individual.
- Highly emotional condition disturbs the reasoning and thinking of an individual.

Traditionaly it is believed that adolescence is a period of heightened emotion, tension resulting from glandular and other changes. Generally they are often seen being inclined to worries. When treated "like a child" or treated unfairly the adolescent are likely to get angry. They express their anger by being sulky, refusing to speak or loudly criticising those who anger them.

Objectives -

Following are the objectives of this research.

1. To know the emotional maturity and educational achievement of adolescent.
2. To find out the impact of emotional maturity on the educational achievement of boys studying in higher secondary school.
3. To find out the impact of emotional maturity on the educational achievement of girls studying in higher secondary school.
4. To compare the impact of emotional maturity on the educational achievement of boys and girls studying in higher secondary school.

Hypotheses - Following hypotheses have been made for this research:

1. There will be no significant correlation between emotional maturity and educational achievement of adolescent boys studying in higher secondary school.
2. There will be no significant correlation between emotional maturity and educational achievement of adolescent girls studying in higher secondary school.
3. There will be significant difference in the impact of emotional maturity on educational achievement of adolescent boys and girls studying in higher secondary school.

Delimitations -The study has been delimited in considering the following main points–

Area- Government schools of Bilaspur district
Level- Higher Secondary level (class -11)
Subject- Biology group

Research Process-

Research method - Research Method used in this study is normative survey method.

Sampling -Random sampling is done for this reseaech work **.**

S. No.	Name of school	Government / non Government	Boys	Girls	Total
1.	Chhattisgarh Hr. Sec. Sec. Boys school	Aided non government	40		
2.	Mult. Purpose Hr. Sec. School	Government	40		80
3.	Pandit Devkinandan Girls Hr. Sec. School	Municiple School		40	
4.	Burgess Girls Hr.Sec. School	Grant Aided School		40	80
	Total		80	80	160

Tools - Following tools are used in the present study:

1. Emotional maturity scale-by Yeshvir Singh and Mahesh Bhargava
2. Achievement test questionnaire (Self made)

Variables - Following variables are present in the study:

1. Independent variable- Emotional maturity
2. Dependent variable – Educational achievement
3. Associate variable – Gender, Age, Class XI

Statistical Operation -

Hypothesis – 01

"There will be no significant correlation between emotional maturity and educational achievement of adolescent boys studying in higher secondary school."

Table – 1

Sample of Boys (80)	Mean	S.D.	*Correlation*	Result
Educational achievement	54.24	8.54	0.74	Positive Correlation
Educational maturity	72.49	7.59		

Interpretation:- As we know that value between + .75 to 1 have higher degree of correlation. Here from the table it is clear that the correlation value of emotional maturity and educational achievement of boys is 0.74 which is not between + .75 to + 1 so, hypothesis - 01 is selected.

There is a positive correlation between emotional maturity and educational achievements of adolescent boys. Those boys who are emotionally mature show better educational achievement than those who are emotionally less stable.

According to the research done by Rawal V.R. (1988), Anand S.P. And Smita (2000), they found that -

- The emotionally disturbed students and an emotionally stable student differ significantly.
- Immaturity provides negative impact on educational achievement of adolescent boys and girls.

Hypothesis – 02

"There will be no significant correlation between emotional maturity and educational achievement of adolescent girls studying in higher secondary school."

Table – 2

Sample of girls (80)	Mean	S.D.	*Correlation*	Result
Educational achievement	57.99	7.78	0.79	Positive Correlation
Emotional maturity	72.6	6.94		

Interpretation **:-** The correlation obtained between emotional maturity and educational achievement is 0.79 that is higher degree of correlation thus, hypothesis – 02 is rejected.

According to the data there is a significant correlation between emotional maturity and educational achievement of adolescent girls. Those girls who live in traditional families are less emostinaolly mature due to which their education performance is also less than emotionally mature girls.

According to the research done by Ritu (1989), Emotional tention of Adolescent girls is found more in those belonging to traditinal families where they are generally treated as a child always.

Hypothesis - 03

"There will be significant difference in the impact of emotional maturity on educational achievement of adolescent boys and girls studying in higher secondary school."

Table – 3

Sample	N	S.D.	*Df*	table 't' value	t-value	Significance
Boys	80	7.22	158	1.98 & 2.61at 0.01 & 0.05 level	2.90	Significant difference found
Girls	80	9.76				

Interpretation :- The calculated t value is greater than the table value. Therefore there is a significant difference in the impact of emotional maturity on educational achievement of adolescent boys and girls. The impact of emotional maturity on educational achievement of girls is more than impact on boys.

An emotionally mature adolescent can cope with the environment better than others and can show better performance in his/her academic activities.

Conclusions -

1. Those boys who are emotionally mature show better educational achievement than those who are emotionally less stable.
2. Adolescents having high emotional stability also have high educational achievement.
3. Those girls who are emotionally mature show better educational achievement than those who are emotionally less stable.
4. Educational achievement of emotionally mature adolescents is more than those who are less emotionally mature.
5. Educational achievement of girls is more than the educational achievement of boys.

Suggestions -

(1) Proper understanding of emotions of adolescents: - Parents and teachers should change their attitude towards adolescents they should provide proper environment for the expression of pent-up feelings. Fair treatment, sympathy, cooperation and freedom of action within a resonable limit should be given to adolescent and unnecessary restriction should not be imposed. A variety of interests should be developed to avoid furstration. Adolescent should be provided with opportunities for hobbies, curricular activities through play, free discussion and dramas etc.

(2) Guidance and counselling for the problems of adolescents:- Adolescents is a period when individual is overwhelmed by a number of simultaneous developments. Therefore to meet this situation proper guidance is needed because it has been observed that adolescents become neurotic due to their tensions and worries.

References -

1. Anshu (1989) : Study on level of aspirations, achievement, motivation and adjustment of adolescents' effect of family climate.
2. Moorjani, J.D. (2002) : Relation between the emotional intelligence of adolescent girls' personality type.
3. Rawal, V.R. (1988) : Study on academic achievement and attitude towards authority of emotionally disturbed adolescent in relation to their home and school environment.

Related Sites -

(1) www.aiaer.net/ejournalvol19 (2) www.ncbi.n/m.nih.gov (3) www.ncert.nic.in/../iea-july26

26. A study of interest of students towards vocational choices on the basis of school management and environment

Mrs. Anjali Kumari

Govt. College of Education Bilaspur (C.G.)

ABSTRACT

A systematic and disciplined redirection of education system and its integration with system of economy has always been the formulae for the growth of a nation. When national development is defined in non-monetary and non- institutional terms, it is essentially the

human resource development process. Also social change in the hierarchial structure of Indian society requires large scale upward social mobility and this can come through occupational and income mobility. Vocation like mass media, jouranalism, information techonology etc. have bright future in Indian. So the schools and colleges in the country must create more opportunities for youth to get professional and vocational know how and provide guidance for their further progress and establishment of their own workshops, industries, business.

Introduction –

Vocational Education is not new to Indian Philosophy. The system, so deep rooted in our philosophy, flourished through the mode of Guru-Shishya tradition. Work was considered important for livelihood.

It implies the provision and augmentation of skills and capabilities of the people of the country. This is possible through a well designed and efficiently executed programme of vocational and technical education. The traces of interest in vocational and technical education in India, can even be found in our ancient history.

As the programmes of vocationalization of higher secondary education and vocational education in high schools are still in their formative stages, they would profit from concurrent evaluations.

Objective - The objective of the research study is:

- To find out the interest towards vocational choices of government and private high school students on the basis of school environment.
- To compare the interest towards vocational choices of government and private high school students on the basis of school environment.

Hypotheses - Following are the hypotheses of the research study -

i. There will be no significant difference in interest towards vocational choices of boys and girls.

ii. There will be no significant difference in interest towards vocational choices of students studying in Government and Private schools.

iii. There will be no significant difference in interest towards vocational choices of students studying in Government schools on the basis of high and low school environment.

iv. There will be no significant difference in interest towards vocational choices of students studying in Private schools on the basis of high and low school environment.

v. There will be no significant difference in interest towards vocational choices of students studying in Government and Private schools on the basis of high, schoolenvironment.

vi. There will be no significant difference in interest towards vocational choices of students studying in Government and Private schools on the basis of low, school environment.

Delimitations - The study has been delimited in considering the following main trends –

- Area : Bilha block in Bilaspur District
- Class : 10^{th}
- Age : 15-17 years
- Sex : Boys & girls
- School : Two Government schools & two Private schools

Research Process –

Research Method - The method followed in this research is Survey Mehod.

Sample - The 400 students (200 girls, 200 boys) studying in 10^{th} class of two government and two private schools are randomly selected.

S. No.	Name of School	Management	No of Boys	No of Girls
1.	Govt. Higher Secondary School, Sendri	Government	50	50
2.	Govt. Higher Secondary School, Lingiadih	Government	50	50
3.	Shantiniketan Higher Secondary School	Private	50	50
4.	Bharatmata Higher Secondary School	Private	50	50

Tools - The two tools that have been used for the research study are :

i. Test for Interest in vocational choices – Career Preference Record (CPR) by Vivek Bhargava and Rajshree Bhargavn. This interest record was developed in the year 2001. The main purpose to develop CPR was to help the students/youth to make a wise choice in his career preferences or vocations. 10 main areas of vocational interest, covered by CPR are

(a) Mass Media & Journalism (MMJ) (b) Artistic & Designing (AD) (c) Science & Technology (ScT) (d) Agriculture (AG) (e) Commerce & Management (CM) (f) Medical (M) (g) Defence (D) (h) Tourism & Hospitality Industry(TH) (i) Law & Order (LO) (j) Education (E)

ii. Test for school environment – School Environment Inventory (SEI) by K.S. Misra

Variables - The variables are:

i. Independent variable – School Management and Environment

ii. Dependent Variable – Interest towards vocational choices

iii. Associate Variables – (a) Gender – Boys and Girls (b) Schools-Government and Private

Statistical Operation - – In this study researcher had used mean, standard deviation, correlation and "t test".

Hypothesis - 01

"There will be no significant difference in interest towards vocational choices of students."

Table – 01

Significance of scores of interest towards Vocational Choices of Boys and Girls

Gender	Sample	Mean	SD	df	t	Significance Level
Boys	200	77.86	38.58	398	0.30	P < 0.05
Girls	200	79.20	39.37			

Interpretation – The calculated t value is 0.30 and the table value at 0.01 and 0.05 levels are 1.97 and 2.59 at df 398. The calculated value is lower than the table value at both levels.

Therefore there is no significant difference in interest towards Vocational Choices of boys and girls. Both have same interest and goals about their life.So hypothesis – 01 is approved.

Proof - Joglekar (1993) has also found that there is no significant difference between boys and girls attitude towards vocational choices.

Hypothesis – 02

"There is significant difference in interest towards vocational choices of students studying in government schools and private schools."

Table – 02

Significance of scores of interest towards Vocational Choices of Government and Private school students

Gender	Sample	Mean	SD	df	t	Significance Level
Government	200	89.70	34.29	398	3.67	P > 0.05
Private	200	70.59	39.24			

Interpretation – The calculated value of t is 3.67 and the table value at 0.01 and 0.05 levels are 1.97 and 2.59 at df 398. The calculated value is greater than the table value at both levels. Therefore there is significant difference in interest towards Vocational choies of private and govt. school students. So hypothesis – 02 is approved.

Analysis - Private schools provide a better environment to the students. They are much more conscious about their career and also there is a direct interaction and relation between the

management and students, so private schools implement their plans carefully which are very helpful to the students.

Proof - Joglekar (1993) proved that significant difference in attitude towards work experience of students from private and municipal schools prevails.

Hypothesis – 03

"There is no significant difference in interest towards Vocational Choices of students studying in Government schools on the basis of high and low School Environment"

Table – 03

Significance of scores of interest towards Vocational Choices

Government school students on the basis of high and low SE

School	Sample	Mean	SD	df	t	Significance Level
Sendari Govt.H.S.	100	95.69	34.62	198	2.38	P < 0.05
Lingiadih Govt.H.S.	100	84.25	33.38			

Interpretation – The calculated value of t is 2.38 and the table value at 0.01 and 0.05 levels are 1.97 and 2.59 at df 198. The table value is greater than the calculated value at 0.01 level. Therefore there exists significant difference in interest towards vocational choices of students of Government school on the basis of the high & low school environmenrt. So hypothesis – 03 is rejected.

Proof – Joglekar (1993) proved that children from private, aided and municipal schools differ significantly in their attitude towards vocational choices.

Hypothesis – 04

"There is no significant difference in interest towards Vocational Choices of students studying in Private schools on the basis of high and low School Environment"

Table – 04

Significance of scores of interest towards Vocational Choices

Private school students on the basis of high and low SE

School	Sample	Mean	SD	df	t	Significance Level
Bharat Mata	100	69.14	36.71	198	0.72	P < 0.05
Shanti Niketan	100	65.06	42.98			

Interpretation – The calculated value of t is 0.72 and the table value at 0.01 and 0.05 levels are 1.97 and 2.59 at df 198. The calculated value is lower than the table value at both levels. Therefore there exists no significant difference in interest towards vocational choices of students of private schools on the basis of high & low school environment. So hypothesis – 04 is approved.

Proof – Joglekar (1993) proved that children from private aided and unaided schools did not differ significantly in their attitude towards vocational choices.

Hypothesis - 05

"There is significant difference in interest towards vocational choices of students studying in government and private schools on the basis of high school environment."

Table – 05

Significance of scores of interest towards Vocational Choices

of Government and Private school students on the basis of high SE

School	Sample	Mean	SD	Df	t	Significance Level
Bharat Mata	100	69.14	36.71	198	5.26	P < 0.01
Sendari Govt HS	100	95.69	34.62			

Interpretation – The calculated value of t is 5.26 and the table value at 0.01 and 0.05 levels are 1.97 and 2.59 at df 198. The calculated value is greater than the table value at both levels. Therefore there exists significant difference in interest towards vocational choices of students of private and govt. school on the basis of the high school envoironment. So hypothesis – 05 is approved.

Proof – Kaur, D (1990) established that both educational and vocational aspirations were influenced by socio-economic status and locality.

Hypothesis – 06

"There is significant difference in interest towards vocational choices of students studying in government schools and private schools on the basis of low school environment."

Table – 06

Significance of scores of interest towards Vocational Choices

of Government and Private school students on the basis of low SE

School	Sample	Mean	SD	df	t	Significance Level
Shanti Niketan	100	65.06	42.98	198	3.52	P < 0.01
Lingiadih Govt HS	100	84.25	33.38			

Interpretation – The calculated value of t is 3.52 and the table value at 0.01 and 0.05 levels are 1.97 and 2.59 at df 198. The calculated value is greater than the table value at both levels. Therefore there exists significant difference in interest towards vocational choices of students of private and govt schools on the basis of the low school envoironment. So hypothesis – 06 is approved.

Proof – Kaur, D (1990) established that both educational and vocational aspirations were influenced by socio-economic status and locality.

Conclusions - Various conclusions are given below-

i. The students' interest towards Vocational Choices was not influenced by the gender.
ii. The students' interest towards Vocational Choices was not influenced by the schools.
iii. The interest towards vocational choices of students of government schools was influenced on the basis of high and low School Environment.
iv. The interest towards vocational choices of students of private schools was not influenced on the basis of high and low School Environment.
v. The interest towards vocational choices of students of private schools was more compared to that of government schools on the basis of high School Environment.
vi. The interest towards vocational choices of students of private schools was more compared to that of government schools on the basis of low School Environment

Suggestions -

Following are the suggestions:

i. We have to decide on well defined Educational objectives in cognitive, effective and psychomotor domains. Cognitive domain refers to knowledge and understanding, effective domain refers to attitude and values and psychomotor domain refers to skills for the use of problem solving tools.
ii. It is very necessary to assess the Vocational Interest of students and motivate them towards their interested areas.
iii. It is necessary to prepare guidelines for a career counselling programmes for students.
iv. All the higher secondary level schools should have to provide job oriented training and pre-vocational training to the students.

References -

i. Altman (1997), "A link between the *career development* and socio-economic status and cultural background"
ii. A Report (2004), "Factors influencing the *career aspirations* of high school students."

27. A study of the achievement and adjustment of children with special needs and other children.

Smt. Nirmala Tiwari

Govt. College of Education, Bilaspur (C.G.)

ABSTRACT

From ancient period Rishi Astavakra who was physically disabled preached King Janak which paved way to the historical epic named " Astavakra Geeta" which proves that physical disability is not a barrier for talent . Everyone has a unique quality of thinking, presentation and capacity to do any work based on which he performs different tasks. This uniqueness and identity depends on the adjustment of the person with the environment and place. In this study researcher found that the achievement of other children is higher than that of those children with special needs and adjustment of children with special needs is higher than that of those other children. So it is proved that inclusive education system is effective for special children.

Introduction -

"All the children have the right to be educated in the regular schools and have an equal opportunity to participate in the main stream curriculum."

To get the broader prospect of inclusive education India has ratified the united nation conversion on the rights of person with disabilities (UNCRPD) and has undertaken the obligation to ensure and promote the full realization of all human rights and fundamental freedom for all persons with disabilities without discrimination of any kind on the basis of a disability in fulfillment of this international commitment of the country is obligated to enact suitable legislation in the furtherance of the rights recognized in the UNCRPD.

The national education policy 1986 took inclusive education as challenge to educate the children of special needs under equal opportunities for all. There were special schools for these people but later on in 1988 inclusive education for disabled children IEDC started. In this series in 1994 education for all and district primary education programme started running.

In the year 2002 ***Sarva Shiksa Abhiyaan*** gave more emphasis in the education of disables. As the grasping Capacity of these children are lesser than the other children. Government of Chhattisgarh has opened 19 special schools for disabled and there are resource centers in each block to help them in teaching at least life-Skills.

Objectives - Following are the objectives of the research study -

i. To study the achievement and adjustment of the children with special needs.
ii. To study the achievement and adjustment of other children.
iii. To compare the adjustment of children with special needs and other children.
iv. To compare the achievement of children with special needs and other children.

Hypotheses - Following are the hypotheses of the research study -

i. There is no significant difference in the achievement of children with special needs and other children.

ii. There is no significant difference in the adjustment of children with special needs and other children

iii. There is no significant difference in the achievement of children with special needs and other children on the basis of higher adjustment level.

iv. There is no significant difference in the achievement of children with special needs and other children on the basis of low adjustment level.

v. There will be no correlation between the adjustment and achievement of the children with special needs.

vi. There will be no correlation between the adjustment and achievement of other children.

Delimitations – The study has been delimited in considering the following main trends -

I. **Area:-** Inclusive education schools of Bilha block in Bilaspur district.

II. **Category:-** The children of special needs and other children studying in the normal schools.

III. **Level:-** Students of middle and primary schools.

IV. **Age:-** 12 to 15 years students.

V. **Gender:-** Boys and girls.

Research Process -

Research Method – Method followed in this research is Non Experimental Normative Survey Method.

Sample - Random sampling method is used for the study. The individuals were chosen in such a way that any individual in the entire population is an equal opportunity.

No. of schools	No. of students		Total
	Children with special needs	Other children	
29 schools of Bilha Block	100	100	200

Tools – Two tools have been used for the research study :-

1. **Test for achievement:-** To evaluate the achievement of the children of special needs and other children, a self made questionnaire is used which consist of 30 questions. Each question carries one mark, the marks obtained in the evaluation shows the achievement of the child.

2. **Test for adjustment:-** Adjustment inventory test for school students by Dr. A.K. P Sinha (Patna) and Dr. R.P. Singh is used to test the adjustment of children of special needs and other children. The tool consist of 60 questions.

Variables -

1. **Independent Variables – 1.** Children with special needs **2.** Other Children
2. **Dependent Variables — 1.** Achievement **2.** Adjustment

Statistical Operations – In this study researcher had used mean, standard devialation, correlation and "t test".

Hypothesis – 01

"There is no significant difference in the achievement of children with special needs and other children"

Table – 01

S.No.	Group	Number ' N`	Mean 'M`	Sd	SEd	't`	Significance
1	Children with Special Needs	100	23.85	3.99	0.59	2.09	P>0.05
2	Other Children	100	25.085	4.33			

At the df- 98 the table value of t is 1.98 at .05 level

The above table shows that the mean of the achievement of the special children and other children is 23.85 and 25.085 and t value is 2.09 which shows significant difference and the achievement of special children is lower as compared to the other children. So the hypothesis – 01 is rejected. So from the achievement point of view special children are not alike to the other children.

Hypothesis -02

"There is no significant difference in the adjustment of children with special needs and other children"

Table - 02

S. No.	Group	' N `	'M`	'SD`	SEd	' t `	Significant
1	Children with Special Needs	100	11.02	3.77	0.54	2.40	P>0.05
2	Other Children	100	10.2	3.92			

The above table shows the mean of the adjustment of the special children and other children is 11.02 and 10.02 It is proved that there is a significant difference in the

achievement of children with special needs and other children. The adjustment of special children is greater as compared to other children.

Hypothesis – 03

"There is no significant difference in the achievement of children with special needs and other children on the basis of higher adjustment level."

Table - 03

S. No.	Group	'N`	'M`	' SD `	SEd	't`	Significant
1	Children with Special Needs	47	20.57	2.89	0.61	2.55	P> 0.05
2	Other Children	48	22.15	3.10			

The above table shows that the mean of the achievement of the special children and other children on the basis of higher adjustment level is 20.57 and 22.15 and t value is 2.55 which shows that the achievement of special children is lower as compared to the other children .So it is proved that there is a significant difference in the achievement of the children with special needs and other children on the basis of higher adjustment level. Therefore hypothesis – 03 is rejected. So from the higher adjustment point of view special children are not alike to the other children.

Hypothesis – 04

"There is no significant difference in the achievement of children with special needs and other children on the basis of lower adjustment level"

Table - 04

S. No.	Group	' N `	' M `	' SD `	SEd	' t `	Significant
1	Children with Special Needs	53	26.75	2.14	0.19	1.91	P < 0.05
2	Other Children	52	28.67	2.40			

The above table shows that the mean of achievement of the special children and other children on the basis of lower adjustment level is 26.75 and 28.67 respectively and t value is 1.91. It is proved that there is no significant difference in the achievement of the children with special needs and other children on the basis of lower adjustment level. So from the lower adjustment point of view the special children are alike to the other children. Hence hypothesis – 04 is rejected.

Hypothesis – 05

"There will be no correlation between the achievement and adjustment of the children with the special needs."

Table - 05

S. No.	Group	'N'	Correlation	Result
1	Achievement	100	0.94	positive correlation
2	Adjustment	100		

The above table shows high correlation between the achievement and adjustment of children with special needs. According to the calculation the value of correlation of achievement and adjustment of special children is 0.94. So the hypothesis – 05 is rejected.

Hypothesis – 06

"There will be no correlation between the achievement and adjustment of the other children."

Table - 06

S.No.	Group	'N'	Correlation	Result
1	Achievement	100	0.83	positive correlation
2	Adjustment	100		

The above table shows a correlation between the achievement and adjustment of other children. According to the calculation the value of correlation of achievement and adjustment of other children is 0.83. So, it is proved that there is high positive correlation in between the achievement and adjustment of other children. Hence hypothesis – 06 is rejected.

Conclusions -

1. The achievement of other children is higher than children with special needs**.**
2. The adjustment level of children with special needs is higher as compared to other children.
3. The achievement of other children is higher than children with special needs with reference to higher adjustment level.
4. The achievement of other children is higher than the children with special needs with reference to lower adjustment level.
5. There is a positive correlation between the adjustment and achievement of the children with special needs.
6. There is a positive correlation between the adjustment and achievement of other children.

Suggestions - On the basis of the conclusions of the research the scholar presents the following suggestions for the all-round development of the children of special needs.

1. The identification the children of special needs - These children should be identified and helping device must be provided to cope up with the disability as soon as possible so that these children could come to main streams of learning.
2. The responsibility of parents of the children of special needs -
   a. The disability of these children affects the achievement and adjustment of these children, so parents must behave all the children similarly.
   b. They must not ignore them instead they must behave sympathetically with them and try to bring all possible facilities and therapies to them so that they could learn life skills as well as studies through their encouragement.
   c. They must not be discouraged in context to their disability but inspire & help them in their problem.

References -

1. Dubey, K.C. **:** Disability in Madhya Pradesh an analysis.
2. David and watson (2001) **:** The behavior to the disabled children in the special and normal schools.
3. Goal M.M. : Investment in physically handicapped person in Haryana.

---

28. Effectiveness of innovations in English language teaching on language competence of the students.

Dr. Yogesh Kumar Tiwari

Govt. College of Education Bilaspur (C.G.)

ABSTRACT

The use of innovations in educational institutions has the potential not only to improve education, but also to empower and strengthen the human development. When there is a willingness to change, there is a hope for progress in any field.

The Information and communication technology has made many innovations in the field of teaching. In the new paradigm of learning, the paperless and pen-less classroom are emerging as an alternative to the traditional teaching learning process. **"**Effectiveness of innovations in English Language Teaching on Language Competence of the students" is an experimental study, designed for the students of class-IX of Govt. schools. The application of CALL as an innovative intervention was found to be encouraging and unavoidable for the enhancement of standard of English by the researcher.

Introduction –

In the most pious profession of teaching and particularly teaching second language, being inert has always been adverse to the laws of nature and dynamism being adaptable**.** For L_2 teaching-learning process, many methods, techniques, devices, such as grammar translation method, direct method, structural method, chalk-black board, flannel board, pictures, charts, tape recorder, lingua phone, picture cut-out and instructional media such as educational radio, television, films, filmstrips, overhead projector, language labs, corners have been used to upgrade students' knowledge of English and it is true that these techniques and devices might have been referred to as innovative at the time when used first time, still students in India & particularly in C.G., encounter unique problem in their study of English, so being innovative is a continuous process. English is still considered a 'threat' for most of student.

With the technological advancement, keeping the deterioration in second language learning process, innovation *i.e.* presenting, expressing something in English in an absolute way, has become the need of hour. In such a perturbed situation **CALL,** the acronym for {Computer Assisted Language Learning} really calls attentions of teachers as well as educationists. It is the study of applications of computer in language teaching & learning process. The current philosophy of CALL emphasizes on student centered materials that facilitate the learners to work themselves. CALL is a tool that helps teacher to make Learning easy. Integrative CALL is based on two important developments of the last decade

multimedia computers and the Internet. Multimedia technology of consists of text, graphics, sound, animation and video to be accessed on a single machine. It also entails *hypermedia* i.e., its resources are all linked together and that the learners can navigate their path by pointing and clicking a mouse.

Objectives - Following are the objectives of the research study –

i. To find out the different ways in which CALL as an 'innovation' can be used for teaching English.
ii. To develop the knowledge and application of English language through Computer Assisted Language Learning.
iii. To identify students' difficulties and their remedies in developing English language competence.
iv. To adjudge the suitability of computers & its instructional programs in terms of the content & improving language skill.
v. To study the effect of CALL as an innovative technique, for developing the comprehension of the grammatical items particularly voice of the students at the secondary level.

Hypotheses – Following are the hypotheses of the research study –

i. There will be no significant difference in language competence of the controlled and experimental group in pre-experimental states.
ii. There would be no significant inclinations towards CALL in students.
iii. There will be no significant improvement in the speaking skill (conversion of active into passive) of students in both experimental and control groups in post experimental state.
iv. No significant correlation would be found between Innovation and language competence of students.
v. The teaching learning process can be improved through innovative tool like CALL.

Delimitations - The limitations for the study are:

1. The study is limited to the students of class XIth Science, Govt.H.S.S. Pendra, Distt. Bilaspur (C.G).
2. It is limited to teach some grammatical portions particularly voice.

Research Process -

Research Method - The method used for the present research is experimental method.

Sample - To conduct the study, a school at Block-Pendra, Distt. Bilaspur was chosen by random sampling method. A separate questionnaire based on the grammatical questions was prepared. It consisted of 30 questions carrying one mark for each correct answer. A test before the pretest was organized, after checking the answers of the questionnaire, the obtained marks of the students were divided into higher and lower category. The mean of the obtained mark was found 16.5. Thus the students obtaining 17 & above and 17 & below marks were categorized into higher and lower groups respectively. 20 students from each group were mixed together and assumed as controlled group and rest of the 40 students were considered as experimental group. The individuals were chosen in such a way that they fall under a compact whole as far their age, sex, ability, environment are concerned.

Tools - The tools used in the study are:

Language competence tests (pre & post) in the form of questionnaire. (Self-Prepared)

Variables - The variables of sudy are as follows:

1- **Independent variable**: In this research CALL the acronym of computer assisted language learning is Independent variable.

2- **Dependent variable :** Achievement of Grammar especially voice.

3- **Associate variable**: Students of XIth Science.

Statistical Operations –

Hypothesis - 01

"There will be no significant difference in language competence of the controlled and experimental group in pre-experimental state."

Table – 01

Statistical analysis of language competence of students of both controlled and experimental group, class XI with reference to conversion of active into passive in pre-experimental state.

English Language competence	N	M	Sd	df	T value	Significance
Experimental	40	26.075	7.538	78	1. 081	N.S
Controlled	40	23.15	6.9043			

Table value at .01 = 2.64, .05 = 1.99

Interpretation:- The mean of control group in pretest is 23.15 and experimental group is 26.075 and their SD is 6.9043 and 7.5358 respectively and t value result is 1.810 which is very less than the values given in the t table. So significant difference is not found.Hence the hypothesis - 01 is therefore accepted.

Hypothesis - 02

"There would be no significant inclinations towards CALL in students."

Table - 02

Statistical analysis of English language competence of controlled and experimental group , class XI with reference to conversion of active into passive after post experimental state.

English Language competence	N	M	Sd	df	t value	significance
Experimental	40	32.8	10.0542	78	4.505	S
Controlled	40	23.825	7.595			

Table value at .01 = 2.64 & .05 = 1.99

Interpretation:- The mean of experimental group at post experimental state is 32.8 while that controlled group is 23.825 and their SD is 10.0542 and 7.595 respectively and t value result of both of them is 4.505 which is greater than the table value at 0.01 and 0.05 level of signification on probability of error. Since there is considerable and significant difference found in the scores it means that the subjects in post experimental states of the experimental group were inclined to and fond of the use of the scientific and innovative tool like CALL as was obvious in post test. Hence the hypothesis – 02 is rejected.

Hypothesis – 03

"There will be no significant improvement in the speaking skill (conversion of active into passive) of students in both experimental and control groups in post experimental state."

Table –03

Statistical analysis of speaking skill(oral test) of controlled and experimental group after post experimental state with reference to conversion of active into passive.

CALL (post)	N	M	Sd	df	t value	Significance
Experimental	40	33.8	8.882	78	4.539	S
Controlled	40	25	6.917			

Table value at .01 = 2.64 & .05 = 1.99

Interpretation:- The mean of the post test of speaking skill of the experimental group is 33.8 and its Sd is 8.882 whereas mean of control group is 25 and sd 6.917. The t value of both groups is 4.539 which is more than as tallied with table value. Since significant difference has been found between the two groups, the fact is established that the scaffolding provided by the teacher to the students in experimental group has raised their cognitive level as far the improvement in speech level is concerned. On the other hand the existing conventional technique adopted by the researcher could not prove to be fruitful. Hence the hypothesis – 03 is rejected.

Hypothesis - 04

"No significant correlation would be found between Innovation and language competence of students."

Table – 4.1

Statistical analysis of correlation between CALL used as Innovation and English language competence (speaking skill) of students.

Variable	N	M	r	
Experimental	40	33.08	0.6706	Medium positive correlation
Controlled	40	25		

Remark:- It is necessary to point out here that the data shown in the table no. 4.1 are concerned with the testing of speaking skill of the students. To perform the act students were given extra time to respond the answers orally of the questions asked in the post test. Students' improvement in this regard is based on their individual capacity of understanding.

Interpretation:- The result shows that the medium positive correlation has been found between the Innovation, which means that teaching of the students with scientific way through CALL correlates with improvising the language competence of the students as far their oral responses showing the improvement in speaking skill is concerned.

Table – 4.2

Statistical analysis of correlation between CALL used as Innovation and English language competence (post test-objective questionnaire) of students.

Variable	N	M	r	
Experimental	40	32.08	0.5755	Medium positive correlation
Controlled	40	23.825		

Interpretation:- Apart from the medium correlation observed in speech test shown in table-4.1, approximately the same has been found as far the use of CALL and improvement of language competence is concerned. Since the present correlation is of a medium status, it means that the achievement of the students in both (the oral and written test) is based on their individual grasping and the power of receptivity. It should be asserted from the analysis of the data that there does exist the correlation between CALL and English language competence. Hence the hypothesis – 04 is rejected.

Hypothesis - 05

"The teaching learning process can be improved through innovative tool like CALL."

Table -5

Statistical analysis of overall performance (both oral & written) of controlled and experimental group after post experimental state with reference to conversion of active into passive.

t	N	Mean	Sd	Correla	df	T value	Significance
Pretest							
H1 Controlled	40	23.15	6.9043			1.810	N.S
Experimental	40	26.075	7.5358				
Post test							
H2 Controlled	40	23.825	7.5951	H4 (4.2) 0.5755*	78	4.505	Medium Positive correll. & S
Experimental	40	32.8	10.0542				
H3 Controlled	40	25	6.917		78	4.539	
Experimental	40	33.8	8.882				
Speaking skill test in the post experimental state. Controlled	40	25	6.917	H4(4.1) 0.6706*			Medium Positive correll. & S
Experimental	40	33.8	8.882				

Table value at .01 = 2.64 & .05 = 1.99

The mean of the post experimental state of controlled group is 23.825, Sd is 7.5951 while the score of experimental group is 32.8 and 10.0542 respectively. The t value of both the groups in this state is 4.505 which is higher than as tallied with the table value.

Interestingly the mean of speaking skill test of controlled group is 25, sd is 6.917 while the score of experimental group is 33.8 and 8.882 respectively. The correlation is also found to have been of medium positive status of both the tests. Hence the hypothesis – 05 is accepted. Further this fact is asserted that the skilled use of CALL makes a difference and is very effecttve as far the improvement in English language competence is concerned.

Conclusions –

1. It is found that the students were inclined to and were fond of the use of the scientific and innovative tools like CALL.
2. The scaffolding provided by the interventions made has raised their cognitive level as far the improvement in speech level is concerned.
3. The achievement of the students in both (the oral and written test) is based on their individual grasping and the power of receptivity.
4. CALL has improved the English language competence in students.

5. Undeniably the students' confidence has been boosted up after having been treated scientifically with computer assisted languages learniing, as far their language competence is concerned.
6. The skilled use of CALL makes a difference and is very effective as far the improvement in English language competence is concerned.

Suggestions -

1. Students can develop their language competence by sparing time to go through the instructional program showing hints of voice and thus improve their grammatical knowledge.
2. Students can attain the dexterity in increasing their level of comprehension by keeping themselves in touch with CALL.
3. Especially for the developing states like Chattisgarh, it is unavoidable fact that appointments of the English language teachers should be given extra attention by the Government right from primary up to secondary level.

References -

1. Spaventa, Lou. Ed. et al : Towards the creative teaching of English Heinemann 1980
2. Agarwal, J.C. Educational Research: An Introduction. New Delhi: Arya Book Depot, 1992.
3. Ahmad, K., Corbett, G., Rogers, M., & Sussex, R. Computers,language learning and language teaching. Cambridge, England: Cambridge University Press, 1985.